केन्द्रीयविद्यालय संगठन, एरणाकुलं संभाग:
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, ERNAKULAM REGION

छात्रोपयोगी सहायक सामग्री

कक्षा 12

हिंदी आधार

सत्र २०२२ - २०२३

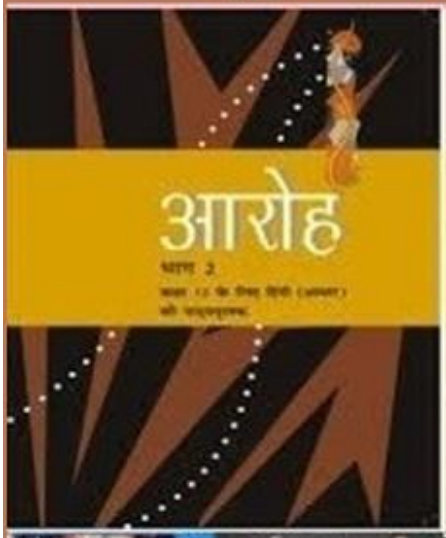

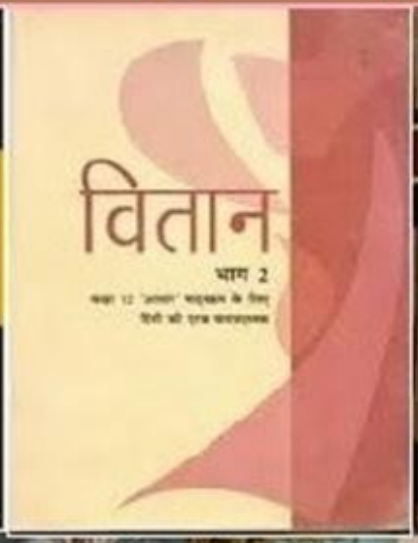

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

क्षेत्रीय कार्यालय एर्णाकुलम

REGIONAL OFFICE ERNAKULAM

छात्रोपयोगी सहायक सामग्री / Student Support Material

शैक्षिक सत्र / Session - 2022-23

कक्षा / Class - बारहवीं

विषय / Subject - हिंदी (केन्द्रिक)

विषय कोड / Subject Code - 302

नवीनतम सी बी एस ई परीक्षा पैटर्न पर आधारित

सत्र २०२२-२३

मार्ग दर्शक एवं संयोजक

श्री. सेंदिल कुमार, उपायुक्त, के. वि. सं, एर्नाकुलम संभाग

श्रीमती दीप्ति नायर, सहायक आयुक्त, के. वि. सं, एर्नाकुलम संभाग

श्री. संतोष कुमार, सहायक आयुक्त, के. वि. सं, एर्नाकुलम संभाग

श्री. अजय कुमार, सहायक आयुक्त, के. वि. सं, एर्नाकुलम संभाग

श्री. महीपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य, के. वि. नं 2 कालिकट

श्री. प्यारा लाल, प्रभारी प्राचार्य, के. वि. नं 2 कालिकट

उपायुक्त का संदेश

समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन समय की मांग है। इसी तथ्य को आधार मानकर सीबीएसई द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए दसवीं और बारहवीं कक्षा के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया में कालानुरूप परिवर्तन एवं सुधार किये गये हैं । इसी के अनुसार अध्ययन सामग्री में भी संशोधन एवं सुधार की आवश्यकता है। इन्हीं परिवर्तनों से छात्रों व अध्यापकों को परिचित कराने के उद्देश्य से नवीनतम अध्ययन सामग्री निपुण एवं अनुभवी शिक्षकों की निगरानी में तैयार की जाती है। मुझे पूरा विश्वास है कि इसके ज़रिए इकाइयों , अध्यायों और अवधारणाओं को भली-भांति समझने तथा तत्संबंधी प्रश्नों के हल करने की क्षमता अर्जित करने में छात्रों को मदद मिलेगी। प्रस्तुत अध्ययन सामग्री छात्रों को उनकी समझ तथा विश्लेषणात्मक कौशलों को विकसित करने में लाभदायक होने के साथ-साथ प्रश्न- पत्रों और अभ्यास प्रश्नों को पढ़ कर खुद को परीक्षा के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने में सहायक सिद्ध होगी। वास्तव में,शिक्षकों और छात्रों को अध्ययन रूपी धागे में बांधने वाली एक मजबूत कड़ी के रूप में शिक्षण सामग्री का स्थान सर्वश्रेष्ठ ही है।

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री का समायोजन इस तरह किया गया है कि छात्र विभिन्न स्थितिगत समस्याओं से संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपनी सोच एवं ज्ञान के आधार पर स्वतंत्र निर्णय लेकर दे सके । फल स्वरुप छात्रों की अभिव्यक्ति की क्षमता तथा लेखन कौशल में वृद्धि हो जाएगी। इसके निर्माण में छात्र-केंद्रित शिक्षा प्रणाली को ही प्रमुखता दी गई हैं । यह अध्ययन सामग्री सिखाने से ज़्यादा सीखने की शक्ति का विकास कर छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ उनके ज्ञान भंडार को सशक्त
बनाएगी ।

मैं इस महान कार्य की सफलता के पीछे कार्यरत प्राचार्य और शिक्षक मंडली को तहे दिल से अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूं क्योंकि आप सभी ने अपना बहुमूल्य समय एवं क्षमताओं को सही मायने में संजोकर इस शिक्षण सामग्री को बेहतर एवं छात्रानुकूल बनाया, जो सचमुच सराहनीय है।

शुभकामनाओं के साथ
उपायुक्त।

प्राक्कथन

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास सर्वदा केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्राथमिकता रही है। इसलिए प्रभावी एवं सुनियोजित शिक्षा नीतियों के कार्यान्वयन प्रक्रिया में केंद्रीय विद्यालय संगठन अन्य सभी शैक्षणिक संस्थाओं से काफी आगे हैं। शिक्षा नीतियों में समय-समय पर आने वाले परिवर्तनों के अनुसार अध्ययन सामग्री में संशोधन की आवश्यकता हैं। "अभ्यास करत-करत जड़मति होत सुजान" कविवर के इस उक्ति को आधारशिला मानकर छात्रों को स्व-प्रेरित सीखने तथा शैक्षिक ऊंचाइयों को सफलता से प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करने के महान उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन सामग्री तैयार की गई है। इस सामग्री की परिकल्पना के तहत छात्रों के प्रभावी एवं सर्वोत्तम शैक्षणिक प्रदर्शन एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सफल निष्पादन को ही स्थान दिया गया है। यह अध्ययन सामग्री सही मायने में सीबीएसई के नवीनतम परीक्षा पैटर्न के आधार पर ही तैयार की गई। आदर्श प्रश्न पत्रों के निर्माण में भी सीबीएसई द्वारा दी गई प्रश्न-पत्र प्रारूप का सही पालन किया गया है। सभी पाठों का विषयानुकूल विश्लेषण तथा सरल स्पष्टीकरण पर बल दिया गया है तथा संबंधित प्रश्नावलियों के लिए उत्तर संकेत भी दिए गए हैं ।

पाठों की विषयवस्तु का सम्यक् ज्ञान छात्रों के मनोमंदिर में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से तैयार की गई प्रस्तुत शिक्षण सामग्री छात्रों के स्तरानुकूल एवं परीक्षोपयोगी है, जो उनके मन में आत्मविश्वास पैदा करने की दृष्टि से भी सुसज्जित है। इसमें सामान्य तथा उच्च-स्तरीय छात्रों के अनुकूल अलग-अलग प्रश्न संकेतों के निर्माण पर ज़ोर दिया गया है। इसलिए अधिक से अधिक छात्र उससे लाभान्वित हो जाएंगे।

केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय एर्नाकुलम संभाग के निर्देशानुसार बारहवीं कक्षा के हिंदी (केंद्रिक) विषय में अध्ययन सामग्री तैयार करने का जो कार्यभार मिला, उसके लिए मैं तहे दिल से अपना आभार व्यक्त करता हूँ ।

उपायुक्त महोदय, सहायक आयुक्त, अन्य पदाधिकारियों एवं शिक्षक-गण ने जो विश्वास प्रकट किया है, उसे ईमानदारी के साथ निभाने की पूरी कोशिश मैं ने की है। आगे इस सामग्री के संदर्भ में आप सभी के बहुमूल्य सुझाव एवं आवश्यक दिशा निर्देशों की उम्मीद करता हूं, जो आगे की राह में अधिक प्रभावी एवं सार्थक सिद्ध होगा।

सभी पाठकों को शुभकामनाओं के साथ

प्रभारी प्राचार्य एवं संयोजक

विषय-सूची / INDEX

क्रम सं	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं
1.	पाठ्यक्रम	4
2.	अंक विभाजन	6
3.	अपठित बोध गद्य व पद्य	7
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम निर्धारित प्रकरण	22
5.	गद्य विधाएँ- कहानी और नाटक	44
6.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-२): पद्य	54
7.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-२): गद्य	126
8.	पूरक-पुस्तिका (वितान भाग-2)	162
9.	परियोजना कार्य	184
10.	आदर्श प्रश्नपत्र -(1-4)	188

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा – 12वीं (2022-23) परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खंड 'अ' और 'ब' का होगा।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक 100 **निर्धारित समय 3 घंटे**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1	**अपठित गद्यांश**		**15**
	अ	एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का) (1 अंक x 5 प्रश्न)	05
2	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित**		**05**
	बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)		05
3	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
4	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित पाठों पर दस बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**		**20**
	1	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (6 अंक x 1 प्रश्न)	06
	2	कहानी का नाट्यरूपांतरण / रेडियो नाटक / अप्रत्याशित विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में)	06
	3	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (4 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 80 शब्दों में)	08
6	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2**		**20**

	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	2	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	3	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	4	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
7	**(अ) श्रवण तथा वाचन**		**10**
	(ब) परियोजना कार्य		**10**
कुल अंक			**100**

प्रस्तावित पुस्तकें :

1. **आरोह, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम',** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	काव्य खंड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी – गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे – चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		• एन फ्रैंक - डायरी के पन्ने

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिये कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

विषय - हिन्दी (आधार)

कक्षा - बारहवीं (2022-23)

अंक-विभाजन

बहुविकल्पी प्रश्न				
क्रम संख्या	प्रश्न खंड	प्रश्नों की संख्या	प्रश्न करना है	निर्धारित अंक
1.	अपठित बोध (गद्यांश)	10	10	1X10=10
2.	अपठित बोध (पद्यांश) अथवा के साथ	05 / 05	05	1X5=05
3.	अभिव्यक्ति और माध्यम	05	05	1X5=05
4.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 गद्य	05	05	1X5=05
5.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पद्य	05	05	1X5=05
6.	पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2	10	10	1X10=10
		45	**40**	**40**
वर्णनात्मक प्रश्न				
7.	रचनात्मक लेखन	01	06	6X1=06
8.	गद्य-विधाएँ : कहानी और नाटक	02	02	3X2=06
9.	अभिव्यक्ति और माध्यम	03	02	4X2=08
10.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पद्य	03	02	3X2=06
11.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पद्य	03	02	2X2=04
12.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 गद्य	03	02	3X2=06
13.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 गद्य	03	02	2X2=04
				40
				80

सामान्य निर्देश-

1. प्रश्नपत्र दो खंडों में विभाजित किया गया है:- खंड अ बहुविकल्पी प्रश्न तथा खंड ब वर्णनात्मक प्रश्न।
2. खंड-अ में 45 बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें 40 के उत्तर देने होंगे।
3. खंड-ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें उचित आंतरिक विकल्प भी होंगे।
4. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित होंगे।
5. वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर निर्धारित शब्द-सीमा में लिखे जाने चाहिए।

अपठित गद्यांश (1×10=10)

I. भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता रही है-'अनेकता में एकता'। यद्यपि ऊपरी तौर पर भारत के विभिन्न प्रदेशों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है, तथापि अपने आचारविचार की एकता के कारण यहाँ - सामासिक संस्कृति का रूप देखने को मिलता है। यही कारण है कि विभिन्नताओं के होते हुए भी भारत सदियों से एक भौगोलिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इकाई के रूप में विश्व में अपना स्थान बनाये हुए है । इसलिए भारत में अनेकता में एकता के सदैव दर्शन होते हैं । भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनो का ही मिश्रण रहा है । अतइसकी प्राचीनता :, इसकी गतिशीलता, इसका लचीलापन, इसकी ग्रहणशीलता, इसका सामाजिक स्वरुप और अनेकता में निहित एकता ही इसकी प्रमुख विशेषता है । इस विशेषता के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है । भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत ही प्राचीन है । वास्तव में, संस्कृति का निर्माण एक लम्बी परम्परा के बाद होता है । संस्कृति वस्तुत: विचार और आचरण के नियम और मूल्य हैं, जिन्हें कोई समाज अपने अतीत से प्राप्त करता है । इसलिए कहा जा सकता है कि इसे हम अपने अतीत से विरासत के रूप में प्राप्त करते हैं । दूसरे शब्दों में कहें तो संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली का नाम है-। यह एक सामाजिक विरासत, है जो परम्परा से चली आती रही है ।

प्राय: सभ्यता और संस्कृति को एक ही मान लिया जाता है, परन्तु इसमें भेद है । सभ्यता में मनुष्य के जीवन का भौतिक पक्ष प्रधान होता है अर्थात् सभ्यता का अनुमान सुख से लगाया जा सकता है । इसके विपरीत संस्कृति में आचार और विचार पक्ष की प्रधानता होती है । इस प्रकार, 'सभ्यता' को शरीर माना जा सकता है और 'संस्कृति' को आत्मा, इसलिए इन दोनो को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। वास्तव में, दोनों एक दुसरे के पूरक हैं ।

(1) भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता किसे माना गया है ?

(2) गद्यांश में सामाजिक विरासत किसे कहा गया है-

(3) भारत में सामासिक संस्कृति का रूप दिखाई पड़ने का क्या कारण है-

(4) भारतीय संस्कृति किसका मिश्रण है ?

(5) गद्यांश के अनुसार भारतीय संस्कृति की विशिष्टता नहीं है ?

(6) सभ्यता का अनुमान किससे लगाया जा सकता है ?

(7) आचार और विचार पक्ष की प्रधानता किस्मे होती है ?

(8) प्रस्तुत गद्यांश में एक दूसरे का पूरक किसे बताया गया है ?

(9) किस विशेषता के कारण भारतीय संस्कृति विश्व में अपना विशेष स्थान रखती है ?

(10) अतीत से विरासत के रूप में हम किसे प्राप्त करते है ?

II. साहित्य की शाश्वतता का प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या साहित्य शाश्वत होता है? यदि हाँ तो किस मायने में? क्या कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है, जितना वह अपनी रचना के समय था? अपने समय या युग का निर्माता साहित्यकार क्या सौ वर्ष बाद की परिस्थितियों का भी युग निर्माता हो सकता है? समय बदलता रहता है, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलते रहते हैं. साहित्य बदलता है और इसी के समानान्तर पाठक की मानसिकता और अभिरुचि भी बदलती है। अतः कोई भी कविता अपने सामयिक परिवेश के बदल जाने पर ठीक वही उत्तेजना पैदा नहीं कर सकती जो उसने अपने रचनाकाल के दौरान की होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार के साहित्य के श्रेष्ठ अस्तित्व मात्र से वह साहित्य हर युग के लिए उतना ही विशेष आकर्षण रखे, यह आवश्यक नहीं है।

साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है। उसकी श्रेष्ठता का युग युगीन आधार हैं वे जीवन मूल्य तया उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करती है। पुराने साहित्य का केवल वही श्री-सौंदर्य हमारे लिए ग्राह्य होगा जो नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सहयोग दे अथवा स्थिति रक्षा में सहायक हो। कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को अस्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए, किन्तु वे भूल जाते हैं कि साहित्य के निर्माण की मूल प्रेरणा मानव जीवन में ही विद्यमान रहती है। जीवन के लिए ही उसकी सृष्टि होती है। तुलसीदास जब स्वांत सुखाय काव्य रचना करते हैं तब अभिप्राय यह नहीं रहता कि मानव समाज के लिए इस रचना का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि उनके अंतःकरण में संपूर्ण संसार की सुख-भावना एवं हित-कामना सन्निहित रहती है। जो साहित्यकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यापक लोक-जीवन में सन्निविष्ट कर देता है, उसी के हाथों स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य का सृजन हो सकता है। संस्कृत के महाकवि कालिदास एवं मसि कागद ज्यों नहीं कलम गही नहि हाथ के उदघोषक भक्तिकालीन संत कबीर का साहित्य इसी कोटि में गणनीय है।

(1) उपरोक्त गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?
(2) युग परिवर्तन के साथ युगीन साहित्य की प्रासंगिकता कम क्यों हो जाती है?
(3) पुराने साहित्य के प्रति अरुचि का कारण क्या है?
(4) कोई भी साहित्य हमेशा एक-सी उत्तेजना क्यों नहीं पैदा कर सकता?
(5) जीवन के विकास में पुराने साहित्य का कौन-सा अंश स्वीकार्य है?
(6) तुलसीदास जैसे महान कवि की रचना 'स्वांतःसुखाय' होकर भी जन उपयोगी क्यों है?
(7) साहित्य सृजन का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए?
(8) कैसा साहित्यकार स्थायी प्रेरणास्पद साहित्य का निर्माणकर सकता है?
(9) कालिदास किस भाषा के कवि थे?
(10) मसि कागद छुयो नहीं कलम गही नहि हाथ। पंक्ति कबीर की कौन-सी विशेषता को उजागर करती है?

III. संस्कृति और सभ्यता - ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का गुण है, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है,करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाडी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान है और जिससदेश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति इन सबसे बारीक चीज़ है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है, मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज़ है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममे छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लते होते हैं, मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती, वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन चीज़ है और वह हमारी हर पसंद. हर आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं-यह हमारी संस्कृति बतलाती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छह विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। अगर ये विकार बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाए। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियों एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशी या जातियों की संस्कृतियों से लाभउठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो। भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही अनेकानेक मान्यताओं, धर्मा, भाषाओं की साझी विरासत रही है।

(i) उपरोक्त गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?

(ii) करूणा, प्रेम, परोपकार किस गुण के अंतर्गत आते हैं?

(iii) निम्नलिखित में से सभ्यता की पहचान कौन-सी चीजें नहीं हैं?

(iv) लेखक का संस्कृति को भौतिक वस्तु न मानने का क्या कारण है?

(v) आदमी के भीतर कितने विकार होते हैं?

(vi) मनुष्य अपने विकारों पर काबू नहीं करे तो क्या होगा?

(vii) अपनी संस्कृति को विकसित करने के लिए कौन-सा प्रयास अपेक्षित होगा?

(viii) कौन-सी जाति या देश अधिक संस्कृत समझे जाते हैं?

(ix) भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता रही है?

(x) किसी देश या जाति को अधिक सभ्य किस आधार पर कहा जाता है?

IV विज्ञान आज के मानव-जीवन का अविभाज्य एवं घनिष्ठ अंग बन गया है । मानव-जीवन का कोई भी क्षेत्र विज्ञान के अभूतपूर्व अविष्कारों से अछूता नहीं रहा । इसी कारण से आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है ।आज विज्ञान ने पुरुष और नारी,साहित्यकार और राजनीतिज्ञ,उद्योगपति और कृषक,चिकित्सक और सैनिक,पूँजीपति और श्रमिक,अभियंता, शिक्षक और धर्मज्ञ सभी को और सभी क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में अपने अप्रतिम प्रदेय से अनुग्रहीत किया है । आज समूचा परिवेश विज्ञानमय हो गया है । विज्ञान के प्रभाव किसी गृहणी के रसोईघर से लेकर बड़ी-बड़ी प्राचीरों वाले भवनों और अट्टालिकाओं में ही दृष्टिगत नहीं होते ,अपितु वे जल-थल की सीमाओं को लांघकर अंतरिक्ष में भी विद्यमान हैं । वस्तुतः विज्ञान अद्यतन मानव की सबसे बड़ी शक्ति बन गया है । इसके बल से मनुष्य प्रकृति और प्राणिजगत का शिरोमणि बन सका है । विज्ञान के अनुग्रह से वह सभी प्रकार की सुविधाओं एवं संपदाओं का स्वामित्व प्राप्त कर चुका है । अब वह मौसम और ऋतुओं के प्रकोप से भयाक्रांत एवं संत्रस्त नहीं है । विद्युत् ने उसे आलोकित किया है,उष्णता एवं शीतलता दी है,बटन दबाकर किसी भी कार्य को संपन्न करने की ताकत भी दी है । मनोरंजन के विविध साधन उसे सुलभ हैं । यातायात एवं संचार के साधनों के विकसित एवं उन्नत होने से समय और दूरियां बहुत कम हो गयी हैं और समूचा विश्व एक कुटुंब सा लगने लगा है । कृषि एवं उद्योग के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ने के कारण आज दुनिया पहले से अधिक धन-धान्य से संपन्न है । शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की देन अभिनंदनीय है । विज्ञान के सहयोग से मनुष्य धरती और समुद्र के अनेक रहस्य हस्तामलक करके अब अन्तरिक्ष लोक में प्रवेश कर चुका है । सर्वोपरि,विज्ञान ने मनुष्य को बौद्धिक विकास प्रदान किया है और वैज्ञानिक चिंतन पद्धति दी है । वैज्ञानिक चिंतन पद्धति से मनुष्य अंधविश्वासों और रूढ़िवादी परम्पराओं से मुक्त होकर स्वस्थ एवं संतुलित ढंग सोच-विचार कर सकता है और यथार्थ एवं सम्यक जीवन जी सकता है । इससे मनुष्य के मन को युगों के अंधविश्वासों, भ्रमपूर्ण और दकियानूसी विचारों, भय और अज्ञानता से मुक्ति मिली है। विज्ञान की यह देन स्तुत्य है ।मानव को चाहिए की वह विज्ञान की इस समग्र देन को रचनात्मक कार्यों में सुनियोजित करें ।

(1) आज विज्ञान को मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग क्यों माना जाता है ?
(2) किसके बल पर मनुष्य प्रकृति और प्राणिजगत का शिरोमणि बन सका है ?
(3) वैज्ञानिक चिंतन पद्धति ने मनुष्य को सबसे पहले किससे मुक्ति दिलाई ?
(4) विज्ञान के चरण गतिशील क्यों कहे जा सकते हैं ?
(5) समूचा विश्व एक परिवार के सामान लगने का क्या कारण है ?
(6) विज्ञान के सहयोग से मनुष्य ने कहाँ प्रवेश कर लिया है ?
(7) वैज्ञानिक चिंतन पद्धति के प्रभाव से मनुष्य कैसा जीवन जी सकता है ?
(8) मानव से विज्ञान की देन को किन कार्यों में नियोजित करने की अपेक्षा है ?
(9) लेखक की दृष्टि में विज्ञान की सबसे बड़ी देन क्या है ?
(10) प्रस्तुत गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है ?

V. वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता । उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं । उसका हृदय दूसरों के दोषों का अनुभव करता है । उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है ,किन्तु उसका अपना चरित्र उसके अपने दोष एवं उसके अवगुण मिथ्याभिमान और थोथे आत्मगौरव के काले आवरण में इस प्रकार प्रछन्न रहते हैं कि जीवन पर्यंत उसे दृष्टिगोचर ही नहीं हो पाते । इसलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न देवता समझ बैठता है । क्षुद्र व्यक्ति एवं मस्तिष्क अपनी क्षुद्र सीमा से परे किसी भी वस्तु का सही मूल्यांकन करने में असमर्थ रहते हैं । इसलिए व्यक्ति स्वयं के द्वारा जितना छला जाता है उतना किसी अन्य के द्वारा नहीं ।

आत्मविश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं । इसके लिए अत्यंत उदारता, सहनशीलता एवं महानता की अवश्यकता होती है । इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य आत्मविश्लेषण कर ही नहीं सकता । अपने गुणों- अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है । अपने-अपने दोषों से वह हर पल हर क्षण अवगत रहता है , किन्तु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और यही उसे आत्मविश्लेषण की क्षमता नहीं दे पाती । उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को स्वयं देखकर कह सके । इसके विपरीत परनिंदा एवं परदोष दर्शन में अपना कुछ नहीं बिगड़ता उल्टे मनुष्य आनंद अनुभव करता है । परंतु आत्मविश्लेषण करके अपने दोषों को देखने से मनुष्य के अहंकार को चोट पहुँचती है ।

1. मनुष्य स्वयं को क्यों नहीं देख पाता ?

2. आत्मविश्लेषण के लिए क्या आवश्यक है ?

3. परनिंदा क्यों सरल है ?

4. मनुष्य स्वयं को सर्वगुण सम्पन्न देवता क्यों समझता है?

5. परनिंदा में मानव इतना आनंद क्यों लेता

6. 'अवगुण' का विलोम शब्द क्या है?

7. आजीवन शब्द में कौनसा समास है ?

8. क्षुद्र व्यक्ति में से विशेषण-विशेष्य पद छांटिए ।

9. मनुष्य की वाणी क्या कर सकतीसहै ?

10. मनुष्य की दुर्बलता क्या है ?

उत्तर संकेत

अपठित गदयांश (1x10=10)

I (1) अनेकता में एकता को
(2) संस्कृति को
(3) एकता
(4) आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का
(5) स्थिरता
(6) सुख सुविधाओं से
(7) संस्कृति में
(8) सभ्यता और संस्कृति को
(9) अनेकता में एकता
(10) संस्कृति को

II (1) साहित्य की उपादेयता ।
(2) भावाबोध परिवर्तन के कारण ।
(3) अभिरुचि परिवर्तन, परिस्थितियों में परिवर्तन एवं भावाबोध परिवर्तन के कारण।
(4) सामाजिक परिवेश के बदल जाने से ।
(5) जो जीवन के विकास में तथा प्रदर्शक का काम करता है ।
(6) अंतकरण में सुख-भावना निहित होने से ।
(7) संसार की सुख भावना ।
(8) जो व्यापक लोक जीवन को समाहित करता हो
(9) संस्कृत
(10) उनकी विधिवत शिक्षा-दीक्षा नहीं हुई थी ।

III (i) सभ्यता और संस्कृति
(ii) संस्कृति
(iii) नैतिक मूल्य
(iv) यह आंतरिक मूल्य है ।
(v) छह
(vi) संस्कृति से पतित हो जाएगा ।
(vii) संस्कृति आदान प्रदान, अन्य दोशों से सुदृढ़ संबंध और विभिन्न संस्कृतियों की अच्छाइयों को स्वीकारना।
(viii) जो उच्च नैतिक मूल्य अपनाते है ।
(ix) विभिन्न संस्कृतियों की साझी विरासत है।
(x) जब वह भौतिक रूप से सशक्त हो ।

IV (1) क्योंकि विज्ञान ने सभी क्षेत्रों में मानव को प्रभावित किया है ।
(2) विज्ञान के

(3) संपूर्ण रूढ़िवादी विचार से ।

(4) विज्ञान के उत्तरोत्तर विभिन्न दिशाओं में उन्मुक्त होने के कारण ।

(5) यातायात और संचार के साधनों का विकास के कारण ।

(6) अंतरिक्ष में

(7) यथार्थ एवं सम्यक

(8) रचनात्मक

(9) चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाएँ ।

(10) वैज्ञानिक चिंतन और मानव ।

V (1) वह दूसरों के चरित्र दोष और है ।अवगुणों के विश्लेषण करने में मग्न रहता है।

(2) उसके लिए अत्यंत उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यक है ।

(3) परनिंदा से मनुष्य आनंद अनुभव करता है ।

(4) इसलिए वह आत्मगौरव के काले आवरण से प्रच्छन्न रहता है ।

(5) परनिंदा एवं परदोष दर्शन में अपना कुछ बिगड़ता।उल्टा मनुष्य आनंद अनुभव करता ।

(6) गुण

(7) अव्ययीभाव

(8) क्षुद्र-विशेषण, व्यक्ति-विशेषण

(9) मनुष्य की वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है ।

(10) अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ।

अपठित पद्यांश (1x5=5)

I निम्नलिखित पदयांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

उस दिन
वह मैंने थी देखी
कॉलेज के निकट ,कच्ची सड़क के पास
गंदी नाली पर पड़ी
जहाँ से गुज़र नहीं सकता
कोई भी बिना नाक पर डाले कपडा -
गंदे काले चिथड़ो औ "फटी -पुरानी गुदड़ी में लिपटी ,
देखकर आती जिसको घिन ,
पौष के तीव्र शीत में करती क्रंदन -
"हाय मार गया ,पकड़ो ,पकड़ो ,
धत्त तेरे की !
क्या लिया तुम्हारा मैंने मूज़ी?
क्यों मुझ को व्यर्थ सताता ?
भागो -भागो,हाय मार गया वह मुझको "
सताए कूकर सी कटु कर्कश वाणी में चिल्लाती
वह कुबड़ी काली सी पगली नारी ।
सोचा मैंने ,
पर मैं समझ न पाया -
क्या वह है दैव की मारी ?
या समाज की, जो है अत्याचारी
दोनो, दलितों, असहायों पर ?
या सम्बन्धियों की निज
छीन लेते हैं जो दलित बंधुओं से
सूखी रोटी का टुकड़ा भी

(1) **कवि द्वारा प्रयुक्त 'बिना नाक पर कपड़ा डाले' से क्या तात्पर्य है -**

(2) प्रयुक्त शब्द 'मूज़ी' का तात्पर्य है -

(3) कवि ने पगली के आवाज़ की तुलना किससे की है-

(4) कवि का स्वर कैसा है

(5) क्रंदन शब्द का विलोम है –

II जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला , उस उस राही को धन्यवाद ।

जीवन अस्थिर अनजाने ही ,हो जाता पथ पर मेल कहीं ,

सीमित पग-डग,लम्बी मंजिल तय कर लेना कुछ खेल नहीं ।

दाएँ- बाएँ सुख-दुःख चलते , सम्मुख चलता पथ का प्रसाद -

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला , उस उस राही को धन्यवाद ।

साँसों पर अवलंबित काया ,जब चलते - चलते चूर हुई ,

दो स्नेह शब्द मिल गए ,मिली नव स्फूर्ति ,थकावट दूर हुई ।

पथ के पहचाने छूट गए ,पर साथ - साथ चल रही याद -

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला , उस उस राही को धन्यवाद ।

जो साथ न मेरा दे पाए उनसे कब सूनी हुई डगर

मै भी न चलूँ यदि तो क्या, राही मर , लेकिन राह अमर ।

इस पथ पर वे ही चलते हैं जो चलने का पा गए स्वाद

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला उस उस राही को धन्यवाद

कैसे चल पाता यदि न मिला होता मुझको आकुल अंतर ?

कैसे चल पता यदि मिलते ,चिर- तृप्ति अमरता -पूर्ण प्रहर ।

आभारी हूँ मै उन सबका ,दे गए व्यथा का जो प्रसाद -

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला , उस उस राही को धन्यवाद ।

(1) **कवि के अनुसार जीवन कैसा है?**

(2) जीवन रूपी यात्रा में कैसे-कैसे अनुभव आते हैं?

(3) "जिस - जिस " में कौन सा अलंकार है -

(4) राह को अमर क्यों कहा गया है -

(5) सुख - दुःख में कौन सा समास है

III पूर्व चलने के बटोही ,
बाट की पहचान कर ले
पुस्तकों में है नहीं छापी गयी इसकी कहानी ,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की ज़बानी
अनगिनत राही गए इस राह से ,
उनका पता क्या
पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी ,
यह निशानी मूक होकर भी ,बहुत कुछ बोलती है
खोल इसका अर्थ पंथी ,पंथ का अनुमान कर ले
पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले ।
है अनिश्चित किस जगह पर सरित ,गिरि ,गह्वर मिलेंगे ,
है अनिश्चित किस जगह पर बाग़ वन सुन्दर मिलेंगे ,
किस जगह यात्रा ख़त्म हो जाएगी ,यह भी अनिश्चित
है अनिश्चित कब सुमन ,कब कंटकों के शर मिलेंगें
कौन सहसा छूट जायेंगे , मिलेंगे कौन सहसा
पूर्व चलने के बटोही , बाट की पहचान कर ले ।
रास्ते का एक काँटा ,पाँव का दिल चीर देता
रक्त की दो बूँद गिरती ,एक दुनिया डूब जाती
आँख में हो स्वर्ग लेकिन ,पाँव पृथ्वी पर टिके हों
कंटकों की इस अनोखी सीख का सम्मान कर ले
पूर्व चलने के बटोही , बाट की पहचान कर ले ii

1 **“खोल इसका अर्थ,पंथी,पंथ का अनुमान कर ले” का क्या आशय है-**

2. **मूक शब्द का विलोम है-**

3 **“खोल इसका अर्थ पंथी ,पंथ का अनुमान कर ले**
पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले ।”
पंक्ति में कौन सा अलंकार है -

4 **गहवर शब्द का पर्यायवाची नहीं है -**

5 **शर शब्द का अर्थ है-**

IV माटी, तुझे प्रणाम!

मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!

तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर

क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर

सुंख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः सोचा–

लगता आज युगों के बाद मिला विश्राम!

माटी तुझे प्रणाम!

तुम से बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल भर चैन

तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन

धन्य हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व

हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम!

माटी, तुझे प्रणाम!

अमर मृत्तिक! लगती तू पारस से चढ़कर आज

कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज

मरणशील हम, किंतु अमर तू, है अमर्त्य यह धाम

हम मर-मर कर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!

1 कवि किसे प्रणाम कर रहा है ?

2 अपनी मातृभूमि को प्रणाम कर कवि को कैसी अनुभूति होती है ?

3 अपनी मातृभूमि से बिछुड़ने पर कवि को कैसा अनुभव होता है ?

4 'अमर मृत्तिके! लगता तू पारस में चढ़कर' इसमें कवि ने मिट्टी को परस क्यों कहा है ?

5 कवि किसे मरणशील और किसे अमर कह रहा है ?

V सच है विपत्ति अब आती है, कायर को ही दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते।
विघ्नों को गले लगाते हैं, काँटों में राह बनाते हैं।
है कौन विघ्न ऐसा जंग में ? टिक सके आदमी के मन में ?
ख़म ठोंक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़
मानव जब ज़ोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।
गुण बड़े एक-से-एक प्रखर, हैं छिपे मानवों के भीतर
मेंहदी में जैसे लाली हे, वर्तिका बीच उजियाली हो
बत्ती जो नहीं जलता है, रोशनी नहीं वह पाता है।
पेरा जाता जब इक्षु दंड, झरती रम की धारा अखंड
मेंहदी जब सहती है प्रहार, बनती ललनाओं का सिंगार
जब फूल पिरोए जाते है, हम इनको गले लगाते है।

1 विपत्ति आने पर डरने वाला व्यक्ति कौन होता है ?

2 किस प्रकार के व्यक्ति वीर कहलाते है ?

3 'पर्वत के जाते पाँव उखड़? का क्या आशय है '

4 फूल और काँटे किसके प्रतीक है ?

5 'बत्ती जो नहीं जलता है? का क्या आशय है 'रोशनी नहीं वह पाता ह। ,

उत्तर संकेत

अपठित कावयांश। (1x5=5)

I (1) दुर्गंध से बचना (2) अत्याचारी
(3) कूकर से (4) दुखी करने वाला (5) प्रयत्न होना

II (1) अस्थिर है (2) सुख-दुख और प्रमाद के अवसर आते रहते है
(3) पुनरुक्ति प्रकाश (4) क्योंकि जीवन रूपी राह अनंत है (5) द्वन्द्व समास

III (1) प्रेरणा ग्रहण कर लक्ष्य का निश्चय करना (2) वाचाल
(3) अनुप्रास अलंकार (4) सराय (5) बाण

IV (1) अपने देश की मिट्टी को (2) सारे कष्ट दूर होने की अनुमति होती है
(3) बेचैनी का (4)क्योंकि उसके स्पर्श मात्र से ही शरीर के सारे कष्ट दूर हो गए हैं
(5) कवि मातृभूमि को अमर और मनुष्य को मरणशील कह रहा है

V (1) विपत्ति में डरने वाला व्यक्ति कायर होता है
(2) जो विघ्नों को गले लगाकर काँटों में भी राह बना लेते हैं ।
(3) मानव के साहस एवं दुख इच्छा शक्ति के आगे पहाड़ जैसे विघ्न भी नहीं टिकते
(4) सुख एवं दुख के (5) बिना परिश्रम किए जीवन में सफलता नहीं मिलती

अभिव्यक्ति और माध्यम

बहुविकल्पात्मक प्रश्न (4 और 3 पाठ संख्या)

पाठविभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 3 -

इनमें से कौन सा जनसंचार का प्रमुख साधन नहीं है 1 ?

क) रेडियो

ख) समाचार पत्र

ग) दूरभाष

घ) इंटरनेट

आधुनिक छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है 2?

क) जर्मनी के गुटेन्बेर्ग

ख) इंग्लैंड के चार्ली विलयम्स

ग) जापान के युवान सुकामा

घ) भारत के सुरेन्द्र वर्मा

पहला छापाखाना कब और कहां खुला भारत में 3?

क) सन् 1556, गोवा में

ख) सन् 1565, मुंबई में

ग) सन् 1505, कोलकाता में

घ) सन् 1556, मद्रास में

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना कौन सा है 4?

क) दृश्य माध्यम

ख) श्रव्य माध्यम

ग) मुद्रित माध्यम

घ) इनमें से कोई नहीं

विशेषता मुद्रित माध्यम की नहीं है इनमें कौन सी 5?

क) मुद्रित माध्यम लिखित भाषा का विस्तार है

ख) मुद्रित माध्यमों को संदर्भ की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं

ग) मुद्रित माध्यमों का पाठक साक्षर अथवा निरक्षर हो सकता है

घ) मुद्रित माध्यमों को हम पढ़ते हुए सोच सकते हैं

.6निम्न लिखित में से एकरेखीय माध्यम छाँटिए -

क) रेडियो

ख) टी.वी

ग) प्रिन्ट माध्यम

घ) क व ख दोनों

.7 भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर कब आरंभ हुआ ?

क) 1982-1992

ख) 1993-2001
ग) 2002 से अब तक
घ) 2003 से
.8इंटरनेट एक्सप्लोरर और नेटस्केप - ये क्या हैं ?
(क) ब्राउज़र
(ख) अपडेट
(ग) एचटीएमएल
(घ) बीबीसी
.9 सही वाक्य चुनिये
क) रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसमें सब कुछ ध्वनि, स्वरों, शब्दों, और दृश्यों का खेल है
ख) रेडियो में पीछे लौटकर सुनने की सुविधा है
ग) रेडियो एकरेखीय माध्यम है
घ) रेडियो समाचार उल्टा शैली में नहीं होती
.10 दृश्यों का किस माध्यम में सबसे अधिक महत्व होता है?
क) इंटरनेट ख) दूरदर्शन ग) रेडियो घ) समाचार पत्र
.11 मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?
क) यह तथ्यात्मक होते हैं
ख) इनमें स्थायित्व होता है
ग) साफ-सुथरा होता है
घ) इनमें से कोई नहीं
.12 इंटरनेट पत्रकारिता को किस अन्य नाम से जाना जाता है?
क) साइबर पत्रकारिता
ख) ऑनलाइन पत्रकारिता
ग) वेब पत्रकारिता
घ) उपर्युक्त सभी
.13मुद्रण का आरंभ किस देश में हुआ ?
क(भारत ख(चीन ग(जापान घ(अमरीका
.14एचटीएमएल क्या है?
क(वेब साइट ख(वेब चानेल ग(वेब भाषा घ(उपर्युक्त सभी
.15वह कौन सा औजार है जिसके जरिये विश्व व्यापी जाल में गोते लगाए जा सकते है?
क(ब्राउसर ख(माऊस ग(टूल्स घ(इंटरनेट
.16वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे जाता है?
क(रिडीफ डॉट कॉम को
ख(इंडियाईंफोलाइन
ग(तहलका डॉट कॉम को
घ(सीफ़ी

.17कौन सा अखबार केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है?

क(जागरण

ख(प्रभासाक्षी

ग(दैनिक भास्कर

घ(राजस्थान पत्रिका

.18इंटरनेट पत्रकारिता है-

क(इंटरनेट पर फिल्में देखना

ख(इंटरनेट में सर्च करना

ग(इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान - प्रदान

घ(पत्रकारों के बीच चर्चा

.19आल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई ?

क(1930

ख(1935

ग(1936

घ(1937

.20कम से कम शब्दों में कोई खबर जो तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाए उसे -------कहते है ।

क(लाइव

ख(ब्रेकिंग न्यूज़

ग(फोन इन

घ(एंकर पैकेज

. 21बाइट से तात्पर्य है -

क(टुकड़ा

ख(दृश्य

ग(कथन

घ(खबर

.22किसी घटना के सीधे प्रसारण को कहते है -

क(एंकर बाइट

ख(फोन इन

ग(लाइव

घ(इनमे से कोई नही

.23एंकर पैकेज से तात्पर्य है -

क(संबन्धित घटना के दृश्य ,ग्राफिक के जरिये सूचनाएं ,लोगों के बाइट

ख(खबर को पुष्ट करने के लिए संबन्धित दृश्य

ग(एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करता है

घ(घटनास्थल से सीधा प्रसारण

उत्तर संकेत

1. (ग) दूरभाष
2. (क) जर्मनी के गुटेन्बेर्ग
3. (क) सन् 1556, गोवा में
4. (ग) मुद्रित माध्य
5. (ग) मुद्रित माध्यमों का पाठक साक्षर अथवा निरक्षर हो सकता है
6. (घ) क व ख दोनों
7. (ख) 1993-2001
8. (क) ब्राउज़र
9. (ग) रेडियो एकरेखीय माध्यम है
10. (ख) दूरदर्शन
11. (ख) इनमें स्थायित्व होता है
12. (घ) उपर्युक्त सभी
13. (ख)चीन
14. (ग) वेब भाषा
15. (क) ब्राउसर
16. (ग) तहलका डॉट कॉम
17. प्रभा साक्षी (ख)
18. रनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदानइंट (ग)- प्रदान
19. ग(1936
20. ब्रेकिंग न्यूज़ (ख)
21. कथन (ग)
22. लाइव (ग)
23. संबन्धित घटना के दृश्य (क),ग्राफिक के जरिये सूचनाएं ,लोगों के बाइट

पाठ 4 पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप

1. अखबारों में समाचारों या रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है । इसे ----------कहते हैं ।

क) डेस्क ख) सीमा ग) डेडलाइन घ) रेडलाइन

2.किस शैली मैं कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं खबर के बिलकुल शुरू में आता है

क) सीधा पिरामिड

ख) उल्टा पिरामिड

ग) संयुक्त पिरामिड

घ) मिश्रित पिरामिड

3. समाचार लेखन में कितने ककार हैं ?

(क) पाँच (ख) छह (ग) सात (घ) आठ

4. फीचर के संबंध में कौन सा वाक्य सही नहीं है?

(क) यह एक सुव्यवस्थित,आत्मनिष्ठ ,सृजनात्मक लेखन है

(ख) यह पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं कराता

(ग) इसमें शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती

(घ) इसमें लेखक अपनी राय,दृष्टिकोण,भावना नहीं डाल सकता

5.पत्रकारों द्वारा सूचनाएं पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक पहुंचाने के लिए के लिए लेखन के जिन विभिन्न रूपों का प्रयोग करते है उसे----------कहते हैं

क) समाचार लेखन

ख) फीचर लेखन

ग) पत्रकारीय लेखन

घ) क व ग

6. पत्रकार कितने तरह के होते हैं ?

क) 3 ख) 5 ग) 4 घ) 2

7. किस पत्रकार का संबंध किसी खास समाचार पत्र से नहीं होता बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग - अलग अखबारों के लिए लिखता है?

क) स्वतंत्र /फ्रीलैंस पत्रकार

ख) अंशकालिक पत्रकार

ग) पूर्णकालिक पत्रकार

घ) उपरयुक्त सभी

8. निम्नलिखित में से गलत वाक्य चुनिये -

क) अखबारों में साफ-सुधरी ,सरल व प्रभावी भाषा का प्रयोग होना चाहिए

ख) अखबारों की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए विशेषणों और अलंकारिक भाषा का प्रयोग भी करें

ग) अखबारों की भाषा सहज, सरल व रोचक होनी चाहिए

घ) बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए

9. सही वाक्य चुनिये

क) फीचर लेखन का एक निश्चित ढाँचा होता है

ख) फीचर का आरंभ आकर्षक और उत्सुकता पैदा करने वाला होना चाहिए

ग) फीचर को रिपोर्ट की तरह प्रस्तुत करना चाहिए

घ) हर समाचार को फीचर शैली मैं लिखा जा सकता है

10. संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होनेवाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी --------माना जाता है।

क) आत्मा

ख) आँखें

ग) आवाज़

घ) दिल

11. संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए -

क) संपादकीय को समाचार पत्र की आवाज़ माना जाता है

ख) इसे कोई भी पत्रकार लिख सकता है

ग) इसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता

घ) इसे किसे भी पृष्ठ पर छाप सकते हैं

12. कुछ लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें नियमित रूप से लिखने की ज़िम्मेदारी देता है ।इसे --------- लेखन कहते हैं ।

क) स्तम्भ

ख) फीचर

ग) रिपोर्ट

घ) इनमें से कोई नहीं

13. किसी सामाग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाना, व्याकरण, वर्तनी तथा तथ्य संबंधी अशुद्धियों को दूर करना ----------कहलाता है ।

क)सम्पादन ख) संवाददाता ग)संचार घ)संरचना

14 यह पाठकों का अपना स्तम्भ होता है । इसके जरिये पाठक विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय देते हैं - यह कौन सा स्तम्भ है?

क) स्तम्भ लेखन

ख) संपादक के नाम पत्र

ग) पाठक के पत्र

घ) पाठक कोना

15. पत्रकार द्वारा किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य, राय या उसकी भावनाएं जानने के लिए पूछे जाने वाले सवालों को क्या कहते है?

क) इन डेप्थ रिपोर्ट

ख) लेख

ग) साक्षात्कार

घ) स्तम्भ लेखन

16. किसी तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहन छानबीन और विश्लेषण ----------कहलाता है ।

क) खोजी रिपोर्ट

ख) इन डेप्त रिपोर्ट

ग) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

घ) विवरणात्मक रिपोर्ट

17. सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना को सबसे ऊपर रखना और उसके बाद घटते हुए महत्वक्रम में सूचनाएँ देने की खास शैली किसमें पाई जाती है?

क) संपादकीय में

ख) फीचर में

ग) लेख में

घ) समाचार में

उत्तर संकेत

).1ग).2 डेडलाइन (ख..3 उल्टा पिरामिड(छह).4घइसमें लेखक अपनी राय (,दृष्टिकोण,भावना नहीं डाल सकता) .5ग) .6 पत्रकारीय लेखन (क).8 फ्रीलैंस पत्रकार/ स्वतंत्र (क) .7 3 (खअखबारों (की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए विशेषणों और अलंकारिक भाषा का प्रयोग भी करें

) .9ख) .10 फीचर का आरंभ आकर्षक और उत्सुकता पैदा करने वाला होना चाहि (ग आवाज़ ( ) .11ग) .12 इसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता (क).13 स्तम्भ (क सम्पादन( ).14ग).15 पाठक के पत्र (ग).16 साक्षात्कार (ख) .17 इन डेप्त रिपोर्ट(घ समाचार में (

पाठ - 5विशेष लेखन स्वरूप और प्रकार

1) किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन क्या कहलाता है?

(क) संपादकीय

(ख) विशेष लेखन

(ग) कार्टून कोना

(घ) कथा लेखन

2) संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है । मीडिया की भाषा में इसे क्या कहते हैं?

(क) बीट

(ख) डेस्क

(ग) विशेष लेखन

(घ) साक्षात्कार

3) सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी खबरों , मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण कर और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने को ----------

----कहते हैं ।

क) बीट रेपोर्टिंग

ख) विशेषीकृत रेपोर्टिंग

ग) विशेषज्ञता

घ) आर्थिक पत्रकारिता

4) तेजड़िए , मंदड़िये , बिकवाली , ब्याज दर आदि शब्द किस खबर से जुडे होते हैं ?

क) राष्ट्रीय सुरक्षा

ख) विज्ञान

ग) स्वस्थ्य

घ) व्यापार और कारोबार

5) अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल,अर्थ-व्यापार सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों से संबन्धित घटनाओं ,समस्याओं आदि से संबन्धित लेखन ----------लेखन कहलाता है ।

(क) विशेष लेखन

(ख) समाचार लेखन

(ग) स्तम्भ लेखन

(घ) रिपोर्ट लेखन

6) विशेष लेखन के लिए किस प्रकार की भाषा शैली अपेक्षित है?

(क) तकनीकी शब्दावली युक्त भाषा

(ख) सरल ,सहज ,बोधगम्य भाषा

(ग) बाजारू भाषा

(घ) हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा

7) इनमें से कौन सा शब्द पर्यावरण और मौसम से जुड़े खबरों में नहीं आता ?

(क) तूफान का रुख

(ख) टॉक्सिक कचरा

(ग) सोने में भारी उछाल

(घ) पश्चिमी हवाएँ

8) नीचे दिये गए विकल्पों में से कौन सा विशेष लेखन के अंतर्गत आता है?

(क) अर्थ-व्यापार

(ख) खेल

(ग) शिक्षा

(घ) उपर्युक्त सभी

9) कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी रोज़मर्रा की खबरें किस शैली में लिखी जाती है?

(क) कथात्मक शैली

(ख) आत्मकथात्मक शैली

(ग) सामान्य शैली

(घ) उल्टा पिरामिड शैली

10) खेलों की रिपोर्टिंग और विशेष लेखन की भाषा शैली -

(क) सामान्य होनी चाहिए

(ख) लयात्मक होनी चाहिए

(ग) सीधी औए सपाट होनी चाहिए

(घ) ऊर्जा ,जोश ,रोमांच और उत्साह से भरी होनी चाहिए ।

उत्तर संकेत

)1ख)2 विशेष लेखन (क)3 बीट (ख)4 विशेषीकृत रेपोर्टिंग (घ व्यापार और कारोबार ( )5 क)6 विशेष लेखन (क)7 तकनीकी शब्दावली युक्त भाषा (ग सोने में भारी उछाल ( )8 घ)9 उपर्युक्त सभी (घ)10 उल्टा पिरामिड शैली (घ ऊर्जा (,जोश ,रोमांच और उत्साह से भरी होनी चाहिए

पाठ 3 विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

लेखन अभिव्यक्ति का एक माध्यम है जिस प्रकार व्यक्ति बोलकर अपनी भावनाओं तथा विचारों को दूसरों तक पहुंचाता है। उसी प्रकार लेखन अपने विचार विनिमय का एक माध्यम है। आज लेखन का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है जैसे पत्र-पत्रिका, सिनेमा, रेडियो, समाचार, साहित्य आदि के लिए।

जनसंचार के विभिन्न माध्यम

जनमानस द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जनसंचार के अनेक माध्यम है जैसे मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलिविजन एवं इंटरनेट ।

मुद्रित अर्थात समाचार पत्र ,पत्रिकाएं पढ़ने के लिए, रेडियो सुनने के लिए, टीवी देखने और सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने और देखने के लिए प्रयोग करते है ।

जनसंचार के मुद्रित (प्रिंट) माध्यम

जन संचार के आधुनिक माध्यमों में मुद्रित (प्रिंट) सबसे ज्यादा पुराना माध्यम है।

जिसके अंतर्गत समाचार पत्र पत्रिकाएं आती है। मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ, तत्पश्चात जर्मनी के गुटेनबर्ग ने छापाखाने की खोज की।

भारत में(सन 1556 में)गोवा में पहला छापाखाना खुला।

इसका प्रयोग मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए किया था।

आज मुद्रण कंप्यूटर की सहायता से होता है। जनसंचार मुद्रित माध्यमों की खूबियां -

मुद्रित माध्यमों की खूबियां देखें तो हम पाएंगे कि सभी की अपनी कमियां है और विशेषताएं भी है।लिखे हुए शब्द स्थाई होते हैं।इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार ही नहीं अनेकों बार पढ़ सकते हैं।अपनी रुचि और समझ के अनुसार उस स्तर के शब्दों से परिचित हो सकते हैं।उसका अध्ययन चिंतन मनन किया जा सकता है।जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी किया जा सकता है।इसके अतिरिक्त भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले तथा बाद में पढ़ा जा सकता है।

चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रखा भी जा सकता है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की कमियां -

मुद्रित माध्यम की खामियां भी है जैसे अशिक्षित लोगों के लिए अनुपयोगी।

टेलीविजन तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटना की जानकारी नहीं दे पाता। समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात 24 घंटे में एक बार, सप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक माह में एक बार प्रकाशित किया जाता है।किसी भी खबर या रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेड लाइन (समय सीमा) होती है। स्पेस (स्थान) सीमा भी होती है, जबकि रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट माध्यम पर ऐसा प्रतिबंध नहीं होता।महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है।मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की भाषा शैली -

मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए भाषा, व्याकरण, शैली, वर्तनी, समय सीमा, आवंटित स्थान, अशुद्धि शोधन एवं तारतम्यता पर विशेष ध्यान देना जरूरी है। लेखन तथा भाषा शैली पाठक वर्ग को ध्यान में रखकर किया जाता है। रेडियो (विभिन्न माध्यम)

• रेडियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है।

जिसके ध्वनि, शब्द और स्वरो का खेल है।

रेडियो समाचार की संरचना समाचार पत्रों तथा टीवी की तरह उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है जिसमें अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं होती।

लगभग 90 फ़ीसदी समाचार या स्टोरीज इस शैली में लिखी जाती है। उल्टा पिरामिड शैली किसे कहते हैं।

उल्टा पिरामिड शैली मे समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है। अर्थात कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है - १ इंट्रो २ बॉडी ३समापन

1. **इंट्रो**- समाचार का मुख्य भाग होता है।
2. **बॉडी** घटते हुए क्रम में खबर को विस्तार से लिखा जाता है। ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है।
3. **समापन** अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काट कर छोटा भी किया जा सकता है।

समाचार लेखन की बुनियादी बातें।

साफ-सुथरी टाइप की हुई कॉपी, ट्रिपल स्पेस में टाइप करते हुए दोनों और हाशिए छोड़ें।

एक पंक्ति में 12-13 शब्दों से अधिक न हो।

पंक्ति के अंत में विभाजित शब्द का प्रयोग न करें।

समाचार कॉपी में जटिल एवं संक्षिप्त आकार का प्रयोग न करें।

लंबे अंकों को तथा दिनांक को शब्दों में लिखें।

निम्नलिखित क्रमांक, अधोहस्ताक्षरी, किन्तु, लेकिन उपर्युक्त पूर्वक जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

वर्तनी पर विशेष ध्यान दें।

समाचार लेखन की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग करें।

टेलीविजन (विभिन्न माध्यम)

टेलीविजन जनसंचार का दृश्य श्रव्य माध्यम है यह रेडियो की भांति एक रेखीय माध्यम है।

टेलीविजन में शब्दों व ध्वनियों की अपेक्षा दृश्यों का महत्व अधिक होता है।

इस में दृश्य शब्दों के अनुरूप उनके सहयोगी के रुप में चलते हैं।

इस में कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक खबर बताने की शैली का प्रयोग किया जाता है अतः टेलीविजन में समाचार लेखन की प्रमुख शर्त दृश्य के साथ लेखन है।

टेलीविजन खबरों के प्रमुख चरण - प्रिंट अथवा रेडियो की भांति टेलीविजन चैनल समाचार देने का मूल आधार सूचना देना है। टेलीविजन में यह सूचनाएं इन चरणों से होकर गुजरती है।

1. फ्लैश (ब्रेकिंग न्यूज़)
2. ड्राई एंकर
3. फोन इन
4. एंकर विजुअल
5. एंकर बाइट
6. लाइव
7. एंकर पैकेज

फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ - सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। इसमें कम से कम शब्दों में महज सूचना दी जाती है।

ड्राई एंकर- इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते एंकर, दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है।

फ़ोन-इन-इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहाँ से उसे जितनी ज़्यादा से ज़्यादा जानकारियाँ मिलती हैं, वह दर्शकों को बताता है।

एंकर-विजुअल-जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

एंकर- बाइट- बाइट यानी कथन। टेलीविज़न पत्रकारिता में बाइट का काफ़ी महत्त्व है। टेलीविज़न में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

लाइव - लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी.वी. चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जा सकें। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ.बी. वैन के ज़रिये घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

एंकर-पैकेज-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक ज़रिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफ़िक के ज़रिये ज़रूरी सूचनाएँ आदि होती हैं।

टेलीविजन खबरों की विशेषताएं ।

देखने और सुनने की सुविधा।
जीवंत घटनाओं का प्रसारण।

प्रभावशाली खबर से परिचित होना।
समाचारों का लगातार प्रसारण देख पाना।

टेलीविजन खबरों की कमियां -

भाषा शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है।
कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी-कभी सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है।
और परिपक्व बुद्धि पर सीधा प्रभाव डालता है।

रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा

भाषा के स्तर व गरिमा को बनाए रखते हुए सरल भाषा का प्रयोग करें। सभी वर्ग तथा स्तर के लोग समझ सके इसका ध्यान रखना चाहिए छोटे वाक्य तथा सरल और कर्णप्रिय हो।
वाक्यों में तारतम्यता हो।
जटिल शब्दों सामाजिक शब्दों एवं मुहावरों के अनावश्यक प्रयोग से बचें जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द संक्षिप्त अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ा जाए।

इंटरनेट (विभिन्न माध्यम)

इंटरनेट की दीवानी नई पीढ़ी को अब समाचार पत्र पर छपे समाचार पढ़ने में आनंद नहीं आता। उन्हें स्वयं को घंटे - दो
घंटे में अपडेट रहने की आदत सी बन गई है। इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता इसे कुछ भी कह सकते हैं।
इसके द्वारा जहां हम सूचना, मनोरंजन, ज्ञान तथा निजी व सार्वजनिक संवादों का आदान प्रदान कर सकते हैं। वहीं इसे अश्लील, दुष्प्रचार एवं गंदगी फैलाने का माध्यम भी बनाया जा रहा है। इंटरनेट का प्रयोग समाचारों के संप्रेषण संकलन तथा सत्यापन एवं पुष्टिकरण में भी किया जा रहा है। टेलीप्रिंटर के जमाने में जहां 1 मिनट में केवल 80 शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जा सकते थे। वही आज एक सेकंड में लगभग 70000 शब्द भेजे जा सकते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु

इंटरनेट पर समाचार पत्र का प्रकाशन अथवा खबर का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है।
इंटरनेट पर यदि हम किसी भी रूप में समाचारों लेखों चर्चा - परिचर्चा, बहसों, फीचर, झलकियों के माध्यम से अपने समय की धड़कनों को अनुभव कर दर्ज करने का कार्य करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है।
इसी पत्रकारिता को वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है। इस समय विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है, जबकि भारत में दूसरा दौर माना जाताहै।
भारत के लिए प्रथम दौर 1993 से प्रारंभ माना जाता है और दूसरा दौर 2003 से माना जाता है। भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई भी पत्रकारिता कर रहा है तो वह rediff.com इंडिया इन्फोलाइन तथा सीफी जैसी कुछ सीटें हैं।
रेडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है।
वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय तहलका डॉट कॉम को जाता है।

हिंदी में नेट पत्रकारिता वेबदुनिया के साथ प्रारंभ हुई। इंदौर के नई दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। जागरण, अमर उजाला, नई दुनिया, हिंदुस्तान, भास्कर, राजस्थान पत्रिका नवभारत टाइम्स, प्रभात खबर एवं राष्ट्रीय सहारा के वेब संस्करण प्रारंभ हुए।

प्रभासाक्षी नाम से प्रारंभ हुआ अखबार प्रिंट रूप में ना होकर केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है।

आज पत्रकारिता के अनुसार श्रेष्ठ साइड बी.बी.सी. है।

हिंदी वेब जगत में आज अनेक साहित्यिक पत्रिकाएं चल रही है।

कुल मिलाकर हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है।

सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फॉन्ट की है अभी हमारे पास हिंदी की कोई कीबोर्ड नहीं है। जब तक हिंदी के कीबोर्ड का मानकीकरण नहीं हो जाता तब तक इस समस्या को दूर नहीं किया जा सकता।

पाठ 4 पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

* समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन करते हैं। * पत्रकारिता या पत्रकारीय लेखन के अन्तर्गत सम्पादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट, फीचर, स्तम्भ लेखन तथा कार्टून आदि आते हैं।

* पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य है- सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनेरंजन आदि करना।

इसके कई प्रकार हैं यथा - खोज परक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एडेवोकेसी पत्रकारिता आदि।

* पत्रकारिय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है। * पत्रकार को लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि सामान्य जनता के लिए लिखे।

इसलिए उसकी भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए।

वाक्य छोटे व सहज हों।

कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों,अप्रचलित शब्दावली और दोहराव का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

पत्रकार के प्रकार

पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं।

पूर्णकालिक - किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी। **अंशकालिक (स्ट्रिंगर)** - निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार।

फ्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार किसी संस्था से जुड़े नहीं होते। जब से लिखते है तो इनका लेख कोई भी छाप सकता है और बदले में एक निशिचत राशि इन्हें भेज दी जाती है।

समाचार लेखन

समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं।

यह समाचार लेखन की सबसे उयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह - यद्ध के दौरान हुआ।

इसमें महत्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तूत किया जाता है, उसके बाद महत्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत होता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। .

पत्रकारिता के विविध आयाम:

पत्रकारिता :

ऐसी सूचनाओं का संकलन एवं संपादन कर आम पाठकों तक पहुँचाना, जिनमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो तथा जो अधिक से अधिक लोगों को प्रभावित करती हो, पत्रकारिता कहलाता है।

देश विदेश में घटना वाली घटनाओं को संकलित एवं संपादित कर समाचार के रूप में पाठकों तक पहुंचाने की क्रिया को पत्रकारिता कहते हैं।

समाचार

समाचार किसी भी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या को रिपोर्ट है, जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ता हो ।

समाचार के तत्त्व

पत्रकारिता की दृष्टि से किसी भी घटना, समस्या व विचार को समाचार का रूप धारण करने के लिए उसमें निम्न तत्वों में से अधिकांश या सभी का होना आवश्यक होता है: नवीनता ,निकटता ,प्रभाव ,जनरूचि, संघर्ष, महत्त्वपूर्ण लोग, उपयोगी जानकारियाँ, अनोखापन आदि।

डेडलाइन - समाचार माध्यमों के लिए समाचारों को कवर करने के लिये निर्धारित समय सीमा को डेडलाइन कहते हैं ।

संपादन प्रकाशन के लिए प्राप्त समाचार सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके पठनीय तथा प्रकाशन योग्य बनाना संपादन कहलाता है।

पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार

• **खोजी पत्रकारिता** जिसमें आम तौर पर सार्वजनिक महत्व के मामलों जैसे भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों की गहराई से छानबीन कर सामने लाने की कोशिश की जाती है। स्टिंग ऑपरेशन खोनी पत्रकारिता का ही एक नया रूप है।

• वॉचडॉग पत्रकारिता लोकतंत्र में पत्रकारिता और समाचार मीडिया का मुख्य उत्तरदायित्व सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है और कोई गड़बड़ी होने पर उसका पर्दाफाश करना होता है, परंपरागत रूप से इसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं। इसे खोजी पत्रकारिता भी कहते हैं।

• एडवोकेसी पत्रकारिता इसे पक्षधर पत्रकारिता भी कहते हैं। किसी खास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में - जनमत बनाने के लिए लगातार अभियान चलाने वाली पत्रकारिता को एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।पीत पत्रकारिता पाठकों को लुभाने के लिये झूठी अफवाहों, आरोपों प्रत्योरोपों, प्रेम संबंधों आदि से संबंधित सनसनी खेज समाचारों से संबंधित पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते है।

• पेज थ्री पत्रकारिता ऐसी पत्रकारिता जिसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों, महफ़िलों और जाने-माने लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है।

• वैकल्पिक पत्रकारिता मुख्य धारा के मीडिया के विपरीत जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाकर उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्ति करता है उसे वैकल्पिक पत्रकारिता कहा जाता है। आम

तौर पर इस तरह के मीडिया को सरकार और बड़ी पूँजी का समर्थन प्राप्त नहीं होता और न ही उसे बड़ी कंपनियों के विज्ञापन मिलते हैं।

• विशेषीकृत पत्रकारिता- किसी विशेष क्षेत्र की विशेष जानकारी देते हुए उसका विशलेषण करना

विशेषीकृत

पत्रकारिता है विशेषीकृत पत्रकारिता के प्रमुख क्षेत्र संसदीय पत्रकारिता, न्यायालय पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता खेल पत्रकारिता, विज्ञान और विकास पत्रकारिता, अपराध पत्रकारिता, फैशन और फिल्म पत्रकारिता ।

समाचार के छः ककार -

• समाचर लिखते समय मुख्य रूप से छः प्रश्नों देखा, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार के छककार कहा जाता है • प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं।

फीचर :

फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है

फीचर लेखन का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है। फीचर और समाचार में अंतर समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फीचर में लेखक को अपनी राय द्दष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है। समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती। फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फीचर, समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं। पत्र पत्रकाओं में प्राय: 250 से 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं।

विशेष रिपोर्ट :

सामान्य समाचारों से अलग व विशेष समाचार जो गहरी छान बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किये जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार :

1. **खोजी रिपार्ट** : इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन कर सार्वजनिक किया जाता है ।
2. **इन्डेप्थ रिपोर्ट :** सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान बीन कर उसके महत्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है।
3. **विश्लेषणात्मक रिपार्ट** : इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किश्तों में प्रकाशित की जाती है
4. **विवरणात्मक रिपोर्ट** : इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है। विचारपरक लेखन समाचार पत्रों में समाचार एवं फीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तम्भ छपते हैं। ये सभी विचारपरक लेखन के अन्तर्गत आते हैं। ।

संपादकीय :

• संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार पत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं • संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या

राय न होकर समग्र पत्र समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक नाम नहीं लिखा जाता

स्तम्भ लेखन :

यह एक प्रकार का विचारात्मक लेखन है

• कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचारपत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तम्भ लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं • इस प्रकार किसी समाचार पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट व नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली व वैचारिक रुझान के कारण समाज में ख्याति प्राप्त हो, स्तम्भ लेखन कहा जाता है।

संपादक के नाम पत्र :

• समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए

जाते हैं।यह प्रत्येक समाचारपत्र का नियमित स्तम्भ होता है।

• इसके माध्यम से समाचार पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवं राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।

पाठ 5 विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार

❖विशेष लेखन

सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र या विषय से जुडी घटनाओ मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करके लिखना विशेष लेखन कहलाता हैं |

❖ विशेष लेखक कैसे बनें

- विषय में वास्तविक रूचि हो |
- उस क्षेत्र से सम्बंधित ज्यादा से ज्यादा पुस्तकें पढ़ें | खुद को उपडेट रखें |
- विषय में दिलचस्पी और सक्रियता आपको विशेषज्ञ बनाती हैं |
- संबंधित भाषा शैली पर पूरा अधिकार हो |

❖ विशेष लेखन की शुरुआत कैसे करें ?

समाचार के ज़रिए , फीचर के ज़रिए एवं न्यूज़पेग के ज़रिये विशेष लेखन शुरू कर सकते हैं |

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1) विशेष लेखन किसे कहते हैं ?

सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र या विषय से जुडी घटनाओ मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करके लिखना विशेष लेखन कहलाता हैं | उदहारण के लिए खेल ,फिल्म ,विज्ञान ,व्यापार आदि विशेष क्षेत्रों से सम्बंधित लेखन विशेष लेखन के अंतर्गत आते हैं |

2)डेस्क से क्या तात्पर्य हैं ?

समाचार पत्र ,टी वी और रेडियो के लिए किए जाने वाले विशेष लेखन के लिए एक अलग स्थान होता हैं इसे डेस्क कहते हैं |

2) पत्रकारिता की भाषा में बीट किसे कहते हैं ?

संवाद दाताओं के बीच काम का विभाजन बीट कहलाता हैं |

3) बीट रिपोर्टिंग से क्या आशय हैं ?

किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित नए तथ्यों की आरंभिक जानकारी देना बीट रिपोर्टिंग कहलाता हैं |

4) बीट रिपोर्टर किसे कहा जाता हैं?

किसी विशेष क्षेत्र के लिए लिखनेवाले पत्रकार को बीट रिपोर्टर कहा जाता हैं|

5) विशेषीकृत रिपोर्टिंग से क्या आशय हैं ?विशेष लेखन के लिए किन किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए ?

विशेष लेखन का रिपोर्टिंग विशेषीकृत रिपोर्टिंग कहलाता हैं विशेषीकृत लेखन के लिए विशेष संवाददाता को सम्बंधित भाषा शैली पर पूरा अधिकार होना चाहिए | उस विषय में माहिर होना हैं | किसी विशेष क्षेत्र में कई वर्षों तक काम करनेवाला प्रोफशनल भी विशेष लेखन लिख सकते हैं | लेकिन पत्रकारीय विशेषज्ञता का अपना महत्व हैं |

6)बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर हैं ?

किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित नए तथ्यों की आरंभिक जानकारी देना बीट रिपोर्टिंग कहलाता हैं |विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय से संबंधित गहन विश्लेषण होता हैं |

7) संवाददाता और विशेष संवाददाता में क्या अंतर होता हैं ?

किसी भी बीट के लिए तथ्यात्मक संकलन और लेखन करने वाले पत्रकार को संवाददाता कहते हैं लेकिन किसी विशेष विषय के विशेषज्ञ और विश्लेषक को विशेष संवाददाता कहते हैं |

8)विशेष लेखन के चार क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए |

खेल ,व्यपार , फिल्म ,विज्ञान

9) खेल ,व्यापर से जुडी कुछ विशेष शब्दावली का उल्लेख कीजिए ?

खेल - ज़ोरदार प्रहार ,मारा, पीटा ,रौंदा घुटने टेका आदि

व्यापार - सोने में भारी उछाल ,चांदी लुढकी , सेंसेक्स आसमान पर| आदि

पाठ 11 कैसे करें कहानी का नाट्य रूपान्तरण

प्रश्न कहानी और नाटक में अंतर बताइए । 1

उत्तर 1 -जहां कहानी का संबंध पाठक और लेखक से जुड़ता है वहीं नाटक लेखक , दर्शक, निर्देशक ,पात्र, श्रोता, एवं अन्य लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है।

कहानी कही जाती है या पढ़ी जाती है 2, नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी को आरंभ 3, मध्य और अंत के आधार पर विभाजित किया जाता है और नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

कहानी में मंच सज्जा 4, संगीत , प्रकाश आदि का कोई महत्त्व नहीं है वहीं नाटक में मंच सज्जा, संगीत व प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।

प्रश्न नाटक और कहानी में क्या समानता है 2?

उत्तर कहानी और नाटक के कुछ मूल तत्व एक ही हैं । कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है ,पात्र होते हैं , परिवेश होता है, कहानी का क्रमिक विकास होता है , संवाद होते हैं , द्वंद्व होता है, चरम उत्कर्ष होता है ।

प्रश्न मय किन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिएकहानी को नाटक में रूपांतरित करते स 3?

उत्तर कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए –

1. कहानी की विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।
2. कथावस्तु में से एक एक घटना को चुनकर उसके आधार पर दृश्य बनाए जाते है ।
3. दृश्यों के क्रमिक विकास के लिए पर्याप्त संवाद दिये जाते हैं
4. कथावस्तु से संबन्धित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
5. ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
6. कथावस्तु के अनुरूप प्रकाश व मंच सज्जा की व्यवस्था की जाती है।
7. पात्रों के मनोभावों और मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत करने के लिए स्वगत कथन, वायस ओवर या फ़्लैशबैक आदि का उपयोग किया जाता है।
8. वर्तमान रंगमंच की संभावनाओं को जानें व अच्छी नाट्य प्रस्तुतियाँ देखें ।

प्रश्न कहानी के नाट्य रूपान्तरण में दृश्य कैसे हों 4?

उत्तरसमय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए कहानी की विस्तृत कथावस्तु को - जाते हैं । ध्यान रहे कि कोई आवश्यक जानकारी छूट न जाये और क्रम न बिगड़े । दृश्य कथानक को आगे बढ़ाता है तो दूसरी ओर पात्रों और परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है । साथ - साथ दृश्य अगले दृश्य के लिए भूमिका भी तैयार करता है इसलिए यह अवश्य देखना चाहिए कि जानकारियाँ, सूचनाएँ और घटनाएँ दोहराई न गई हो।

प्रश्न नाटक में संवाद कैसे होने चाहिए 5 ?

उत्तर टेदृश्य के विकास को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त संवाद होने चाहिए । संवाद छो -,प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हो ।नाटक के संवाद कहानी के संवादों से मेल खाते हो।

प्रश्न कहानी के पात्र नाट्य रूपान्तरण में किस 6प्रकार परिवर्तित किए जा सकते हैं?

उत्तरल होना नाट्य रूपान्तरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यतमकता का नाटक के पात्रों से मे - चाहिए ।

पात्रों की भंगिमाओं और उसके तौर तरीकों का भी उचित ध्यान रखना चाहिए।*

पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।*

पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए।*

प्रश्न हैं कौन सी समस्याएँ आती -नाट्य रूपान्तरण करते समय कौन 7?

उत्तर कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।* -

मंच सज्जा*, संगीत , ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है ।

पात्रों के मनोभावों तथा मानसिक द्वन्द्वों की प्रस्तुति में समस्या होती है ।*

स्या आती है।संवाद को नाटकीय रूप प्रदान करने में सम*

पाठ 12 कैसे बनता हैं रेडियो नाटक

ध्यान रखने की बातें

सिनेमा और नाटक की तरह रेडियो नाटक एक दृश्यमाध्यम नहीं बल्कि श्रव्य माध्यम हैं |

रेडियो नाटक की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती हैं |

रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती हैं |

पात्रों की संख्या भी सीमित होती हैं |

सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं ; संवाद होते हैं और संवादों के ज़रिये कहानी आगे बढ़ती हैं |

पूरी तरह श्रव्य माध्यम होने के कारण सिनेमा और रंगमंच के लेखन से रेडियो नाटक भिन्न हैं |

कहानी की विषय वस्तु पूरी तरह एक्शन अर्थात हरकत पर न निर्भर हो आम तौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट तक होती हैं | रेडियो पर निश्चित अवधि पर निश्चित कार्यक्रम होते हैं | रेडियो का श्रोता घर बैठे बैठे कार्यक्रम सुनते हैं | मन उचट ते ही रेडियो नाटक के श्रोता किसी और स्टेशन के लिए सूई घुमा सकता हैं |

रेडियो नाटक के श्रोता केवल आवाज़ के ज़रिए चरित्रों को याद रख सकते हैं इसलिए पत्रों की संख्या सीमित रखना रेडियो नाटक के लिए ज़रूरी हैं |

रेडियो नाटक की कहानी का चुनाव करते समय ध्यान रखने की बातें -

कहानी घटना प्रधान न हो, इसकी अवधि बहुत ज्यादा न हो, पात्रों की संख्या सीमित हो

रेडियो नाटक में दृश्य के बदले अंग्रेज़ी में कट लिखा जाता हैं|

ध्वनि प्रभाव ,संवाद आदि के माध्यम से श्रोता रेडियो नाटक का आस्वादन कर सकते हैं |.

- ❖ नाटक ,सिनेमा और रेडियो नाटक में समानता|
- सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं|
- संवाद होते हैं|
- संवादों के ज़रिये कहानी आगे बढ़ती हैं |
- ❖ नाटक ,सिनेमा और रेडियो नाटक में असमानता|
- सिनेमा और नाटक की तरह रेडियो नाटक एक दृश्यमाध्यम नहीं बल्कि श्रव्य माध्यम हैं |
- रेडियो नाटक की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती हैं |
- रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती हैं |
- पात्रों की संख्या भी सीमित होती हैं |
- कहानी की विषय वस्तु पूरी तरह एक्शन अर्थात हरकत पर न निर्भर हो|
- ❖ रेडियो नाटक की कहानी का चुनाव करते समय ध्यान रखने की बातें-
- कहानी घटना प्रधान न हो|
- इसकी अवधि बहुत ज्यादा न हो|
- पात्रों की संख्या सीमित हो|

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1) रेडियो नाटक किसे कहा जाता हैं और आज के संदर्भ में इसका महत्व क्या हैं ?

उ. रेडियो से प्रसारित किए जानेवाला नाटक रेडियो नाटक कहलाता हैं | वर्त्तमान व्यस्ततापूर्ण जीवन में जहाँ व्यक्ति पास समय नहीं रहता वहां वह घर बैठे बैठे रेडियो नाटक का अस्वादन कर सकते हैं | अंधे लोगों के लिए यह आस्वादन का नया धरातल ही खड़ा करता हैं |

2) नाटक ,सिनेमा और रेडियो नाटक में समानता क्या क्या हैं ?

उ. नाटक ,सिनेमा और रेडियो नाटक में इन बातों पर समानता हैं -

- सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं|
- संवाद होते हैं|
- संवादों के ज़रिये कहानी आगे बढ़ती हैं |

3) नाटक ,सिनेमा और रेडियो नाटक में असमानता क्या क्या हैं ?

उ. नाटक ,सिनेमा और रेडियो नाटक में इन बातों पर असमानता हैं -

- सिनेमा और नाटक की तरह रेडियो नाटक एक दृश्यमाध्यम नहीं बल्कि श्रव्य माध्यम हैं|
- रेडियो नाटक की प्रस्तुति संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती हैं |
- रेडियो नाटक की अवधि एवं पात्र संख्या सीमित होती हैं |
- कहानी घटना प्रधान न हो|

4) रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक नियत रखने का क्या कारण हो सकता हैं ?

रेडियो पर निश्चित अवधि पर निश्चित कार्यक्रम होते हैं | रेडियो का श्रोता घर बैठे बैठे कार्यक्रम सुनते हैं | मन उचटते ही रेडियो नाटक के श्रोता किसी और स्टेशन के लिए सूई घुमा सकता हैं इसलिए आम तौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट तक होती हैं|

5) रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित रखने का क्या कारण हैं ?

उ. रेडियो नाटक के श्रोता केवल आवाज़ के ज़रिए चरित्रों को याद रख सकते हैं इसलिए पत्रों की संख्या सीमित रखना रेडियो नाटक के लिए ज़रूरी हैं |

6) रेडियो नाटक में दृश्य के बदले क्या लिखा जाता हैं ?

रेडियो नाटक में दृश्य के बदले 'कट' लिखा जाता हैं |

7) रेडियो नाटक में पात्रों का नाम लेना क्यों ज़रूरी होता हैं ?

रेडियो नाटक में कौन किससे बात कर रहा हैं हम देख नहीं पाते |इसलिए संवाद जिस चरित्र से सम्बंधित हैं उसका नाम लेना ज़रूरी होता हैं |इसके अलावा कोई पात्र विशेष कोई हरकत या एक्शन करता हैं उसे भी संवाद का हिस्सा बनाना पड़ता हैं |

8) रेडियो नाटक की भाषा -शैली कितनी अहमियत रखती हैं ?

रेडियो नाटक में पात्रों संबंधी सभी जानकारी हमें संवादों के माध्यम से मिलती हैं |पात्रों के आपसी संबंध भी संवादों से व्यक्त होती हैं |

9) दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में रेडियो नाटक क्या क्या सीमाएं हैं |इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता हैं ?

रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम होने के कारण संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से ही श्रोता कहानी की विषय वस्तु को समझ सकते हैं | पात्रों की संख्या को कम रखकर ,उनका नाम लेकर ,उचित ध्वनि प्रभावों से एवं पात्रानुकूल भाषा चुनकर इन कमियों को पूरा किया जा सकता हैं |

10) रेडियो नाटक में इन दृश्यों को आप किसतरह प्रस्तुत करेंगे ?

घनी और अंधेरी रात -

रोहिणी - हम आगे कैसे चलेंगे | कुछ भी दिखाई नहीं देता | मुझे तो डर लगती हैं |(झींगुरों की आवाज़ , कुत्ते का रुदन आदि)

सुबह का समय

मदन - सुबह छह बजे मिस्टर राठी से मुलाक़ात हैं | अभी निकले तभी तो साढ़े पाँच की बस मिलेगी |(मंदिर के गीत ,चिड़ियों की चहचहाहट आदि की ध्वनि)

पाठ 13 नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

- दिए गए नए और अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन, एक निबंधात्मक प्रश्न विकल्प सहित - 6 अंक)
- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

अप्रत्याशित शब्द का क्या अर्थ है ? अ+प्रति+आशा+इत = अप्रत्याशित अर्थात् जिसकी आशा न की गई हो

- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से क्या तात्पर्य है ?

किसी नए और अप्रत्याशित विषय पर कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है |

- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन क्या है ?

ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा न की हो उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन है |

- पारम्परिक और अप्रत्याशित विषयों में अंतर

पारम्परिक विषय वो होते हैं जो किसी मुद्दे, विचार, घटना, आदि से जुड़े होते हैं और अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक विषय होते हैं | इसमें आप अपनी राय को इतनी प्राथमिकता न देकर सामूहिक विचार पर जोर देते हैं | जबकि अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आपके अपने निजी विचार होते हैं |

- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

1. जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए |
2. विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी उचित रूप रेखा बना लेनी चाहिए |
3. विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए |
4. विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए |
5. अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए |

- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में क्या-क्या बाधाएँ आती हैं ?

1. सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता |
2. लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृति का अभाव होता है |
3. लेखक से पास विषय से संबंधित सामग्री और तःयों का अभाव होता है |
4. लेखक की चितन शक्ति मंद पद जाती है |
5. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है |

- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है |

1. किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रूककर एक रूप रेखा बना लेनी चाहिए उसके पश्चात् ही शानदार ढंग से अपने विषय की शुरुआत करें |
2. विषय को आरंभ करने के साथ ही उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाए, यह भी मस्तिष्क में पहले से होना आवश्यक है |
3. जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना बहुत आवश्यक है |
4. किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ-साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक है |

5. नए विषय में लेखन में 'मैं' शैली के प्रयोग से लेखक के विचारों और उसके व्यक्तित्व को झलक प्राप्त होती है |

- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से लाभ -

1. यह आपकी मौलिक रचना होगी |
2. आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होगा |
3. आपकी भाषा पर अच्छी पकड़ बनेगी |
4. आप अपने विचारों को किसी तर्क, विचार के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करेंगे |

- क्या अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कोई निश्चित रूप लेती है ?

जी नहीं,ऐसा बिलकुल नहीं है, जब आप अपने विचारों को अपने अनुभव,तर्क,समाज,स्थान,काल और पात्र के आधार पर शब्दांकित करते हैं तो वो कभी संस्मरण,कभी निबंध, कभी रेखाचित्र, कभी कहानी, कभी यात्रा वृतांत, कभी रिपोतार्ज आदि साहित्यिक विधा का रूप ले सकता है |

- अप्रत्याशित लेखन का विषय और लेखन प्रक्रिया -

अप्रत्याशित विषयों की संख्या अपरिमित हो सकती है जैसे- आपके सामने दीवार पर टंगी घड़ी, एक कामकाजी औरत की शाम, दीवार में बाहर की ओर खुलता हुआ झरोखा-कुछ भी हो सकता है | ऐसे विषय भी हो सकते हैं जिनमें इनके मुकाबले खुलापन थोड़ा कम हो और'फोकस' अधिक स्पष्ट हो | जैसे टी.वी. धारावाहिक में स्त्री, बहुत जरुरी है शिक्षा आदि |

ये विषय अलग-अलग प्रकृति के हो सकते हैं | इनका उद्देश्य आपको तार्किक विचार प्रक्रिया में उतारना है | कोई विषय आपको अपनी स्मृतियों को खंगालने के लिए प्रेरित करता है तो कोई अनुभव को सैद्धांतिक नजरिये से जाँचने परखने के लिए उकसाता है | इन आवश्यकताओं को

ध्यान में रखते हुए आप जो लिखेंगे वह कबी निबंध बन पड़ेगा,कभी संस्मरण, कभी रेखाचित्र की शक्ल लेगा तो कभी यात्रा वृतांत की | इसलिए हम उसे सामान्य नाम देंगे- लेख ताकि ऐसा न लगे कि किसी विधा विशेष पर लिखने का दबाव न रहे |

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन एक खुले मैदान में भाग दौड़, उछल कूदने करने और निर्बाध कुलाँचें भरने की छूट की तरह होता है | दिए गए विषय के साहचर्य से जो भी सार्थक और सुसंगत विचार हमारे मन में आते हैं, उन्हें हम यहाँ व्यक्त कर सकते हैं |

शिक्षा जैसे विषयों पर लेखन करते समय विचार प्रवाह को थोड़ा नियंत्रित रखना पड़ता है | किसी भी विषय पर एक ही व्यक्ति के जेहन में कई तरीकों से सोचने की प्रवृति होती है | इस स्थिति में सबसे पहले 2-3 मिनट ठहर कर यह तय कर लें कि उनमें से किस कोण से उभरने वाले विचारों को थोड़ा विस्तार दे सकते हैं | यह तय कर लेने के बाद एक आकर्षक-सी शुरुआत करें | शुरुआत से विषय को कैसे सिलसिलेवार आगे बढ़ाना है इसकी रूपरेखा जहाँ में होनी चाहिए |

सावन की पहली झड़ी

पिछले कई दिनों से हवा में घुटन-सी बढ़ गई थी | बाहर तपता सूर्य और सब तरफ हवा में नमीं की अधिकता जीवन दूभर बना रही थी | बार-बार मन में भाव उठता कि हे भगवान, कुछ तो दया करो| न दिन में चैन न रात को आँखों में नींद-बीएस गर्मी ही गर्मी, पसीना ही पसीना |रात को बिस्तर पर करवटें लेते-लेते पता नहीं कब आँख लग गई |सुबह आँखें खुली तो अहसास हुआ कि खिडकियों से ठंडी हवा भीतर आ रही है | उठ कर खिड़की से बाहर झाँका तो मन ख़ुशी से झूम उठा | आकाश तो काले बादलों से भरा हुआ था | आकाश में कहीं नीले रंग की झलक नहीं | सूर्य देवता बादलों के पीछे पता नहीं कहाँ छिपे हुए थे | पक्षी पेड़ों पर बादलों के स्वागत में चहचहा रहे थे | मोहल्ले से सारे लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल मौसम के बदलते रंग को देख रहे थे |अचानक बादलों में तेज बिजली कौंधी जोर से बदल गरजे और मोटी-मोटी कुछ बूंदें टपकी कुछ लोग इधर-उधर भागे ताकि अपने-अपने घरों के बाहर पड़ा सामान भीतर रख लें | पल भर में बारिश का तेज सर्राटा आया और फिर लगातार तेज़ बारिश शुरू हो गई | महीनों से प्यासी धरती की प्यास बुझ गई | पेड़-पौधों के पत्ते नहा गए | उनका धूल-धूसरित चेहरा धुल गया और हरी-भरी दमक फिर से लौट आई | छोटे-छोटे बच्चे बारिश में नहा रहे थे, खेल रहे थे, एक दूसरे पर पानी उछाल रहे थे | कुछ ही देर में सड़कें-गलियां छोटे-छोटे नालों की तरह पानी भर-भर कर बहने लगीं थी | कल रत तक दहकने वाला दिन आज खुशनुमा हो गया था | तीन-चार घंटें बाद बारिश की गति कम हुई और फिर पांच-दस मिनट के लिए बारिश रुक गई |सुबह से शाम हो गई है पर बादलों पर अँधेरा उतना ही है जितना सुबह था | रिमझिम बारिश आ रही है | घरों की छतों से पानी पनालों से बह रहा है | यह तो अगले शनिवार तक ऐसे ही रहेगी ऐसा मेरी माँ कह रही थी भगवान करे ऐसा ही हो | धरती की प्यास बुझ जाए और हमारे खेत लहलहा उठे |

एक कामकाजी औरत की शाम

हमारे देश में मध्यवर्गीय परिवारों के लिए अति आवश्यक हो चुका है कि घर परिवार को ठीक प्रकार से चलाने के लिए पति-पत्नी दोनों धन कमाने के लिए कार्य करें और इसलिए समाज में कामकाजी औरतों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है | कामकाजी औरत की जिंदगी पुरुषों की अपेक्षा कठिन है | वह घर-बाहर का काम एक साथ संभालती है | उसकी शाम तभी आरंभ हो जाती है जब वह अपने कार्यस्थल से छुट्टी के बाद बाहर निकलती है वह घर पहुँचने से पहले ही रास्ते में आने वाली रेहड़ी या बाज़ार से फल-सब्जियां खरीदती है, छोटे-मोटे अन्य सामान को लेती है और तब वह घर पहुँचती है | तब तक पति और बच्चे भी घर पहुँच चुके होते हैं | दिन भर की थकी-हारी औरत कुछ आराम करना चाहती है पर उससे पहले चाय तैयार करती है | यदि वह औरत संयुक्त परिवार में रहती है तो कुछ और तैयार करने की फरमाइशें भी उसे पूरी करनी पड़ती है | चाय पीते-पीते वह बच्चों से, बड़ों से बातचीत करती है | यदि उस समय कोई घर में मिलने के लिए कोई मेहमान आ जाता है तो सारी शाम आगंतुकों (मेहमानों) की सेवा में बीत जाती है | लेकिन यदि ऐसा न हुआ तो भी उसे फिर से बाज़ार या कहीं और जाना पड़ता है ताकि घर के लोगों की फरमाइशें को पूरा कर सके | लौट कर बच्चों को होमवर्क करने में सहायता देती

है और फिर रात के खाने की तैयारी में लग जाती है | कभी-कभी उसे आस-पड़ोस के घरों में भी औपचारिकता वश जाना पड़ता है | कामकाजी औरत तो चक्कर घिन्नी की तरह हर पल चक्कर काटती रहती है |उसकी शाम अधिकतर दूसरों की फरमाइशों को पूरा करने में बीत जाती है | वह हर पल चाहती है कि उसे भी घर में रहने वाली औरतों के समान कोई शाम अपने लिए मिले पर प्रायः ऐसा हो ही नहीं पाता क्योंकि कामकाजी औरत का जीवन तो घड़ी की सुइयों से बंधा होता है |

नीचे दिए गए विषयों पर अभ्यास करें-

- कोरोना-काल में पढाई
- उगता सूरज
- दीया और तूफान
- मेरा प्रिय टाइमपास
- झरोखे से बाहर
- इम्तिहान के दिन
- जातिवाद का जहर

आत्म परिचय

- हरिवंश राय बच्चन

आत्म परिचय कविता बच्चन जी की आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई कविता है। इसमें में कवि ने समाज के साथ अपने बनते बिगड़ते संबंधों एवं अपने प्रेममय व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। कवि यह संदेश देते हैं कि मनुष्य को अपने सभी सांसारिक कर्तव्य निभाते हुए प्रेम और मस्ती के साथ जीवन बिताना चाहिए ।कभी का कहना है कि वह समाज या जग का अंग होते हुए भी उससे अलग व्यक्तित्व का स्वामी है। कवि के हृदय की तंत्रियों को किसी ने छूकर झंकृत कर दिया था अर्थात उनके अंदर प्यार को जगाया है। वह उसी प्रेम के सहारे आगे बढ़ रहा हैं। लोग तो सांसारिक समस्याओं में उलझे रहते हैं किंतु वह मन की भावनाओं में मग्न रहता है। उसे प्रेम के बिना यह संसार अधूरा लगता है, इसलिए वह एक नए स्वप्निल संसार की खोज में रहता है। कवि के मन में प्यार की मादकता है। इस नशे में भी वियोग का दर्द भी है ।इस कारण उनका मन रोता है किंतु होठों पर फिर भी हंसी खेलती है।कवि अपने हृदय की सच्ची भावना रूपी पुरस्कार बांटते हुए चलते हैं कवि जीवन में आने वाले सुख-दुख, आशा -निराशा आदि सभी स्थितियों को सहज रूप से स्वीकार करते हैं। कवि की कोमल वाणी के अंदर भी संसार में बदलाव लाने की शक्ति है। कवि के पास आत्म सम्मान रूपी वह खंडहर है, जिसके सामने बड़े-बड़े राजाओं का महल भी न्योछावर हो जाएगा। कवि दीवानों के वेश में मस्ती का संदेश लेकर फिरता है|

मैं जग जीवन का भार लिए फिरता हूँ

फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ

कर दिया किसी ने झंकृत जिन को छूकर

में सांसों के दो तार लिए फिरता हूँ

मैं स्नेहा-सुरा का पान किया करता हूँ

मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूं

जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते

में अपने मन का गान किया करता हूँ

1)कवि किस का भार लिए फिरता है?

क) पारिवारिक जीवन का ख) सांसारिक जीवन का

ग) दोस्ती का घ) कार्यालय का

2) 'कर दिया किसी ने झंकृत जिन को छूकर'- पंक्ति में 'किसी ने' से क्या आशय है?

क) संपादक ख) दोस्त ग) प्रिया घ) पाठक

3) 'स्नेहा- सुरा' से क्या आशय है ?

क) जीवन का उत्तरदायित्व ख) प्रेम की मादकता

ग) सांसारिक सुख सुविधाएँ घ) धन दौलत

4) 'स्नेहा - सुरा' - में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

क) उपमा ख) उत्प्रेक्षा ग) यमक घ) रूपक

5) कभी जीवन में क्या बांटते हुए चलते हैं?

क) सहानुभूति ख) धन ग) प्यार घ) साहस

उत्तर : 1) ख , 2) ग 3) ख 4) घ 5) ग

काव्यांश 2

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता

मैं बना बना कितने जग रोज़ मिटाता

जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव

मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ

शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ

हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर

मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ|

1) कवि अपने आप को किस से अलग महसूस करता है?

क) परिवार वालों से ख) पाठकों से ग) दोस्तों से घ) संसार से

2) कवि किसको अपने पैरों से ठुकराता है ?

क) सांसारिक वैभव को ख)दुखों को ग) पुरस्कारों को घ) भोजन को

3) 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' -में 'आग' से क्या तात्पर्य है?

क) ओज एवं साहस ख) बदलाव की चेतना

ग) क्रांति की भावना घ) उपर्युक्त सभी

4) 'प्रति-पग'- में कौन सा अलंकार है ?

क) उपमा ख) रूपक ग) अनुप्रास घ) उत्प्रेक्षा

5) 'हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर'- पंक्ति में 'प्रासाद' शब्द का अर्थ क्या है?

क) प्रसाद ख) महल ग) आकाश घ) धन

उत्तर : 1) घ , 2) क 3) घ 4) ग 5) ख

काव्यांश 3

मैं रोया इसको तुम कहते हो गाना

मैं फूट पड़ा तुम कहते छंद बनाना

क्यों कवि कह कर संसार मुझे अपनाए

मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ

मैं मादकता नि:शेष लिए फिरता हूँ

जिसको सुनकर जग झूम, झुके लहराए

मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ।

1 कवि के संदेश को सुनकर संसार क्या-क्या प्रतिक्रियाएं करता है?

क)छुक जाता है ख) लहराने लगता है ग)झूम उठता है घ)उपरोक्त सभी 2

प्रस्तुत कविता में कवि किसप्रकार का संदेश लिए फिरता है?

क) समर्पण का ख) सांत्वना का ग) देश भक्ति का घ) मस्ती का

3 'नि:शेष' शब्द का अर्थ क्या है?

क) जिसमें कुछ ना बचा हो ख) अवशिष्ट ग) नवीन घ)पुराना

4 कवि के रुदन को लोग क्या समझ बैठते हैं ?

क)पागलपन ख) गाना ग)नशा घ) आवेश

5 कवि अपने को क्या समझता है ?

क) देशभक्त ख) समाजसेवी ग) दीवाना घ) क्रांतिकारी

उत्तर : 1) घ , 2) घ 3) क 4) ख 5) ग

प्रश्नोत्तर -

क) कविता एक और जगजीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी और 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ', विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है ?

कवि को पता है कि व्यक्यि को समाज में रहते हुए अपने उत्तरदायित्वों का पालन करना पड़ता है। व्यक्ति पूरी तरह अपने आप को सामाजिक जीवन से अलग नहीं कर सकता। कवि को भले ही समाज की परंपराएं रीति रिवाज और सडी-गली मान्यताओं से कोई लेना-देना नहीं, फिर भी उसे पता है कि वह इस समाज का एक अंग है। इसलिए जहाँ वह अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करता है, वहीं अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व भी बनाए रखते हैं ।वह समाज में रहते हुए भी मस्ती भरा अपना अलग जीवन व्यतीत करता है|

ख) जहां पर दाना रहते हैं वही नादान भी होते हैं कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

कवि के अनुसार संसार में जहां ज्ञानी लोग रहते हैं वही नासमझ लोग भी रहते हैं| सांसारिक सत्य को जानने के लिए अनेक साधु-संतों और संन्यासियों ने प्रयत्न किए ।किंतु वह सत्य को नहीं जान पाए ,फिर भी सभी इस सत्य को जानने के लिए लगातार कोशिश में लगे रहते हैं। वे अपना जीवन जीना भी भूल जाते हैं। यह जग की मूर्खता है जो इससे भी शिक्षा ग्रहण नहीं करता। कवि संसार रूपी सागर को पार करने की कोशिश करने के बजाय उसी की लहरों में मस्ती से खेलते रहना चाहता है|

ग) मैं और, और जग और कहां का नाता- पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए ?

प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने समाज के साथ अपने बनते बिगड़ते संबंधों को आकर्षक ढंग से बताया है। पहले मैं और से तात्पर्य है कि मैं अन्य लोगों से हटकर हूँ। 'जग और' यह संसार और ही प्रकार है। इन दोनों के मध्य आया 'औ'र योजक के रूप में आया है। कवि यह कहना चाहते हैं कि कि उनका एक अलग व्यक्तित्व है। समाज अपने रास्ते पर अलग चलते हैं। समाज की परंपराओं से और रीति-रिवाजों से उनका कोई लेना देना नहीं है।

घ) शीतल वाणी में आग के होने का क्या अभिप्राय है?

शीतल वाणी में आग से कवि यह कहना चाहते हैं कि भले ही उनके शब्द कोमलकांत नजर आए ,लेकिन उनके अंदर ओज,शौर्य, पौरुष और क्रांति की भावना है। समाज की सभी सडी-गली मान्यताओं एवं परंपराओं के विरुद्ध विद्रोह का स्वर है ।

दिन जल्दी जल्दी ढलता है (एक गीत) - हरिवंशराय बच्चन

कविता का सार

निशा-निमंत्रण से उद्धृत इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचल तेजी भर सकता है-अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने के अभिशिप्त हो जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

कवि कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए व्यक्ति जब अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती, वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है। अत: रात जीवन में निराशा नहीं, अपितु आशा का संचार भी करती है।

पठित काव्यांश – 1

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंज़िल भी तो है दूर नहीं –
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !

1. दिन का थका पंथी जल्दी –जल्दी क्यों चलता है ?
   (क) वह अँधेरा होने से पूर्व अपनी मंजिल पर पहुँचना चाहता है
   (ख) उसका घर पर कोई इंतजार नही कर रहा
   (ग) उसको थकान नहीं लग रही
   (घ) ये सभी

2. दिन जल्दी –जल्दी ढलता है का आशय है –
   (क) समय का सदुपयोग करना

(ख) समय परिवर्तनशील है
(ग) समय नहीं मिलता है
(घ) इनमे से कोई नहीं

3. पक्षी के परों में चंचलता का क्या कारण है ?
(क) बच्चों की याद (ख) भूख लगना (ग) भय (घ) प्रतिस्पर्धा

4. दिन जल्दी –जल्दी ढलता प्रतीत होता है –
(क) बैचेनी के कारण
(ख) सर्दी के दिन है
(ग) बहुत तेज बारिश के कारण
(घ) इनमे से कोई नहीं

5. दिन जल्दी –जल्दी ढलता है ' इस पंक्ति में निहित अलंकार है–
(क) विभावना (ख) उपमा
(ग) रूपक (घ) पुनरुक्ति प्रकाश

पठित काव्यांश - 2

बच्चे प्रत्याशा में होंगे
नीड़ों से झांक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के
भरता कितनी चंचलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है
मुझ से मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है ।
दिन जल्दी जल्दी ढलता है।

1. चिडिया के बच्चे घोंसलों से किस आशा में झाँक रहें होंगे ?
(क) उड़ने को (ख) भोजन की आशा में
(ग) किसी आगंतुक को देखने (घ) मौसम का हाल देखने

2. अपने बच्चों का ध्यान आने पर चिड़िया की क्या दशा होती है?
(क) उसकी गति तेज़ हो जाती है
(ख) वह उदास हो जाती है
(ग) उसे कोई फर्क नहीं पड़ता
(घ) उसकी गति मंद हो जाती है

3. बच्चों की क्या प्रत्याशा है ?

(क) उनके माता-पिता लौट कर आ रहे होंगे
(ख) माता –पिता के साथ नही रहना है
(ग) बच्चों को डर नही लगता है
(घ) इनमे से कोई नहीं

4. कौन सा विचार कवि के पैरों में शिथिलता ला देता है ?
(क) मेरे लिए सब व्याकुल है
(ख) मुझ से मिलने को कोई व्याकुल नहीं
(ग) कवि का पत्नी के साथ झगड़ा हो गया है
(घ) इनमे से कोई नहीं

5. " मुझसे मिलने को कौन विकल" - इस पंक्ति में कवि की विशेष मानसिक स्थिति का पता चलता है।इनमें से कौन सा विकल्प सही नहीं है?
(क) उदासीनता
(ख़) उत्साह
(ग) निराशा
(घ) एकाकीपन

पठित काव्यांश – 1 उत्तर :
1. क 2 ख 3 क 4 क 5 घ
पठित काव्यांश – 2 उत्तर :
1. ख 2 क 3 क 4 ख 5 ख

प्रश्नोत्तर -

1) बच्चे किस बात की आशा में नीडो से झांक रहे होंगे ?
बच्चे सवेरे से मां-बाप से बिछड़ कर घोसले में अकेले हैं और भूखे हैं। वे इस आशा में झांक रहे होंगे कि जब उनके मां-बाप वापस लौट कर नींड में आएंगे तो उन्हें खाने को कुछ मिलेगा और उनकी ममता प्यार और दुलार मिलेगा|

2) 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?
कविता में कवि समय के गुजर जाने का एहसास तथा लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास को तीव्र करने का जोश मनुष्य में उत्पन्न करना चाहता है ।दिन जल्दी- जल्दी ढलता है इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि जीवन की घडियाँ जल्दी बीत जाती है ।समय किसी के लिए

नहीं रूकता। समय गतिशील एवं परिवर्तनशील है। पंक्ति की आवृत्ति से कविता में गेयता के गुणों का समावेश भी होता है।

पतंग

- आलोक धन्वा

कविता का सारांश

'पतंगव्यंग्य संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने 'दुनिया रोज बनती है' कविता कवि के ' बालसुलभ इच्छाओं और उमंगों का सुंदर चित्रण कियाहै। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होंने सुंदर बिंबों का उपयोग किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है जिसके जरिये वे आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं तथा उसके पार जाना चाहते हैं।

यह कविता बच्चों को एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, जहाँ तितलियों की रंगीन दुनिया है, दिशाओं के मृदंग बजते हैं, जहाँ छतों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर भय पर विजय पाते बच्चे हैं जो गिरगिरकर सँभलते हैं तथा पृथ्वी का हर कोना खुदख-ब-ुद उनके पास आ जाता है। वे हर बार नईनई पतंगों को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए - औधेरे के बाद उजाले की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

कवि कहता है कि भादों के बरसते मौसम के बाद शरद ऋतु आ गई। इस मौसम में चमकीली धूप थी तथा उमंग का माहौल था। बच्चे पतंग उड़ाने के लिए इकट्ठे हो गए। मौसम साफ़ हो गया तथा आकाश मुलायम हो गया। बच्चे पतंगें उड़ाने लगे तथा सीटियाँ व किलकारियाँ मारने लगे। बच्चे भागते हुए ऐसे लगते हैं मानो उनके शरीर में कपास लगे हों। उनके कोमल नरम शरीर पर चोट व खरोंच अधिक असर नहीं डालती। उनके पैरों में बेचैनी होती है जिसके कारण वे सारी धरती को नापना चाहते हैं।

वे मकान की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं मानी छतें नरम हों। खेलते हुए उनका शरीर रोमांचित हो जाता है। इस रोमांच मैं वे गिरने से बच जाते हैं। बच्चे पतंग के साथ उड़तेकभी वे -से लगते हैं। कभी-छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर भी बच जाते हैं। इसके बाद इनमें साहस तथा आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. *सबसे तेज बौछारें गयीं भादों गया*
सवेरा हुआ

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए

2. घंटी बजाते हुए ज़ोर ज़ोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को

चमकीले इशारों से बुलाते हुए और

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए

कि पतंग ऊपर उठ सके -

दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ें उड़ सकें

दुनिया का सबसे हल्का कागज़ उड़ सके -

बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके -

कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और

तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

क) पतंग कविता में लाल सवेरा को कैसा कहा गया है?*

1. कपास जैसा .2खरगोश की आँखों जैसा

.3 उजाला .4चमकीला

ख) कवि ने तेज़ बौछारों के जाने के साथ ही किस महीने के भी चले जाने की बात कही है?

1. सावन 2. आषाढ़ .3 भादो 4. अश्विन

ग) पतंग को दुनिया की सबसे रंगीन चीज़ क्यों कहा है ?

1. यह तितलियाँ के समान दिखाई देती हैं
2. यह रंग बिरंगे कागज़ से बनती है
3. सभी बच्चों के अपने रंग के पतंग होते हैं
4. रंगीन होने के कारण ही पतंग हवा में उड़ती है

घ) " शरद आया पुलों को पार करते हुएइस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार पहचानिए। - "

1. उपमा अलंकार 3. रूपक अलंकार
2. उत्प्रेक्षा अलंकार 4. मानवीकरण अलंकार

ङ) निम्नलिखित पंक्तियों में श्रव्य बिंब किसमें निहित है?

1. चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
2. घंटी बजाते हुए ज़ोर ज़ोर से

3. तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

4. आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए

उत्तर : क) 2 ख) 3 ग) 2 घ) 4 ङ) 2

क) *जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास*

पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बैचेन पैरों के पास

जब वे दौड़ते है बेसुध

छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास बच्चों की तुलना कपास से क्यों की गई है -"?

1. दोनों हल्के और प्रसन्नतादायक हैं 2. दोनों जिद्दी हैं

3. दोनों मनमानी करते रहते हैं 4. दोनों की अपनी अपनी इच्छाएँ होतीं हैं

ख) पृथ्वी बच्चों के बेचैन पैरों के पास कैसे आती हैं?

1. बच्चों की बेसुध दौड़ देखकर कवि को लगता है कि पृथ्वी अपना पूरा चक्कर लगाकर आ रही हो।
2. बच्चों की बेसुध दौड़ देखकर कवि को लगता है कि पृथ्वी में ऐसा कोई जगह नहीं है जहाँ इनका पैर न पड़ता हो।
3. बच्चों की बेसुध दौड़ देखकर कवि को लगता है कि पृथ्वी ने चक्कर लगाना बंद कर दिया हो ।
4. बच्चों की बेसुध दौड़ देखकर कवि को लगता है कि बच्चे पतंग लेकर पूरी पृथ्वी घूम आते हैं

ग) कवि के अनुसार बच्चे पतंगों के साथसाथ किस के सहारे उड़ रहे हैं-?

1. कल्पना के 2. तंतुओं के 3. धागे के 4. पतंगों के

घ) छतों को नरम बनाने से कवि का क्या आशय हैं?

1. छतों पर बार बार दौड़ने से छत कोमल और नरम बन जाता है
2. बच्चे छत पर बड़ी तेजी और बेफ़िक्री से दौड़ते फिर रहे हैं
3. बच्चे इतने बेसुध होकर दौड़ते हैं कि उन्हें छतों की कठोरता का एहसास नहीं होता
4. बच्चों को दौड़ने के लिए छतों पर नरम नरम वस्तुएँ बिछा दी जाती है

ङ) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए से क्या अर्थ बन पड़ता है ?

1. बच्चे पतंग उड़ाते हुए मृदंग भी बजाते हैं
2. बच्चों को पतंग उड़ाते देख गाँववाले मृदंग बजाते हैं
3. पतंग उडाते उडाते बच्चे थक जाते हैं और मृदंग बजाते हैं
4. बेसुध होकर पतंग उड़ाते बच्चों की पदचाप मृदंग के समान आवाज़ करती है

उत्तर : क) 1 ख) 2 ग) 1 घ) 3 ङ) 4

4. जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर
छतों के खतरनाक किनारों तक -
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती है महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रन्ध्रों के सहारे
अगर वे गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है
उनके बैचैन पैरों के पास।

क) डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
1. लचीले वेग के साथ इधरउधर डोलते हुए उसे अपनी मस्ती में दौड़े आते हैं-
2. बच्चे एक जगह से दौड़ लगा कर दूसरी जगह पहुँच जाते हैं
3. पेड की डाल अपने लचीलेपन के कारण पुनअपनी पहली वाली अवस्था में आ जाती हैं :
4. बच्चे किसी लचीली डाल को पकड़कर झूला झूलते हुए आगे पीछे हो रहे हों –

ख) पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती है महज़ एक धागे के सहारे आशय समझाइए । -
1. पतंग आकाश में उड़ती है, परंतु उसकी ऊँचाई का नियंत्रण बच्चों के हाथ की डोर में होता है
2. पतंग की बढ़ती ऊँचाई से बालमन और अधिक ऊँचा उड़ने लगता है
3. पतंग का धागा पतंग की ऊँचाई के साथसाथ बालमन को भी नियंत्रित करता है-
4. उड़ती पतंग ही बच्चे के मन में साहस और निडरता प्रदान करती है

ग) पतंगों के साथसाथ वे भी उड़ रहे हैं-' से आशय है-
1. पतंग के साथ बच्चे भी छतों पर डोलते हैं

2. बच्चों का मन भी पतंग के साथ उड़ान भरने लगता है

3. बच्चों को आकाश छू लेने का एहसास होने लगता है

4. बच्चे पतंग उड़ने पर प्रसन्न होते हैं

घ) पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है - ...'और भी' का प्रयोग किस कारण हुआ है ?

1. बच्चे छतों के खतरनाक किनारों से गिरा करते हैं

2. बच्चे खतरों का सामना करके और भी साहसी बनते हैं

3. पृथ्वी बहुत तेज़ घूमने लगती है

4. ऐसी कोई जगह नहीं रहती जहाँ बच्चों के पैर नहीं पहुँचते

ङ) निम्नलिखित में उपमा अलंकार किस पंक्ति में प्रयुक्त है?

1. पतंगों के साथ साथ वे भी उड़ रहे हैं

2. जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं

3. सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

4. डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर

उत्तर : क) 1 ख) 3 ग) 2 घ) 4 ङ) 4

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नअभ्यास-

प्रश्न 1. सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गयाके बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है ', उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर प्रकृति में परिवर्तन :निरंतर होता रहता है। जब तेज़ बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की बारिश भी चली गई। इसके बाद आश्विन का महीना शुरू हो जाता है। इस महीने में प्रकृति में अनेक परिवर्तन आते हैं । सुबह के सूरज की लालिमा बढ़ जाती है। सुबह के सूरज की लाली खरगोश कीआँखों जैसी दिखती है।शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। वर्षा समाप्त हो जाती है।प्रकृति खिलीखिली दिखाई देती है। आसमान नीला व साफ़ दिखाई देता है।-

प्रश्न 2.सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है?

उत्तरकवि ने पतंग के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है। पतंग का निर्माण रंगीन कागज़ से :

होता है। इंद्रधनुष के समान यह अनेक रंगों की होती है। इसका कागज़ इतना पतला होता है कि वह आकाश में आसानी से उड़ सके। पतंग के निर्माण में पतली सीबाँस कमानी के आकार में कागज़ से चिपकाई जाती है जिसे कवि ने सबसे पत्ली कमानी कहा है। कवि इनके माध्यम से बाल सुलभ चेष्टाओं का अंकन करता है।

प्रश्न 3. बिंब स्पष्ट करें -

सबसे तेज़ बौछारें गयीं भादो गया
सवेरा हुआ।
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए।
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोरजोर से-
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके।

उत्तरकवि ने इस कविता में दृश्य बिंब का सार्थक व स्वाभाविक प्रयोग किया है। उन्होंने बच्चों क :े भावानुरूप बिंब का प्रयोग किया है। पाठक भी कवि की संवेदनाओं को शीघ्र ग्रहण कर लेता है। इस अंश के निम्नलिखित बिंब हैं -

- खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा दृश्य बिंब-
- पुलों को पार करते हुए गतिशील बिंब -
- अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए गतिशील बिंब -
- घंटी बजाते हुए जोर श्रव्य बिंब - जोर से -
- चमकीले इशारों से बुलाते हुए गतिशील बिंब -
- आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए स्पर्श बिंब -
- पतंग ऊपर हठ सके गतिशील दृश्य बिंब -

प्रश्न 4. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास का कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों - क्या संबंध बन सकता है?

उत्तरकपास से बच्चों को गहरा संबंध है। दोनों में काफ़ी समानताएँ हैं। कपास जैसे सफ़ेद होती है :, वैसे ही बच्चे भी सफ़ेद अर्थात् गोरे होते हैं। कपास की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं। कपास

के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ। होती हैं। वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

प्रश्न 5. पतंगों के साथबच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है - साथ वे भी उड़ रहे हैं-?

उत्तरजिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उड़ती जाती है :, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं। पतंगों के साथ साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं अर्थात् उनके मन में नईनई इच्छाएँ - और उमंगें आती हैं। वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(अ(छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए ।

(ब(अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से और बच जाते हैं तब तो और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं।

1. दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?
2. जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है ?
3. खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर:

1. दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का तात्पर्य है कि जब बच्चे ऊँची पतंगें उड़ाते हैं तो वे बेसुध होकर छतों पर भागते हैं । उनके भागने के पदचाप सुनकर ऐसा प्रतीत होता है मानो दिशाएँ मृदंग बजा रही हैं।

2. जब पतंग सामने हो तो बच्चे बेसुध होकर छतों पर दौड़ते हैं और उनका सारा ध्यान पतंग पर केंद्रित होता है। इसलिए उन्हें छत की कठोरता का एहसास नहीं होता ।

3. यदि जीवन में खतरनाक परिस्थितियों का सामना कर लिया हो तो दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में कोई कठिनाई नहीं होती। खतरनाक परिस्थितियों के आगे दुनिया की चुनौतियाँ स्वयं ही छोटी पड़ जाती है।

कविता के बहाने

कुँवर नारायण -

कविता के बहाने कविता कवि की कविता संग्रह ' इन दिनों 'से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संदेह हो रहा है।यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा ।ऐसे में यह कविता कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है। यह कविता एक यात्रा है जो चिड़िया ,फूल से लेकर बच्चे तक की है।एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा ।कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है ,फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है लेकिन बच्चे की सपने असीम है ।बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नही होत। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़,चेतन ,अतीत, वर्तमान और भविष्य भी उपकरण मात्र है ।इसलिए जहां रचनात्मक ऊर्जा होगी वहां सीमाओं के बंधन टूट जाते हैं। चाहे घर की हो ,भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

** कविताओं पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए।

काव्यांश :1

कविता एक उडान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ?

प्रश्न.1चिड़िया अपने पंखों के सहारे उडती है और कविता किसके सहारे उड़ती है ?

कविचार .ख पंख . ,गशब्द .घ कल्पना .

प्रश्न .2कविता में चिड़िया का वर्णन करने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य होता है?

क)कल्पना करना ख)उड़ान भरना,

ग)अपने मन के भावों को व्यक्त करना घ)अलंकार का प्रयोग करना

प्रश्न .3कविता और चिड़िया की उड़ान में क्या अंतर है ?

(1चिड़िया दूर तक उड़ती है और कविता किताब के पन्नों तक

(2चिड़िया की उड़ान की एक सीमा होती है जबकि कविता की उड़ान असीम है

(3चिड़िया पंखों की सहारे उड़ती है और कविता कल्पना के सहारे

(4ख और ग दोनों

प्रश्न .4कविता की उड़ान को कौन नहीं समझ सकता?

क)पाठक ख)चिड़िया ग)कवि घ)आलोचक

प्रश्न मानता हैकविता के आधार पर बताइए कि कविता और चिड़िया में किस गुण की स 5?

(1दोनों पंख लगाकर उड सकते हैं (2दोनों ही उडान भर सकते हैं

(3दोनों कल्पना कर सकते हैं (4दोनों कविता लिख सकते हैं

काव्यांश : 2कविता एक खिलना है फूलों के बहाने

कविता का खिलना भला फूल क्या जाने

बाहर भीतर

इस घर उस घर

बिना मुरझाए महकने के माने

फूल क्या जाने

प्रश्न 1,कविता और फूल में क्या समानता होती है?

क)दोनों खिलते हैं और मुरझा जाते हैं

ख)दोनों ही खिलते और महकते हैं

ग)दोनों मन मे खुशी उत्पन्न करते हैं

घ)उपर्युक्त सभी

प्रश्न फूल की अंतिम परिणति क्या होगी 2?

क)खिलना ख)महकना ग)मुरझाना घ)ताजगी भरना

प्रश्न 3,बिना मुरझाए कौन महकती है ?

क)चिड़िया ख)बच्चे ग)फूल घ)कविता

प्रश्न 4, कविता बिना मुरझाये सदियों तक महकती रहती है इस कथन का क्या आशय होगा ?

(1कविता कालजयी होती है

(2कविता का प्रभाव सदियों तक बना रहता है

(3कविता का सौंदर्य कभी समाप्त नहीं होता

(4उपर्युक्त सभी

प्रश्न कविता और फूलों के महकने में क्या अंतर है 5?

क)फूलों की महक महसूस कर सकते हैं परंतु कविता की नही

ख)फूलों की महक सीमित होती है और कविता की असीम

ग)फूल कुछ समय के लिए महकते है और कविता क्भी भी नहीं

घ)ख और ग दोनों

काव्यांश :3कविता एक खेल है बच्चों के बहाने

बाहर भीतर

यह घर वह घर

सब घर एक कर देने के माने

बच्चा ही जाने।

प्रश्न कविताश के अनुसार कविता और बच्चों में क्या समानता होती है 1?

(1दोनों खिल सकते हैं

(2दोनों हँस सकते हैं

(3दोनों रो सकते हैं

(4दोनों खेल सकते हैं

प्रश्न2, बच्चों के खेल की क्या विशेषता होती है ?

(1वे खेलते समय लड़ते झगड़ते हैं

(2वे खेलते समय विभिन्न घरों का भेद भाव मिटा देते हैं

(3वे खेलते समय शैतानी करते हैं

(4उक्त सभी

प्रश्न 3 कविता किसके सहारे खिलती है?

1) खिलौने के 2) घरेलू सामान के 3) घरों के 4) शब्दों के

प्रश्न 4, मानव के बीच की दूरी कौन मिटा सकता है?

1) कविता 2) कविता और चिड़िया 3) फूल 4) बच्चे

प्रश्न 5, बिना मुरझाए महकने के माने इस पंक्ति में कौनसा अलंकार प्रयोग किया गया है?

1) यमक 2) उपमा 3) अनुप्रास 4) रूपक

कविता के आधार पर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए।

प्रश्न1 कविता के बहाने कविता के कवि कौन है?

क, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ख, कुंवर नारायण ग, जयशंकर प्रसाद घ, महादेवी वर्मा

प्रश्न कविता के बहाने कविता के अनुसार चिड़िया 2, फूल और बच्चे क्या है?

1. शब्द 2) भावना 3) अभिव्यक्ति के उपकरण 4) सभी उत्तर गलत है

प्रश्न कविता के बहाने कविता में किस के अस्तित्व पर विचार किया गया है 3?

1. प्रकृति 2) मनुष्य 3) कविता 4) उक्त सभी

प्रश्न 4 कविता के बहाने कविता में कविता की किन के साथ समानता असमानता बताई गई है ?

1) घर ,फूल, खेल 2) चिड़िया, खेल, बच्चे 3) चिड़िया ,फूल ,बच्चे 4) घर, चिड़िया, बच्चे

प्रश्न कविता के बहाने कविता के आधार पर बताइए कि प्रकृति 5 कवि के लिए क्या है?

(1साधन (2 उद्देश्य (3 शब्द (4वाक्य

प्रश्न कविता के अस्तित्व पर विचार करती हुई कविता के बहाने कविता क्या 6 निष्कर्ष प्रस्तुत करती है?

(1कविता के अस्तित्व पर आज गहरा संकट है (2अब कविता लिखना व्यर्थ हैं (3कविता कालजयी होती है (4 इसमें से कोई नहीं

प्रश्न -कविता पढ़ते और लिखते समय काल के बंधन टूट जाते हैं और बच्चों के खेलते समय 7

(1धर्म जाति के बंधन टूट जाते हैं (2भेदभाव के सभी बंधन टूट जाते हैं

(3संकीर्णता के बंधन टूट जाते हैं (4 क्त सभी विकल्प सही है

प्रश्न कविता किस के बहाने एक उड़ान है 8

(1फूलों के (2 चिड़ियों के (3बच्चों के (4मानव के

प्रश्न कविता के बहाने कविता कवि के किस कविता संग्रह से ली गई है 9

(1इन दिनों (2आजकल (3पर्दा (4शिथिल

<u>उत्तर संकेत</u>

काव्यांश 1

(1ग (2ग (3ख और ग दोनों (4ख (5ख

काव्यांश 2

(3ख (2ग (3घ (4घ (5ख और ग दोनों

काव्यांश 3

(1घ (2ख (3घ (4घ (5ग

कविता पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

1) ख 2) ग 3) ग 4) ग 5) क 6) ग 7) घ 8) ख 9) क

बात सीधी थी पर" - कुँवर नारायण

बात सीधी थी पर" के कवि कुँवर नारायण जी हैं । "बात सीधी थी पर" कविता को "कोई दूसरा नहीं" काव्य संग्रह से लिया गया है। इस कविता में किसी बात को कहने के लिए भाषा की सहजता व सरलता में जोर दिया गया हैं ताकि कविता या कथ्य के भाव व उद्देश्य श्रोता तक आसानी से पहुंच सके।

कवि कहते हैं कि हर बात को कहने के लिए कुछ खास एवं निश्चित शब्द होते हैं। अच्छी कविता या अच्छी बात तभी बनती हैं जब सही जगह पर सही भाषा या शब्दों का प्रयोग होता है। और जब ऐसा होता है तो बिना किसी अतिरिक्त मेहनत के वह बात खुद ब खुद बेतहतरीन बन जाती है। यानि कविता में भाव के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

कविता के आधार पर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्न-----

काव्यांश 1

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढ़ी फँस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोडा मरोडा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए-
लेकिन इससे भाषा के साथ साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

प्रश्न 1.. 'बात की पेंच खोलना' से कवि का क्या तात्पर्य है?

* बात का उलझना

बात का प्रभावहीन होना *
बात का स्पष्ट होना *
बात का तर्कपूर्ण होना *
प्रश्न 2 भाषा के साथथी साथ बात कैसी होती गई-?
सरल * दुष्कर * पेचीदा * बोध्गम्य *

प्रश्न 3. भाषा के क्या करने से बात और अधिक पेचीदा हो गई?
मरोड- तोडने *ने
पलटने- उलटने *
फिराने-घुमाने *
उपर्युक्त सभी *

प्रश्न 4. सीधी सी बात किस के चक्कर में फंस गई?
भाव के*
छन्द के *
अलंकार के *
भाषा के*

प्रश्न 5. कवि किसे पाने की कोशिश करता है?
बात को *
पेंच को *
कील को *
कलम को *
उत्तर बात का स्पष्ट-होना 2. पेचीदा 3.उपर्युक्त सभी. 4भाषा के . 5 बात को

काव्यांश 2
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तामशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह!
आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूडी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!

प्रश्न1 *बात की चूडी मर जाने से क्या तात्पर्य है ?*

- *चूडियां मरना * बात मरना * बात प्रभावहीन होना * भाषा की मृत्यु*

प्रश्न2 *गलत कामों पर किनकी शाबाशी मिलता है ?*

- *तमाशबीनों की * समर्थकों की * विपक्षियों की * पक्ष के लोगों की*

प्रश्न3 'भाषा का बेकार घूमना' क्या अर्थ है ?

- भाषा और जटिल होना *बात को स्पष्ट न कर पाना *भाषा निरर्थक होना* तीनों नहीं

प्रश्न4 कवि को किस बात का डर था ?

*बात की चूडी के मरने का * समर्थकों के विरोध का * तमाशबीनों की वाह वाही का

प्रश्न5 *क्योंकि इस करतब पर मुझे*

साफ सुनाई दे रही थी

तामशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह! -इससे कवि साहित्यकारों पर क्या व्यंग्य किया हैं?

- साहित्यकार समाज सुधारक है * साहित्यकार यश के भूखे होते है * साहित्यकार तमाशबीनों के नियंत्रण में है * इनमें से कुछ नहीं

उत्तर

1 *बात प्रभावहीन होना*

2 *तमाशबीनों की*

3 बात को स्पष्ट न कर पाना

4 बात की चूडी के मरने का

5. साहित्यकार यश के भूखे होते है

काव्यांश 3

हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जग ठोंक दिया।
ऊपर से ठीक ठाक
पर अंदर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत!
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा-
'क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?

प्रश्न 1. कवि से शरारती बच्चे के समान कौन खेल रही थी?

- बात * भाषा *कविता * पतंग

प्रश्न 2 ’क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ? किसने पूछा ?
* कवि * बात * भाषा* बच्चा
प्रश्न 3. . 'बात सीधी थी पर' में कवि ने किस पर बल दिया है?
भाषा की जटिलता* भावों की सरसता *
भाषा की सहजता * भावों की गरिमा *

प्रश्न 4 कील की तरह ठोंकने से क्या अभिप्राय है?

- अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग न करना
- भावहीन बनाना
- अस्पष्ट शब्दों से ज़बरदस्ती बात को उलझाना
- भाषा प्रयोग न करना

प्रश्न 5 कवि क्यों हार गए?

- कवि भाषा के साथ ज़बरदस्ती करना चाहा,इसलिए
- भाषा मर गयी,इसलिए
- काव्य लेखन अविरल करते रहने से
- बात शरारती थी,इसलिए

उत्तर

1.बात
2.बात
3.भाषा की सहजता
4.अस्पष्ट शब्दों से ज़बरदस्ती बात को उलझाना
5.कवि भाषा के साथ ज़बरदस्ती करना चाहा,इसलिए

कविता के बहाने ,बात सीधी थी -प्रश्नोत्तर

1. इस कविता के बहाने बताएं कि ‘सब घर एक कर देने के माने’ क्या है?

उत्तर: बच्चे धार्मिक, समाजिक,आर्थिक भेद्भाव से परे के हैं । सब घर उनके अपने घर हैं । कवि कुंवर नारायण सिंह कहते हैं कि जिस तरह बच्चे खेल में अपनी सीमा, अपने अंतर को भूल जाते हैं। ठीक उसी तरह अगर हम कविता को एक खेल के रूप में देखते हैं, तो कविता भी शब्दों का खेल है। असल में वही सच्चा साहित्यकार है,जो वसुधैवकुटुम्बकम की भावना से प्रेरित हो । कवि कहते हैं कि कवियों को लोकहित में कविता लिखनी चाहिए, कविता बनाते और लिखते समय अपने और वर्ग विशेष के भेद को भूल जाना चाहिए।

2.'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है.?

उत्तर: कवि की कल्पना और पक्षियों की उड़ान, दोनों की कोई सीमा नहीं है| दोनों बहुत दूर और ऊँचाई तक यात्रा करते हैं। जहाँ पक्षियों की उड़ान पंखों की उड़ान है, वहीं कवि की कविता कल्पना की उड़ान है, तो कहा जाता है कि "जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुंचे कवि।"जिस तरह फूल खिलते है और लोगों को खुशी देते हैं,उनकी सुंदरता और उनकी खुशबू के साथ उसी तरह कविता हमेशा अपने शब्दों और अभिव्यक्तियों के साथ खिलती हैं।

3. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर: बच्चे और कविता दोनों अपने स्वतंत्र स्वभाव के साथ खेलते हैं। खेल में उनके बीच कोई सीमा नहीं होती। उनके अपने लोगों के बीच कोई अंतर नहीं है, रंग और जाति से कोई नफरत नहीं है, बच्चे अपने बीच के सभी मतभेदों को भूल जाते हैं। जिस तरह एक शरारती बच्चा किसी की पकड़ में नहीं आता ठीक उसी प्रकार कविता में उलझा दी गई एक बात तमाम प्रयास के बावजूद समझने योग्य नहीं रह जाती। इसके लिए चाहे जितनी प्रयास किए जाये वे शरारती बच्चे की तरह हाथ से फिसल ही जाता है।

4. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने' के माने क्या होते हैं

उत्तर: कविता के संदर्भ में यह बात इसलिए की जाती है क्योंकि कविता फूलों की भांति सौन्दर्य, सुगंध और ताजगी दर्शाती है। परन्तु कविता फूलों से एक प्रकार से अलग है और वह है उम्र। सब फूल मुरझा जाते हैं जबकि कविता कालजयी है। इस प्रकार कविता बिना मुरझाए महकती रहती है।

5.' भाषा को सहूलियत से बरतने' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: भाषा को सहूलियत से बरतने का तात्पर्य यह है कि भाषा का उचित प्रयोग करना । भाषा अनगिनत शब्दों का संग्रह है। शब्दों के अर्थ प्रसंगों के अनुरूप होनी चाहिए । व्यर्थ का शब्द जाल बुनने से पाठक को समझने में कठिनाई होती है , इसलिए भाषा का प्रयोग सतर्कता से करना चाहिए। गलत शब्दों का प्रयोग भाषा को पेचीदा बना देता है। भाषा को सहूलियत से बरतने से ,सहजता से अर्थ सम्प्रेषण संभव है ।आलंकारिक या आडंबरपूर्ण भाषा से बचकर सरल,स्वाभाविक भाषा के प्रयोग की सीख ।

6. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है कैसे?

उत्तर: यह एक बहुत गहरी पंक्ति है और शाब्दिक रूप से सच है। यह बात और है कि बातचीत और भाषा आपस में जुड़ी हुई है। किसी से बात करते समय भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने शब्दों को दूसरे तक पहुंचाते हैं और उन्हें समझाते हैं। यदि यह नहीं है तो हम बात नहीं कर सकेंगे, और

संचार का ना होना यानी भाषा का भी न होना , अर्थात दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। आसानी से भाषा का उपयोग नहीं कर पाने की स्थिती में कई बार सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। क्योंकि हर शब्द की खासियत यह है कि उसका अपना अलग अर्थ होता है, भले ही वह किसी का पर्याय न लगता हो।

कैमरे में बंद अपाहिज

--रघुवीर सहाय

कविता का सारांश

कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से लिया गया है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है। किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए। आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहीन हो जाता है। यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है। साथ ही उन सभी व्यक्तियों की तरफ इशारा करती है जो दुख-दर्द, यातना-वेदना आदि को बेचना चाहते हैं।

इस कविता में दूरदर्शन के संचालक स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरे को कमजोर मानते हैं। वे विकलांग से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं? आप अपाहिज क्यों हैं? आपको इससे क्या दुख होता है? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है। प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है। इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है। प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जाग सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है, परंतु 'परदे पर वक्त की कीमत है' वाक्य से उसके व्यापार की प्रोल खुल जाती है।

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1) *हम दूरदर्शन पर बोलेंगे*
हम् समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में

उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा(बड़ा-
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या हैं
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा।

क) दूरदर्शन वाले अपने आप को समर्थ और शक्तिवान क्यों मानते हैं?

1. वे चारों ओर शक्तिशाली लोगों से घिरे रहते हैं
2. वे समझते हैं कि अपना अभिप्राय दूसरों तक पहुँचाकर वे जनता के अभिप्राय पर नियंत्रण रख सकते हैं
3. वे तंदुरुस्त होते हैं
4. वे खूब पैसेवाले होते हैं

ख) अपाहिज को दुर्बल क्यों कहा गया ?

1. क्योंकि अपाहिज लाचारी का भाव प्रदर्शित होता है
2. क्योंकि वह अपनी मर्जी से न कुछ बोल सकता है
3. क्योंकि उसे अपनी दुर्बलता को दिखाने की आदत है
4. क्योंकि अपाहिज केवल शारीरिक रूप से ही नहीं , मानसिक रूप से भी कमज़ोर होता है

ग)दूरदर्शन वाले एक अपंग को स्टुडियो में क्यों लाते हैं ?

1. वे अपाहिज व्यक्ति की वेदना को समाज के सामने लाना चाहते हैं
2. वे सामाजिक उद्देश्य से युक्त एक कार्यक्रम बनाते हैं
3. वे लोगों की सहानुभूति जगाकर अपना कार्यक्रम सफल बनाना चाहते हैं
4. उपरोक्त सभी उत्तर

घ)अपाहिज व्यक्ति से वेदनाजनक प्रश्न क्यों पूछे जाते हैं?

1. ताकि वह कैमरे के सामने रो पड़े
2. ताकि कैमरा चलाने वाले को सहानुभूति हो
3. ताकि लोगों को उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में पता चले
4. ताकि वह अपनी वेदना समझ सके

ङ) से संचालक का क्या उद्देश्य रहा होगा - "बड़ा-कैमरा दिखाओ इसे बड़ा "?

1. अपाहिज को अपंग होने का अहसास दिलाया जाता है

2. अपाहिज से सहानुभूति तथा करुणा दिखाई जाती है
3. अपाहिज की सुंदरता दर्शकों के सामने प्रस्तुत की जाती है
4. अपाहिज के प्रति दर्शकों की सहानुभूति जगाई जाती है

उत्तर : क) 2 ख) 4 ग) 3 घ) 1 ङ) 4

2) *सोचिए*
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता हैं
कैसा
यानी कैसा लगता हैं
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं
फिर हम परदे पर दिखलाएंगे
फूली हुई आँख की एक बडी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा हैं आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
दूरदर्शन वाले अपाहिज को क्या सोचकर बताने को कहते हैं?

1. उसके जीवन की उपलब्धियों का वर्णन करना
2. उसके जीवन के दुखों को बताना
3. उसे अपाहिज होकर कैसे लगता है
4. इनमें से कोई नहीं

क) 'हम पूछपूछकर उसको रुला देंगे-' - संचालक ऐसा क्यों करता है?
.1सब दर्शकों को अपाहिज द्वारा अपना दुःख दर्द बताने का सुनहरा मौका देने-

.2तकि अपाहिज अपनी पीड़ा खुलकर व्यक्त कर सके

3. अपाहिज को रोते हुए देखने में दूरदर्शन वालों को मज़ा आता है

.4अपाहिज को रोते देखकर दर्शक भी मानवीय संवेदना के कारण रोने लगें

ख) अपाहिज के होंठों पर कसमसाहट को दिखाने का उद्देश्य क्या है?

1. दर्शकों को साथ में रुलाना
2. दर्शकों तक उसकी पीड़ा को पहुँचाना
3. उसके होंठों की खूबसूरती दिखाना
4. उपरोक्त सभी

ग) कैमरे में बंद अपाहिज कविता में फूली हुई आँख का क्या अर्थ है ?

1. बीमारी के कारण आँख सूजना
2. चोट लगने के कारण आँख सूजना
3. रोने के कारण आँख सूजना
4. इनमें से कोई नहीं

उत्तर : क) 3 ख) 4 ग) 2 घ) 2

3. एक और कोशिश

दर्शक

धीरज रखिए

देखिए

हमें दोनों को एक संग रुलाने हैं

आप और वह दोनों

(कैमरा बस् करो नहीं हुआ

रहने दो

परदे पर वक्त की कीमत है)

अब मुसकुराएँगे हम

आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम

(बस थोड़ी ही कसर रह गई)

धन्यवाद!

क) " एक और कोशिशकैसी कोशिश के बारे में कहा जा रहा है -- "?

1. विज्ञापन द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने की कोशिश
2. उसके जीवन की उपलब्धियों का वर्णन करवाने की कोशिश
3. अपाहिज व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार व्यवहार करवाने की कोशिश
4. कैमरे वाले से वांछित व्यवहार की कोशिश

ख) दूरदर्शन वालों के अनुसार कार्यक्रम में क्या कमी रह गई ?

1. अपंग व्यक्ति और दर्शकों को रुलाने में थोड़ी देर हो गई
2. कार्यक्रम के बीच बिजली कट गई

3. अपाहिज के आँखों से आँसु बहने लगे
4. उपरोक्त सभी

ग) दूरदर्शन वाले इतने संवेदनहीन क्यों बन जाते हैं?
1. विज्ञापन देने का दबाव
2. कार्यक्रम को सफल बनाने का कारोबारी दबाव
3. उन्हें अपना पैसे का मूल्य चुकाना है
4. उपरोक्त सभी

घ) परदे पर वक्त की कीमत है पंक्यि में निहित व्यंग्य स्पष्ट करें। -
1. दूरदर्शन वालों को केवल अपने कार्यक्रम की सफलता से मतलब है
2. दूरदर्शन वालों को अपाहिज की मानसिक भावनाओं से कोई सरोकार नहीं
3. दूरदर्शन वालों को कार्यक्रम रंग बिरंगी बनाना है
4. उपरोक्त सभी

ङ) कविता में किस रस का प्रयोग हुआ है?
1. श्रंगार रस
2. करुण रस
3. शांत रस
4. वीभत्स रस

उत्तर : क) 3 ख) 1 ग) 2 घ) 4 ङ) 2

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1:कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्टकों में रखी गई हैं । आपकी समझ में इसका क्या औचित्य है?
उत्तर कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्टकों में रखी गई हैं -दूरदर्शन के स्टूडियो में निर्देशक और निर्माता जो निर्देश अपने कर्मचारियों को देते हैं, वे निर्देश दर्शकों तक नहीं पहुँचता । इन्हीं निर्देशों को कविता में कोष्टकों में रखी गई है । कविता में इसका महत्त्व यह है कि कविता के पाठक स्टुडियो में हो रही बातचीत और निर्देशक की मन की बात समझ सकते हैं। इन सभी पंक्तियों से यही अर्थ निकलता है कि मीडिया के लोगों के पास संवेदनाएँ नहीं हैं। यदि इन पंक्तियों को कवि नहीं लिखता तो कविता का मूलभाव स्पष्ट नहीं हो पाता।

प्रश्न 2: 'कैमरे में बंद अपाहिजविचार कीजिए।-की कविता हैं करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता'
उत्तर यह कविता अपनेपन की भावना में छिपी क्रूरता को व्यक्त करती है। सामाजिक -उद्देश्यों के नाम पर अपाहिज की पीड़ा को जनता तक पहुँचाया जाता है। यह कार्य ऊपर से करुण भाव को दर्शाता है परंतु

इसका वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होता है। संचालक अपाहिज की अपंगता बेचना चाहता है। वह एक रोचक कार्यक्रम बनाना चाहता है ताकि उसका कार्यक्रम जनता में लोकप्रिय हो सके। उसे अपंग की पीड़ा से कोई लेनादेना नहीं है। यह कविता यह बताती है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के - दबाव के कारण संवेदनशील होने का दिखावा करते हैं। इस तरह दिखावटी अधिकांश कार्यक्रम कारोबारी अपनेपन की भावना क्रूरता की सीमा तक पहुँच जाती है।

प्रश्न 3: "हम समर्थ श्यक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगेपंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया हैं?

उत्तर इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने यही व्यंग्य किया है कि मीडिया वाले समर्थ और शक्तिशाली - होते हैं।इतने शक्तिशाली कि वे किसी की करुणा को परदे पर दिखाकर पैसा कमा सकते हैं। क्योंकि उनकी पहुँच एक बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक रहती है, वे समझते हैं कि अपना अभिप्राय दूसरों तक पहुँचाकर वे जनता के अभिप्राय पर नियंत्रण रख सकते हैं । अपाहिज लोग पहले से ही दुर्बल होते हैं और काफ़ी वेदना को सहते हुए जीवन बिताते हैं । मीडिया वाले एक दुर्बल अर्थात् अपाहिज को लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं ताकि लोगों की सहानुभूति प्राप्त करके प्रसिद्धि पाई जा सके।

प्रश्न 4: यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शकदोनों एक साथ रोने लगेगे-, तो उससे प्रश्नकर्ता का कौनसा उद्देश्य पूरा होगा-?

उत्तर लोकप्रिय बनाना अपने कार्यक्रम को-संचालक व निर्माता का एक ही उद्देश्य होता है-कार्यक्रम - ताकि वह धन व प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। इस उपलब्धि के लिए उसे चाहे कोई भी तरीका क्यों न अपनाना पड़े, वह अपनाता है। प्रश्नकर्ता अपाहिज के दुख या उसकी दुर्बलता से किसी प्रकार की करुणा या सहानुभूति नहीं रखता। वह उसके व्यक्तित्व को अनदेखा करके केवल उसके अपाहिजपन का लाभ उठाना चाहता है क्योंकि वह किसी न किसी प्रकार अपने कार्यक्रम को सफल बनाना चाहता है। उसे केवल अपने पैसे का मूल्य चाहिए और कारोबारी दबाव के कारण वह संवेदनहीन हो जाता है।

प्रश्न 5: 'परदे पर वक्त की कीमत हैंकहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखाहैं?

उत्तर किसी कार्यक्रम के प्रसारण के लिए दूरदर्शन के चैनल वाले प्रायोजकों से प -्रति पल पैसे लेते हैं अर्थात चैनल पर प्रसारित हर पल दो हज़ार रुपए से लेकर दो लाख तक में बिकती है। इस तरह पर्दे पर हर पल कीमती रहता है । यही कारण है कि निर्माता और निर्देशक अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं । कार्यक्रम के सफल होते ही उस पर लगाया मूल्य चुकता है । इस भागदौड़ में कारोबारी दबाव के कारण कार्यक्रम से जुड़े हर व्यक्ति संवेदनहीन हो जाता है ।

❁❁❁❁❁❁

उषा

-शमशेर बहादुर सिंह

उषा कविता में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रात काल के समय आकाश मंडल में जो रंगों का जादू नजर आता है ,उसका सजीव चित्रण किया है। प्रात काल का आकाश नीले रंग का होता है। यह राख से लीप हुआ चौका सा लगता है, क्योंकि अभी उसमें नमी होती है। कभी यह काली सिल के समान प्रतीत होता है सूर्य की हल्की सी लालिमा लाल केसर की तरह इसे धो जाती है ।कभी-कभी ऐसा लगता है कि नीले जल में मानों किसी की देह झिलमिला रही हो। इस उषाकाल का जादू जब टूटता है तब सूर्योदय होता है। अर्थात प्रातकाल सूर्य की पूरी तरह उदित होने के पश्चात उषा कालीन जादू समाप्त सा हो जाता है।

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए- [1x5 = 5]

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने ।

प्रश्न-1.प्रातः कालीन नीला आकाश किसके जैसा बताया गया है

(i) केसर (ii) सिंदूर (iii) झील (iv) शंख

2.कवि ने राख से लीपा हुआ गीला चौका किसे कहा है?

(i) भोर के तारे को

(ii) भोर के नभ को

(iii) भोर की वायु को

(iv) भोर की किरण को

3. बहुत काली सिल किस लाल से धुली हुई लगती है?

(i) गुलाब

(ii) कमल

(iv) सिंदूर

(iii) केसर

4. अभी गीला पड़ा है - क्या सूचित करता है ?

(i) निर्मलता

(ii) सुन्दरता

(iii) नमी

(iv) कोमलता

5.काव्यांश में कौन सा परिवेश दिखाया गया है

(i) शहरी

(Ii)ग्रामीण

(iii) कार्यालयी

(iv) समुद्री

उत्तर-

1. (ii) सिंदूर

2. (ii) भोर के नभ को

3. (iii) केसर

4. (iv) नमी

5. (ii)ग्रामीण

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्न</u>

प्रश्न 1. 'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों?

उत्तर- कविता में भोर के नभ की तुलना, राख से लीपे हुए चौके से जो अभी गीला पड़ा है, बहुत काली सिल से जो मानो लाल केसर से थोड़ी-सी धुल गई है या ऐसी स्लेट से जिस पर किसी ने लाल खड़िया चाक मल दी है, से की गई है।

प्रश्न 2.'काली सिल पर लाल केसर' मलने से किस दृश्य का चित्रण होता है?

उत्तर - 'काली सिल पर लाल केसर' मलने से सूर्योदय के पहले का दृश्य सामने आ जाता है, जब रात का अंधकार गायब हो रहा है तथा सूर्य की लालिमा धीरे-धीरे क्षितिज पर अपना प्रकाश फैलाता है।

3."नीलजल में या किसी का गौर देह झिलमिलाता" - प्रयोग किस दृश्य के लिए किया है?

उत्तर: इस दृश्य विम्ब में नीला जल नीले आकाश का प्रतीक है। आकाश में सूर्योदय से पूर्व का हलका प्रकाश गोरे शरीर द्वारा व्यक्त किया गया है। सुबह-सुबह नदी या तालाब के नीले जल में स्नान करनेवाले व्यक्ति का झिलमिलाता शरीर बताकर इस विम्ब द्वारा सूर्योदय पूर्व के आकाश को प्रस्तुत कर रहा है।

4) उषा का जादू स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:उषाकाल के समय आकाश में नीला और काला रंग छाया हुआ था और फिर मनमोहक लालिमा छाई हुई थी। ज्ये-ज्यों सूर्योदय का समय निकट आ रहा था, आकाश का रूप पल-पल में बदल रहा था। लाल से पीला हुआ और फिर सूर्य का उदय होते ही आकाश में श्वेत प्रकाश छा गयी। सूर्य के इस प्रखर प्रकाश में उषाकाल का जादुई सौन्दर्य भी अदृश्य हो गया। इस प्रकार उषा का जादू टूट गया।

5."शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' नवीन बिम्बों व उपमानों का जीवंत दस्तावेज है-"सिद्द करें

उत्तर- 'उषा' एक प्रयोगधर्मी कवि की रचना है। कवि ने इसमें सूर्योदय के पहले के भोर के पल-पल परिवर्तित सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को विभिन्न उपमानों, बिम्बों तथा प्रतीकों का सहारा लेकर प्रकट किया है। आसमानी गतिविधि को ग्रामीण परिवेश में रोजमर्रे की जिंदगी से जोड़ा गया है। कवि ने 'राख से लीपा हुआ चौका' जो अभी गीला पड़ा है, 'लाल केसर से धुली काली सिल' तथा 'लाल खड़िया चाक मली हुई स्लेट' आदि बिम्बों और उपमानों के द्वारा भोर के सौन्दर्य को सजीव कर दिया है।

6 .स्लेट पर लाल खड़िया चाक मलने से क्या अभिप्राय है ?

काली स्लेट पर लाल खड़िया चाक मिट्टी को लीपने से वह गीली होती है और उसका रंग भोरकालीन

आकाश पर सूरज की लाली पड़ने जैसा होता है। रूप, रंग और वातावरण की समानता के कारण ऐसा कहा गया है।

बादल राग

- निराला

. 1निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प द्वारा दीजिए-

बार बार गर्जन-
वर्षं है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार ,
सुन| हुंकार-सुन घोर वज्र-
अशनि, शत वीर-पात से शापित उन्नत शत-
क्षत, शरीर-विक्षत हत अचल-
गगनस्पर्शी स्पर्द्धा- धीर |
हँसते है छोटे पौधे लघु भार
शस्य अपार
हिल हिल -, खिल खिल -
हाथ हिलाते
तुझे बुलाते ,
विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते -|

i) बादलों के गर्जन और घनघोर वर्षा से संसार पर क्या प्रभाव पड़ता है?
क) लोग बहुत आनंदित होते है
ख) लोग डर के मारे अपना हृदय थाम लेते हैं
ग) संसार में प्रलय आ जाता है
घ) संसार में क्रांति का आह्वान होता है
ii) अशनि-पात से किस पर विपरीत प्रभाव पड़ता है?
क) छोटे पौधों पर ख) लघुभार वाले शस्यों पर
ग कृषकों पर (विशाल आकार वाले पर्वत पर घ(
iii ?सा कथन सही नहीं है-छोटे पौधों के बारे में कौन (
क) वे गर्जन करते हैं ख) वे लघुभार के होते हैं
ग वे बादल को देखकर हँसते हैं (घ वे संख्या में अपार होते हैं(
iv पद्यांश में शोषित वर्गों का (प्रतीक कौन है?

क) बादल ख) अचल-शरीर ग) गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा धीर घ) छोटे पौधे

v ?सा प्रयोग धनी एवं पूँजीपतियों की ओर संकेत करता है-पद्यांश में कौन (

क स्पर्शी-गगन (स्पर्द्धा धीर ख छोटे पौधे लघुभार (

गहुं-घोर वज्र (शस्य अपार ग (कार

(2 अट्टालिका नहीं है रे

आतंक भवन -

सदा पंक पर ही होता

जल प्लावन- विप्लव-,

क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से

सदा छलक़ता नीर

रोग शोक में भी हँसता है-

शैशव का सुकुमार शरीर ।

i ('आतंक भवन -' किसे कहा गया है?

क) जल-प्लावन को ख) अट्टालिकाओं को

ग) विप्लव को घ) रोग-शोक को

ii ?प्लावन के तल में हमेशा क्या मिलता है-जल (

क विप्लव(जलज घ (कीचड़ ग (अट्टालिका ख (

iii ?यहाँ शैशव का उल्लेख क्यों किया गया है (

क) सुकुमार शरीर के उदाहरण देने केलिए

ख) जल-प्लावन से डरने के उदाहरण देने के लिए

ग) रोग-शोक के बावजूद प्रसन्न रहने वाले दलित वर्ग की ओर संकेत करने के लिए

घ) रोग से पीड़ित बच्चों की ओर संकेत करने के लिए

ivप्लावन से तात-जल(ंपर्य है -

क) बारिश ख) तालाब ग) बादल घ) बाढ़

v' (जलज - का समानार्थी शब्द है '

क) कमल ख) बादल ग) मछली घ) पानी

. 3रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष

अंगनालिपटे भी अंग से-
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी,वज्र गर्जन से-बादल!
त्रस्त नयन मुख ढाँप रहे हैं।-
जीर्ण बाहु है, शीर्ण शारीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार
हाड़मात्र ही है आधार-,
ऐ जीवन के पारावार!
i.('विप्लव के वीर' किसे कहा गया है?
क धनियों (बादल को ख (को ग आतंक को (कृषकों को घ (
ii?कवि के अनुसार कृषक की दशा कैसी हो गई है .(
क) शीर्ण शरीर वाले ख) उसका सार चूस लिया गया है
ग सभी विकल्प सही है(वह हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया है घ (
iii?के पारावार संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया गया है जीवन(
क) किसानों के लिए ख) बादल के लिए
ग विप्लव के लिए (धनियों के लिए घ(
iv ?मुख ढाँपते हैं-गर्जन से त्रस्त होकर कौन अपने नयन-वज्र(
क) धनी ख) बादल ग) कृषक घ) अंगना
v' (धनी लोगों ने औरों को धन से वंचित कर वह धन अपने लिए सुरक्षित रखा है -"कौनसा प्रयोग इस -
?भाव को स्पष्ट करता है
क जीवन के पारावार (रुद्ध कोष घ (क्षुब्ध तोष ग (गर्जन ख-वज्र(

उत्तर -
.1i(ख (लोग डर के मारे अपना हृदय थाम लेते हैं
ii (ग विशाल आकार वाले पर्वत पर(
iiiवे गर्जन करते हैं .क(
ivछोटे पौधे (घ(
v स्पर्शी स्पर्द्धा धीर-गगन (क(

2 .i (खअट्टालिकाओं को (
iiकीचड़ (ख(
iii) ग . रोग-शोक के बावजूद प्रसन्न रहने वाले दलित वर्ग की ओर संकेत करने के लिए
iv) घ) बाढ़
v) क) कमल

.3iबादल को (क (

iiसभी विकल्प सही है(घ (

iii बादल के लिए (ख (

iv(क (धनी

v (ग रुद्ध कोष (

(गशोषकों के लिए .('रुद्ध कोष' और 'क्षुब्ध तोष' जैसे विशेषणों का औचित्य समझाइए।

(घधनी .('अंगनाअंग से लिपटे-' हुए भी आतंकित क्यों हैं?

<u>प्रश्नोत्तर 2)अंक(</u>

1 बादल और बादल राग के प्रतीक को स्पष्ट कीजिए -

उत्तरबादल को कवि एक विल्पव के नायक का रूप दे रहा है और -: बादल राग को नेता का गर्जन अथवा क्रांति का आह्वान ।

2. 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' " .2| आशय स्पष्ट कीजिए -अस्थिर सुख पर दुख की छायाकी " कल्पना को स्पष्ट कीजिए-

सुख अत्थिर है जिसपर हमेशा दुख छाया रहता है । उसी प्रकार दुनिया के कष्ट भोगनेवाली जनता के : मन में हमेशा विल्पव की चिंता बनी रहती है ।

3. अट्टालिकाओं को आतंक भवन कहने के पीछे कवि का क्या आशय है? .3 अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है-

धनिकों के आडम्बरपूर्ण महल असल में आतंक भवन है ।वहाँ जीने वाले हमेशा डरतेइन /डरते जीते हैं- सुविधा भोगी वर्ग से कभी भी कष्ट नहीं सहा जाएगा ।

4 . बादल की युद्ध नौका किस से भरी है

उत्तरके उर में सोये हुए अंकुरों की आशाओं और आका बादल की युद्ध नौका पृथ्वी -:ंक्षाओं से भरी है। क्योंकि बादल के बरसने से उन्हे नवजीवन मिलेगा ।

.5 विप्लव के वीर किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर-: विप्लव के वीर बादलों को कहा गया है क्योंकि बादल क्रांतिवीर के समान प्रकृति में एवं किसान और आम आदमी के जीवन में आनंद का उपहार ले कर आता है|

<u>प्रश्नोत्तर 3)अंक (</u>

1) बदल के गर्जन और विप्लवी नेता द्वारा क्रांति का आह्वान- इन में कौन-सी समानता बिठाई गई है ?

उत्तरबार मेघ गर्जन होने के तुरंत बाद मूसलधार वर्षा होती है जिसे देखकर संसार ह्मदय धाम -बार -: लेता है। उसी प्रकार क्रांतिकारि नेताके द्वारा पहले क्रांति का आह्वान दिया जाता है और फिर क्रांति साकार रूप धारण कर लेती है जिस से धनी वर्ग डर जाता है।

2) बादल - गर्जन से छोटे पौधों पर और क्रांतिकारी नेता के आहवान से श्रमिक वर्ग पर क्या असर होता है ?

बादल गर्जन से छोटे छोटे पैधे हिल हिल कर ख -िल खिलकर हाथ हिलाकर बादल को बुलाते हैं। क्योंकि बारिश उनके जीवन में परिवर्तन और उन्नति लाएगा । उसी प्रकार मज़दूर और श्रमिक वर्ग क्रांतिकारी नेता के आहवान से खुश हो जाते हैं क्योंकि क्रांति उनके जीवन में परिवर्तन लाएगी।

3. कविता में क्षुब्ध तोष किस बात की ओर संकेत करता है-स्पष्ट कीजिए -

शोषक वर्ग के संतोष को क्षुब्ध तोष कह सकते हैं क्योकि गरीबों के शोषण द्वारा इकट्टे किए गए (धनी) संतोष बनाते हैं। शोषण से भरे कोष से ज़रा भी उन बेचारों को देने के लिए यों शोषक धन से वे अपना तैयार नहीं थे । उनका कोष रुद्ध कोष है।इसलिए ही इससे प्राप्त संतोष शोषकों के लिए क्षुब्ध तोष हैं/

.4 अंगना अंग से लिपटे भी-

आतंक अंक पर काँप रहे हैं।

धनी,वज्र - !दलगर्जन से बा-इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

उत्तरगरीबों के शोषण करने में -:, अनके प्रयत्न का फल अपनाने में, सुख सुविधा और आडंबरों के साथ जीने में बदचलन और बदमाशी करने में शोषक वर्ग को ज़रा भी हिचक नहीं होती। वे गरीबों का सार चूस लेते हैं उन्हें हड्डी मात्र बनाकर छोड देते हैं । लेकिन आतंक या क्रांति का नाम सुनते ही वे डर जाते हैं और अपने डरा हुआ चेहरा दूसरों से छुपा लेते हैं।

5 . जीर्ण शीर्ण बने हुए शरीर से कौन बादल को बुलाते है-? और क्यों ? यहाँ के प्रतीक को स्पष्ट कीजिए -

उत्तरहिलाते कृषक और मज़दूर लोग अधीर - शीर्ण बने हुए शरीर एवं हाथ फैलाते - ण से जीर्णशोष -: होकर हे बादल, विप्लव के वीर तुझे बूला !रहे हैं। तू ही उनके जीवन में उन्नति और परिवर्तन ला सकता है। किसान के जीवन का रस शोषकों ने चूस लिया है ,आशा और उत्साह की संजीवनी समाप्त हो चुकी है |शरीर से भी वह दुर्बल एवं खोखला हो चुका है | इस के लिए समाज पूंजीपति वर्ग ज़िम्मेदार है |

****

कवितावली

-गोस्वामी तुलसीदास

(क) कवितावली (उत्तरकांड से)

1. किसबी---------आगि पेटकी।।

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने समय के समाज के बारे में बताते हुए कह रहे हैं कि मजदूर, किसान-वर्ग, व्यापारी, भिखारी ,नाचने गाने वाले लोग ,नौकर, अभिनेता,(चपल नट) चोर, दूत, जादूगर ये सभी लोग अपने पेट की आग बुझाने के लिए विभिन्न तरह के कार्य करते हैं अनेक तरह के हुनर सीखते हैं । कोई शिकार करने के लिए घने जंगलों में भटकते फिरते हैं। कोई पर्वतों पर आजीविका खोजते है।लोग अपना पेट भरने के लिए ही ऊंचे -नीचे कर्म कर रहे हैं। बिना सोचे विचारे धर्म -अधर्म हर तरह का कार्य करते हैं। यहां तक कि लोग अपने पेट की आग बुझाने के लिए अपने बेटे और बेटी तक को बेच देते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि केवल श्री राम रूपी बादल हीअपनी कृपा रूपी जल से लोगों के पेट की आग बुझा सकते हैं यानी राम की कृपा प्राप्त होने से ही लोगों की गरीबी दूर हो सकती है।

तुलसीदास जी आगे कहते हैं कि मनुष्य के पेट की आग समुद्र की आग(बडवाग्नि) से भी बड़ी होती है और भगवान राम ही इस आग को बुझा सकते हैं यानी लोगों का दुख दूर कर सकते हैं।

कवि ने बताया है कि संसार के अच्छे-बुरे समस्त लीला-प्रपंचों का आधार 'पेट की आग' का दारुण व गहन यथार्थ है, जिसका समाधान वे राम-रूपी घनश्याम के कृपा-जल में देखते हैं। उनकी रामभक्ति पेट की आग बुझाने वाली यानी जीवन के यथार्थ संकटों का समाधान करने वाली है, साथ ही जीवन में बाह्य आध्यात्मिक मुक्ति देने वाली भी है। कवि ने पेट की आग को सबसे बड़ा बताया है। मनुष्य सारे काम इसी आग को बुझाने के उद्देश्य से करते हैं चाहे वह व्यापार, खेती, नौकरी, नाच-गाना, चोरी, गुप्तचरी, सेवा-टहल, गुणगान, शिकार करना या जंगलों में घूमना हो। इस पेट की आग को बुझाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। यह पेट की आग समुद्र की बड़वानल से भी बड़ी है। अब केवल रामरूपी घनश्याम ही इस आग को बुझा सकते हैं।

<u>काव्य सौंदर्य</u>

1. इस काव्यांश में कवित्त छंद है।
2. ब्रजभाषा
3. अनुप्रास अलंकार- किसबी- किसान कुल,पेटको पढत , गुढत- चढत, गहन-गन-अहन, करम -धरम अधरम , चाकर - चपल , चोर -चार , बेचत बेटा-बेटकी।
4. राम -घनश्याम में रूपक अलंकार।
5. "आग बडवागितें " में अतिशयोक्ति अलंकार।

6. भक्ति रस की प्रधानता।

2. खेती न किसान को ---------- हहा करी।।

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने समय की अर्थव्यवस्था की जानकारी देते हुए कह रहे हैं कि किसान खेती नहीं कर पा रहा है, भिखारी को भीख नहीं मिल रही है, ब्राह्मण को दक्षिणा (बली) नहीं मिल रही है ।व्यापारी अपना व्यापार करने में असमर्थ हैं और न नौकर को नौकरी मिल रही है। समाज में चारों ओर बेरोजगारी ही बेरोजगारी है। सभी आजीविका विहीन लोग सोच में पड़ रहे हैं और एक दूसरे से पूछ रहे हैं कि अब हम कहां जाएं, क्या करें।

तुलसीदास जी आगे कहते हैं कि चारों वेदों और आठों पुराणों में कहा गया है और इस संसार में देखा भी गया है कि जब भी सब पर संकट आता है तो सिर्फ श्रीराम ही उसे दूर करते हैं। दरिद्रता रूपी रावण (दसानन) ने इस दुनिया के लोगों को अपनी पूरी ताकत से दबा रखा है। संसार की इस गरीबी को देखकर तुलसी का मन हाहाकार कर उठता है। वे कहते हैं कि हे! प्रभु ,अब आप ही इस दुखी संसार का उद्धार करें ।

कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वे राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।

<u>काव्य सौंदर्य</u>

1.कवित्त छंद ।

2. ब्रज भाषा का प्रयोग है।

3. पूरे काव्यांश में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

4. "दारिद दसानन " में रूपक अलंकार।

5. भक्ति रस की प्रधानता।

3.धूत कहौ, अवधूत कहौ-------ना देबे को दोऊ।

तुलसीदास जी अपने बारे में बताते हुए कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे या महात्मा, चाहे ऊंची जाति का क्षत्रिय (राजपूत) है या नीची जाति का जुलाहा मुझे उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता है । तुलसीदास जी कहते हैं कि मुझे किसी की बेटी से अपने बेटे की शादी नहीं करानी है और न ही मुझे किसी से रिश्ता बनाकर उसकी जाति को बिगाड़ना है।

तुलसीदास जी आगे कहते हैं कि यह तो जगत में प्रसिद्ध है कि मैं श्री राम का भक्त व एक संत हूं और मेरी कोई जाति नहीं है ।इसलिए जिसे जो अच्छा लगे वह कहें । मैं तो भीख मांग कर खाता हूं और मंदिर में सोता हूं । मुझे किसी से न कुछ लेना है और न किसी को कुछ देना है।

कवि ने भक्त की गहनता और सघनता में उपजे भक्त-हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया है। वे कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, अवधूत या जोगी कहे, कोई राजपूत या जुलाहा कहे, किंतु मैं किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करने वाला और न किसी की जाति बिगाड़ने वाला हूँ। मैं तो केवल अपने प्रभु राम का गुलाम हूँ। जिसे जो अच्छा लगे, वही कहे। मैं माँगकर खा सकता हूँ तथा

मस्जिद में सो सकता हूँ किंतु मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सब प्रकार से भगवान राम को समर्पित हूँ।

1. इस काव्यांश मैं सवैया छंद है ।
2. ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग है ।
3.बेटीसों -बेटा, कहौ कोऊ में अनुप्रास अलंकार है।
4. "लेना एक न देना दो " मुहावरे का प्रयोग है।

<u>कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर</u>

1. तुलसी का युग भी बेरोजगारी और बेकारी से ग्रस्त था - सिद्ध कीजिए।

उत्तर:- तुलसी के समय का समाज भी बेरोजगारी से मुक्त नहीं था। तुलसी ने तत्काल समाज की गरीबी का यथार्थ चित्रण किया है। किसान न खेती कर पा रहा था, न भिखारी को भीख मिलती थी। न व्यापारी का व्यापार चल रहा था न कोई नौकरियां उपलब्ध थी।उनके समय में भी दरिद्रता रूपी रावण ने दुनिया को इस प्रकार दबा लिया था कि सभी त्राहि-त्राहि कर उठे थे।

2."काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब ' के द्वारा तुलसीदास समाज के लोगों से क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर:- तुलसीदास के युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर थे । वे कहते हैं कि उन्हें अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से नहीं करनी। इससे किसी की जाति कर खराब नहीं होगी क्योंकि लड़की वाला अपनी जाति के वर ढूंढता है । पुरुष प्रधान समाज में लड़की की जाति विवाह के बाद बदल जाती है। वे जाति संबंधी किसी पछडे में नहीं पड़ना चाहते।

3. पेट की आग से क्या तात्पर्य है?पेट की आग को कैसे शांत किया जा सकता है?

उत्तर:-पेट की आग का तात्पर्य है -भूख।पेट की आग भगवान राम की कृपा के बिना नहीं बुझ सकती। अर्थात राम की कृपा ही वह जल है, जिससे इस आग का शमन हो सकता है।

4. किस किस वर्ग के लोग पेट पूर्ति के लिए मारे मारे फिर रहे हैं?

उत्तर:- मेहनतकश मजदूर ,किसान, व्यापारी, भिखारी, भाट ,नौकर-चाकर ,कलाकार, चोर , संदेशवाहक, बाजीगर, विद्यार्थी, शिकारी, शिल्पकार सभी पेट भरने की चाह में मारे मारे फिर रहे हैं।

5. श्री राम के प्रति तुलसीदास की भक्ति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-श्री राम के प्रति तुलसीदास की अगाध श्रद्धा थी। हर समस्या का समाधान श्री रामचंद्र जी के चरणो में पाते थे। जीवन की विषम परिस्थितियों में भी राम को ही सहायक मानते हैं।

6. वेद और पुराणों में क्या कहा गया है?

उत्तर:- चारों वेदों और आठों पुराणों में कहा गया है और इस संसार में देखा भी गया है कि जब भी सब पर संकट छा जाता है तब सिर्फ राम ही उसे दूर करते हैं।

7. किसबी , किसान कुल–––––––––आगि पेटकी - भाव सौंदर्य एवं शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- पद्यांश में समाज में भूख की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। पेट की आग बुझाने के लिए मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कार्यों का प्रभाव पूर्ण वर्णन है। तत्कालीन समाज के बेरोजगारी व आकाल की भयावह स्थिति का चित्रण है। तत्सम शब्दावली की प्रधानता है। ब्रजभाषा का लालित्य विद्यमान है। राम घनश्याम में रूपक अलंकार है। किसबी-किसान कुल, चाकर -चपल, बेचते बेटा बेटकी आदि में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय हैं। अभिधा शब्द शक्ति है।

8. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए- "धूत कहौ, अवधूत कहौ------ न दैबको दोऊ।"

उत्तर :- भगवान श्री राम के प्रति तुलसीदास की भक्ति भावना प्रकट हुई है। वे समाज की मनोवृत्ति से बहुत दुखी है । समाज में समन्वय स्थापित करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। कवि का दास्य भक्तिभाव चित्रित है। ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग है । सवैया छंद में सुंदर अभिव्यक्ति हुई है । 'लैबोको एकु न दैबेको दोऊ' मुहावरे का सशक्त प्रयोग है । अनुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है।

<u>बहुविकल्पी प्रश्न</u>

<u>1. किसबी---------आगि पेटकी।।</u>

1. संसार के सभी लोग तरह तरह के काम किस लिए करते हैं?

क) मनोरंजन करने के लिए

ख) पेट की भूख शांत करने के लिए

ग) शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए

घ) दूसरों से आगे बढ़ने के लिए

2. तुलसीदास के अनुसार 'पेट की आग ' कैसे बुझाई जा सकती हैं?

क) राजा की कृपा से

ख) राम की कृपा रुपी जल से

ग) बारिश से

घ) भोजन से

3. लोग ऊंचे- नीचे कर्म करने और बेटा बेटी तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। क्यों?

क). पेट की भूख को शांत करने के लिए

ख). मौज मस्ती के लिए

ग). स्वतंत्र होकर घूमने के लिए

घ) उपयुक्त कोई नहीं

4.. पेट की आग बडवाग्नि से भी बड़ी है क्योंकि

क) पेट की आग बुझाने के लिए ही मनुष्य सभी प्रकार के कर्म करता है

ख) समुद्र में भी आग लगती हैं

ग) पेट की आग बड़ी भयंकर व कष्टकारी होती है

5. राम- घनश्याम में कौन सा अलंकार है?

क) अनुप्रास

ख) अतिशयोक्ति

ग) यमक

घ) रूपक

II . खेती न किसान को ---------- हहा करी।।

1 .लोग क्यों चिंता में डूबे हुए हैं?

क) वे आजीविका से विहीन है

ख) अत्यधिक बारिश के कारण परेशान है

ग) भयावह बीमारी से त्रस्त है

घ) उपर्युक्त सभी

2. गरीबी की तुलना रावण से क्यों की गई है?

क) रावण ने सीता का हरण किया

ख) रावण के अत्याचार से सब ओर त्राहि-त्राहि मच गई थी

ग) लंका निवासी गरीबी से परेशान थे

घ) उपयुक्त कोई नहीं

3. पद्यांश के अनुसार वेदों और पुराणों में क्या कहा गया है?

क) पूजा पाठ करना

ख) साधु संतों का आदर करना

ग) तीर्थ यात्रा करना

घ) राम की कृपा से ही संकट टल जाता है

4.'दारिद-दसानन ' में प्रयुक्त अलंकार है-

क) अनुप्रास

ख) रूपक

ग) यमक

घ) अतिशयोक्ति

5. कवितावली की भाषा है-

क) ब्रजभाषा

ख) अवधी

ग) भोजपुरी

घ) खड़ीबोली

III धूत कहौ, अवधूत कहौ-------ना देबे को दोऊ।

1.निम्न में से भक्त कवि तुलसीदास का स्वाभिमान है

क) ऊंचे कुल का होना

ख) भीख मांग कर भोजन करना

ग) प्रभु श्री राम का परम भक्त होना

घ) उच्च कुल में बेटे की शादी करना

2. तुलसी सरनाम गुलामु है राम को -के अनुसार तुलसी के भक्ति भाव का स्वरूप है-

क) साख्य भक्ति ख) दास्य भक्ति

ग) निर्गुण भक्ति घ) उपर्युक्त सभी

3. काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ - तुलसीदास ने ऐसा क्यों कहा?

क) समाज में जाति की कट्टरता थी

ख) लोगों को अपनी जाति बिगड़ने का भय नहीं था

ग) तुलसीदास को अपनी जाति बिगड़ने का भय नहीं था

घ) 'क' और 'ग '

4. तुलसीदास के द्वारा 'मसीत' में सोने का निहितार्थ है -

क) मस्जिद

ख) मन्दिर

ग) गुरुद्वारा

घ) जहां जगह मिलती है वही सोना अर्थात संसार से कुछ लेना देना नहीं।

5. काव्यांश का छंद बताइए-

क) कवित्त ख) सवैया

ग) दोहा घ) चौपाई

उत्तर संकेत:-

I.1.ख) पेट की भूख शांत करने के लिए

2.ख) राम की कृपा रुपी जल से

3.क). पेट की भूख को शांत करने के लिए

4..ग) पेट की आग बड़ी भयंकर व कष्टकारी होती है

5. घ) रूपक

II .

1 .क) वे आजीविका से विहीन है

2. ख) रावण के अत्याचार से सब ओर त्राहि-त्राहि मच गई थी

3. घ) राम की कृपा से संकट टल जाता है

4ख) रूपक

5. क) ब्रजभाषा

III 1.ग) प्रभु श्री राम का परम भक्त होना

2 ख) दास्य भक्ति

3. घ) 'क' और 'ग '

4. घ) जहां जगह मिलती है वहीं सोना अर्थात संसार से कुछ लेना देना नहीं।

5. ख) सवैया

लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप

तुलसीदास

युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम की सेना में हाहाकार मच गया। सब वानर सेनापति इकट्ठे हुए तथा लक्ष्मण को बचाने के उपाय सोचने लगे। सुषेण वैद्य के परामर्श पर हनुमान हिमालय से संजीवनी बूटी लाने के लिए चल पड़े। लक्ष्मण को गोद में लिटाकर राम व्याकुलता से हनुमान की प्रतीक्षा करने लगे। आधी रात बीत जाने के बाद राम अत्यधिक व्याकुल हो गए। वे विलाप करने लगे कि तुम मुझे कभी भी दुखी नहीं देख पाते थे। मेरे लिए ही तुमने वनवास स्वीकार किया। अब वह प्रेम मुझसे कौन करेगा? यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पता होता तो मैं पिता की आज्ञा मानने से इन्कार कर देता। संसार में सब कुछ दुबारा मिल सकता है, परंतु सहोदर भाई नहीं। तुम्हारे बिना मेरा जीवन पंखरहित पक्षी के समान है। अयोध्या जाकर मैं क्या जवाब दूँगा? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को गंवा आया। तुम्हारी माँ को मैं क्या जवाब दूँगा? तभी हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए। वैद्य ने दवा बनाकर लक्ष्मण को पिलाई और उनकी मूर्च्छा ठीक हो गई। राम ने उन्हें गले से लगा लिया। वानर सेना में उत्साह छा गया। रावण को यह समाचार मिला तो उसने परेशान होकर कुंभकरण को उठाया। कुंभकरण ने जगाने का कारण पूछा तो रावण ने सीता के हरण से युद्ध तक की सारी बातें बताई तथा बड़े-बड़े वीरों के मारे जाने की बात कही। कुंभकरण ने रावण को बुरा-भला कहा और कहा कि तुमने साक्षात् ईश्वर से वैर लिया है और अब अपना कल्याण चाहते हो! राम साक्षात् हरि तथा सीता जी जगदंबा हैं। उनसे वैर लेना कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

1.भ्रातृशोक में डूबे राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर -लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर:- लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम को जिस तरह विलाप करते दिखाया गया है वह ईश्वरीय लीला के बजाय आम व्यक्ति का विलाप अधिक लगता है ।राम ने अनेक ऐसी बातें कही है जो आम व्यक्ति ही कहता है ,जैसे यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं लाता ।मैं अयोध्या जाकर परिजनों को क्या मुंह दिखाऊंगा, माता को क्या जवाब दूंगा आदि। ये बातें ईश्वरीय व्यक्तित्व वाला नहीं कह सकता क्योंकि वह तो सब कुछ पहले से ही जानता है। उसे कार्यों का कारण व परिणाम भी पता होता है । यहां राम को एक आम व्यक्ति की तरह प्रलाप करते हुए दिखाया है जो

उनकी सच्ची मानवीय अनुभूति के अनुरूप ही है ।हम इस बात से सहमत हैं कि यह विलाप ईश्वर की लीला की अपेक्षा मानवीय अनुभूति अधिक है।

2. शोक ग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है ?

उत्तर:- जब सभी लोग लक्ष्मण के मूर्छित होने पर विलाप कर रहे थे तब हनुमान ने साहस का कार्य किया। उन्होंने वैद्य जी द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। आधी रात बीत गई और हनुमान संजीवनी बूटी लेकर पहुंचा भी नहीं तो प्रभु श्री राम फिर विलाप करने लगे। इस करुण वातावरण के बीच हनुमान संजीवनी बूटी लेकर प्रकट हो गया । सभी के मन में वीर रस का संचार हो गया। सभी वानर और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूर्छा टूट जाएगी ।इसलिए कवि ने हनुमान के आगमन "को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

3. जैहउं अवध कवन मुहुं लाई।नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई।

बरु अपजस सहतेऊं जग माहीं। नारी हानि विसेष क्षति नाहीं। भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप - वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर:- भाई के शोक में डूबे राम ने कहा कि मैं अवध क्या मुंह लेकर जाऊंगा? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। वे कहते हैं कि नारी की रक्षा न कर पाने का अपयश मैं सह लेता ।किंतु भाई की क्षति का अपयश सहना मुश्किल है। नारी की क्षति कोई विशेष क्षति नहीं है ।राम के इस कथन से नारी की निम्न स्थिति का पता चलता है। उस समय पुरुष प्रधान समाज था। नारी को पुरुष के बराबर अधिकार नहीं थे। उसे केवल उपभोग की चीज समझी जाती थी। उसे असहाय व निर्बल समझकर उसके आत्म सम्मान को चोट पहुंचाई जाती थी।

4. रावण ने अपने भाई कुंभकर्ण को क्यों जगाया? रावण के वचन सुनकर कुंभकरण पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर:- रावण के अनेक नामी योद्धा जैसे दुर्मुख देवांतक , नरांतक, अतिकाय, महोदर आदि युद्ध में मारे गए । रावण बहुत घबरा गया था। वह कुंभकरण को युद्ध के मैदान में उतारना चाहता था। अतः रावण ने कुंभकरण को नींद से जगाने की आज्ञा दी।

रावण के वचन सुनकर कुंभकरण बिलख कर कटु शब्द कहने लगा - " अरे दुष्ट! तू जगत जननी सीता का अपहरण कर लाया है। फिर भी अपना कल्याण चाहता है ? यह संभव नहीं है।तेरा नाश निश्चित है। "

5. लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम की अनुभूतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करने लगे ।वे सोचने लगे कि वह अयोध्या जाकर पत्नी के हरने के कारण अपयश सहेंगे और भाई के मरण के कारण शौक सहेंगे। उनसे लक्ष्मण की माता का दुख देखा नहीं जाएगा। कैसे उस दुखिया मां को ढांढस बंधाएंगे। यह कह- कह कर वे आंसू बहाने लगे। राम कभी लक्ष्मण को संबोधित करके विलाप करते हैं तो कभी उसकी माता से संवाद करने लगते हैं। वे पूर्णतया शोक पीड़ित होकर विचलित हो उठते हैं।

।।निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

I. तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहऊं नाथ तुरंत।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत।।

भरत बाहु बल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार।

मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवनकुमार।।

1.हनुमान ने भरत जी को क्या आश्वासन दिया?

क) रावण सहित लंका का सर्वनाश करूंगा

ख) आपका संदेश राम तक पहुंचाऊंगा

ग) आपका प्रताप ह्रदय में रखकर तुरंत संजीवनी बूटी लेकर लंका पहुंच जाऊंगा।

घ) सीता देवी को मुक्त कर लाऊंगा

2. हनुमान भरत की किस बात से प्रभावित हुए?

क) भरत के बाहुबल से

ख) भरत के शील -गुण से

ग) राम के प्रति अनन्य भक्ति से

घ) उपर्युक्त सभी

3. पद्यांश के अनुसार हनुमान की वीरता और धैर्य किस बात में प्रकट हुआ?

क) हनुमान ने समुद्र को लांघ दिया

ख) हनुमान सीता की खोज में सफल हुआ

ग) संकट के क्षणों में धैर्य खोए बिना संजीवनी बूटी लाने के लिए निकल पड़ा

घ) उपर्युक्त सभी

4.उपर्युक्त पंक्तियां किस भाषा में लिखी गई है?

क) ब्रज ख) अवधी ग) खड़ीबोली घ) फारसी

5. ' पवन कुमार ' कौन है?

क) भरत ख) हनुमान ग) जामवंत घ) सुग्रीव

II उहां राम लछिमनहि निहारी। बोले वचन मनुज अनुसारी।

अर्ध राति गई कपि नहिं आयउ। राम उठाई अनुज उर लायउ।

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।

मम हित लागि तजेहि पितु माता।सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।

1. काव्यांश में लक्ष्मण की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

क) भ्रातृप्रेम ख) सहयोग

ग) करुणा घ) उपर्युक्त सभी

2. अर्ध राति गई कपि नहिं आयउ - किसके न आने का उल्लेख है?

क) लक्ष्मण ख) हनुमान

ग) विभीषण घ) जामवंत

3. उपर्युक्त पद्यांश का प्रसंग है-

क) राम रावण युद्ध में लक्ष्मण का मूर्छित हो जाना

ख) लक्ष्मण के उपचार के लिए हनुमान द्वारा जड़ी बूटी के लिए निकल पड़ना

ग) आधी रात बीतने पर भी जड़ी बूटी लेकर हनुमान पहुंचा नहीं

घ) रावण को हराना असंभव लग रहा था

4. काव्यांश की भाषा है-

क) ब्रज ख) अवधी ग) फारसी घ) खडीबोली

5. छंद कौन सा है

क) दोहा ख) सोरठा ग) चौपाई घ) रोला

III हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतघ्य प्रभु परम सुजाना।

तुरंत बैल तब कीन्हि उपाई। उठिए बैठे लछिमन हरषाई।।

हृदयं लाई प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।

कपि पुनि बैद तहां पहुंचाना। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का प्रसंग है-

क) संजीवनी बूटी लेकर हनुमान का प्रकट होना

ख) हर्षित राम द्वारा हनुमान से भेंट

ग) उपर्युक्त दोनों

घ) उपर्युक्त कोई नहीं

2. वैद्य के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया गया ?

क) वैद्य को सम्मान के साथ विदा किया

ख) सम्मान के साथ उनके निवास स्थान तक पहुंचा दिया

ग) वैद्य के साथ उचित व्यवहार नहीं किया गया

घ) वैद्य जी को अपने निवास स्थान पहुंचाया नहीं

3. 'हरषे सकल भालु कपि ब्राता।' में "ब्राता" का अर्थ है -

क) भाई ख) भ्राता ग) समूह घ) वानर

4. प्रस्तुत पंक्तियां किस छंद में लिखी गई है?

क) चौपाई ख) सोरठा ग) कवित्त घ) सवैया

5. किस को परम ज्ञानी कहा गया है-

क) वैद्य जी को ख) हनुमान को

ग) श्री राम को घ) विभीषण को

<u>उत्तर :</u>- ।

1. ग) आपका प्रताप हृदय में रखकर तुरंत संजीवनी बूटी लेकर लंका पहुंच जाऊंगा।

2.घ)उपर्युक्त सभी

3 .ग) संकट के क्षणों में धैर्य खोए बिना संजीवनी बूटी लाने के लिए निकल पड़ा।

4.ख) अवधी

5.ख) हनुमान

II 1.घ) उपर्युक्त सभी

2.ख) हनुमान

3.ग) आधी रात बीतने पर भी जड़ी बूटी लेकर हनुमान पहुंचा नहीं

4.ख) अवधी

5.ग) चौपाई

III 1.ग) उपर्युक्त दोनों

2.ख) सम्मान के साथ उनके निवास स्थान तक पहुंचा दिया

3. ग) समूह

4.क) चौपाई

5.ग) श्री राम को

सराहना संबंधी प्रश्न/अतिरिक्त प्रश्न

1. तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैसेऊं नाथ तुरंत।

अब कहिए आयसु पाइ पद बंदि चलेगी हनुमंत।।

भरत बाहु बल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपारा।

मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवनकुमार।।

प्रश्न

(क) अनुप्रास अलकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ख) कविता के भाषिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) काव्याशा के भाव-वैशिष्ट्रय को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(क) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण-

(i) प्रभु पद प्रीति अपार।

(ii) पुनि-पुनि पवनकुमार।

(ख) काव्यांश में सरस, सरल अवधी भाषा का प्रयोग है। इसमें दोहा छद का प्रयोग है।

(ग) काव्यांश में हनुमान द्वारा भरत के बाहुबल, शील-स्वभाव तथा प्रभु श्री राम के चरणों में उनकी अपार भक्ति की सराहना का वर्णन है।

2.सुत बित नारि भवन परिवारा । होहि जाहिं ज7 बारह बारा ।।

अस बिचारि जिय जपहु ताता। मिलह न जगत सहोदर भ्रात।।

जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।।

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

प्रश्न

(क) काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

(ख) इन पंक्तियों को पढ़कर राम-लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है।

(ग) अंतिम दो पंक्तियों को पढ़कर हमें क्या सीख मिलती है।

उत्तर-

(क) विष्णु भगवान के अवतार भगवान श्री राम का मनुष्य के समान व्याकुल होना और राम, लक्ष्मण एवं भरत का यह परस्पर भ्रातृ-प्रेम हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

(ख) दोनों भाइयों में अगाध प्रेम था। श्री राम अनुज से बहुत लगाव रखते थे तथा दोनों के बीच पिता-पुत्र-सा संबंध था। लक्ष्मण श्री राम का बहुत सम्मान करते थे।

(ग) भगवान श्री राम के अनुसार संसार के सब सुख भाई पर न्यौछावर किए जा सकते हैं। भाई के अभाव में जीवन व्यर्थ है और भाई जैसा कोई हो ही नहीं सकता। आज के युग में यह सीख अनेक सामाजिक कष्टों से मुक्त करवा सकती है।

3. प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए वानर निकर

आय गयउ हनुमान जिमि करुना मंह बीर रस।।

प्रश्न क) काव्यांश किस छंद में है?

ख) उत्प्रेक्षा अलंकार छांटिए और उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

ग) काव्यांश की भाषा की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर:-क) छंद -सोरठा

ख) उत्प्रेक्षा- आय गयउ हनुमान जिमि करुना मंह बीर रस।

सौंदर्य:- राम -विलाप के शोक पूर्ण वातावरण के बीच हनुमान का संजीवनी बूटी लाना ऐसा ही अचानक परिवर्तन था जैसे करुण रस के बीच अचानक वीर रस आ कूदा हो।

ग) ० अवधी भाषा

० प्रवाहपूर्ण और अलंकारिक भाषा - अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग।

4. लक्ष्मण के बिना अपने जीवन की तुलना राम ने किस से की है और क्यों?

उत्तर:- लक्ष्मण के बिना जीवन को परकटे पक्षी, सूंड विहीन हाथी एवं मणि के बिना सांप के साथ किया गया है। क्योंकि लक्ष्मण ही राम के परम शक्ति एवं परम सहयोगी हैं। लक्ष्मण बिना राम अपने को अत्यधिक लाचार महसूस करते हैं ।

5. सवैए के आधार परतुलसीदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- समय में तुलसी की सच्ची भक्ति भावना तथा स्वाभिमानी स्वभाव का परिचय मिलता है। वे स्वयं को " सरनाम गुलामु है राम को "कहते हैं । गुलाम स्वयं को तन मन से पूरी तरह अपने स्वामी के प्रति समर्पित मान लेता है। इसलिए 'गुलामु' शब्द सच्ची भक्ति भावना का परिचायक है ।

तुलसीदास स्वयं को राम का प्रसिद्ध समर्पित भक्त कहते हैं , किंतु भक्त होते हुए भी किसी सांसारिक व्यक्ति या अधिकारी की धौंस मानने वाले नहीं थे । इसलिए उन्होंने खुद पर चोट करने वाले निंदक समाज को आड़े हाथों लिया। उन्होंने निंदकों को खुली छूट दी कि वे जो चाहे उनके बारे में कहें। उनका न किसी से कुछ लेना देना है।

<u>रुबाइयाँ</u>

-फिराक गोरखपुरी

रुबाई उर्दू और फारसी का छंद या लेखन शैली है, जिसमें 4 पंक्तियां होती है। इसकी पहली दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है। प्रस्तुत रुबाइयां वात्सल्य रस से युक्त है। इसमें नन्हे शिशु की अठखेलियां, मां बेटे की कुछ मनमोहक अदाएं तथा रक्षाबंधन का दृश्य प्रस्तुत है।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए-

1.आँगन में लिये चाँद के टुकड़े को खड़ी

हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी

रह-रह के हवा में जो लोका देती है।

गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

1. कवि ने किसकी तुलना चाँद से की है?

(i) आँगन

(ii) माँ

(iii) बच्चा

(iv) हवा

2. माँ अपने बच्चे को क्या कर रही है?

(i) नहा रही है

(ii) लोका देती है

(iii) खिलौना देती है

(iv) चाँद दिखा रही है

3. माँ अपने चाँद के टुकड़े को किस पर झुलाती है?

(i) झूले पर

(ii) अपने हाथ पर

(iii) पेड़ की डाली पर

(iv) इनमें से कोई नहीं

4. इसमें कौनसा रस झलकता है ?

(i) करुण

(ii)वात्सल्य

(iii)शांत

(iv) श्रृंगार

5. प्रस्तुत काव्यांश के रचयिता कौन हैं?

(i) फिराक गोरखपुरी (ii) रघुवीर सहाय

(iii) उमाशंकर जोशी (iv) आलोक धन्वा

उत्तर -

1.iii)बच्चा

2. ii) लोका देती है

3.ii)अपने हाथ पर

4.ii)वात्सल्य

5.i) फिराक गोरखपुरी

2. दीवाली की शाम घर पुते और सजे

चीनी के खिलौने जगमगाते लावे

वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक

बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए

प्रश्न-

1. रूपवती किसके लिए प्रयुक्त हैं?

(i) पड़ोसिन

(ii) देवी- देवना

(iii) कवि

(iv) घर की मालकिन

2. दमक से क्या तात्पर्य है ?

(i) चमक

(ii) आभा

(iii) शोभा

(iv) उपरोक्त सभी

3. माँ दिए कहाँ रख देती है?

(i) मंदिर में

(ii) घर में

(iii) घरौंदे में

(iv) आँगन में

4.किस छंद का प्रयोग हुआ है ?

I)सवैया

Ii) दोहा

Iii)चौपाई

Iv)रुबाई

5. खिलौने किससे बने हैं ?

I) चीनी

Ii)लकड़ी

Iii)लाख

Iv) चाँदी

उत्तर

1.iv)घर की मालकिन

2. iv)उपरोक्त सभी

3.iii)घरौंदे में

4.iv)रुबाई

5.i)चीनी

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बच्चा 'ठुनक रहा है ज़िदयाया है'- क्यों ?

बच्चे के ठुनकने और ज़िंदयाने में उसकी

बाल-सुलभ हठ एवं मनपसन्द चीज प्राप्त करने की चेष्टा प्रदर्शित होती है। वह अपनी माँ से चाँद लेने केलिए हठ कर रहा है, जो उसे अच्छी लग रही है।

2.शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है ?

रक्षाबंधन का त्योहार भाई-बहन के मधुर सम्बन्ध को प्रदर्शित करने वाला एक पावन पर्व है। यह त्योहार सावन मास में आता है, इस समय काली-काली घटा में बिजली चमकती रहती है। यहाँ बिजली प्रसन्नता का प्रतीक है।इसी प्रकार राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते रहते हैं। ये लच्छे भी प्रसन्नता के ही प्रतीक हैं जिनमें रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व पर बहन अपने भाई को राखी बाँधती है।

3.बच्चा खिलखिलाकर हँसने का क्या कारण है ?

माँ अपने चाँद जैसी सुंदर संतान को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे अपने हाथों पर झुलाती हुई हवा में उछाल देती है। इससे बच्चा खुश होकर खिलखिलाकर हँसने लगता है।

(4) बच्चा कब अपनी माँ को प्यार से देखता हैं?

माँ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है। पानी के छलकने से बच्चा प्रसन्न होता है। जब माँ बच्चे को अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है तब वह अपनी माँ को बहुत प्यार से देखता है।

(क) छोटा मेरा खेत
(ख) बगुलों के पंख
-उमाशंकर जोशी

कवि परिचय

जीवन परिचय- गुजराती कविता के सशक्त हस्ताक्षर उमाशंकर जोशी का जन्म 1911 ई० में गुजरात में हुआ था। 20वीं सदी में इन्होंने गुजराती साहित्य को नए आयाम दिए। इनको परंपरा का गहरा ज्ञान था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा, आम जिंदगी के अनुभव से परिचय कराया और नयी शैली दी। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए। इनका देहावसान सन 1988 में हुआ।

रचनाएँ- उमाशंकर जोशी का साहित्यिक अवदान पूरे भारतीय साहित्य के लिए महत्वपूर्ण है। इन्होंने एकांकी, निबंध, कहानी, उपन्यास, संपादन व अनुवाद आदि पर अपनी लेखनी सफलतापूर्वक चलाई। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं

(i) **एकांकी-** विश्व-शांति, गंगोत्री, निशीथ, प्राचीना, आतिथ्य, वसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा आदि।

(ii) **कहानी-** सापनाभारा, शहीद।

(iii) **उपन्यास-** श्रावणी मेणी, विसामो।

(iv) **निबंध-** पारकांजव्या ।

(v) **संपादन-** गोष्ठी, उघाड़ीबारी, क्लांत कवि, म्हारा सॉनेट, स्वप्नप्रयाण तथा 'संस्कृति' पत्रिका का संपादन।

(vi) **अनुवाद-** अभिज्ञान शाकुंतलम् व उत्तररामचरित का गुजराती भाषा में अनुवाद।

काव्यगत विशेषताएँ- उमाशंकर जोशी ने गुजराती कविता को नया स्वर व नयी भंगिमा प्रदान की। इन्होंने जीवन के सामान्य प्रसंगों पर आम बोलचाल की भाषा में कविता लिखी। इनका साहित्य की विविध विधाओं में योगदान बहुमूल्य है। हालाँकि निबंधकार के रूप में ये गुजराती साहित्य में बेजोड़ माने जाते हैं। **भाषा-शैली-** जोशी जी की काव्य-भाषा सरल है। इन्होंने मानवतावाद, सौंदर्य व प्रकृति के चित्रण पर अपनी कलम चलाई है। इन्होंने कविता के माध्यम से शब्दचित्र प्रस्तुत किए हैं।–

कविता का सार

(क) छोटा मेरा खेत

इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज से पुष्पितपल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

(ख) बगुलों के पंख

यह कविता सुंदर दृश्य बिंबयुक्त कविता है जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के ब्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन।

कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। इस नयनाभिराम दृश्य में कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) छोटा मेरा खेत

1.छोटा मोरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज बहाँ बोया गया ।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

शब्दार्थ- चौकोना-चार कोनों वाला। **पन्ना**-पृष्ठ। **अधड़**-आँधी। **क्षया**-पल। **रसायन**-सहायक पदार्थ। **नि:शोष**-पूरी तरह। **अंकुर**-नन्हा पौधा। **फूटे**-पैदा हुए। **पल्लव**-पत्ते। **नमित**-झुका हुआ। **विष्णेष**-खास तौर पर।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'आरोह, भाग-2'** में संकलित कविता **'छोटा मेरा खेत'** से उद्धृत है। इसके रचयिता गुजराती कवि **उमाशंकर जोशी** हैं। इस अंश में कवि ने खेत के माध्यम से कवि-कर्म का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि उसे कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। उसके मन में कोई भावनात्मक आवेग उमड़ा और वह उसके खेत में विचार का बीज बोकर चला गया। यह विचार का बीज कल्पना के सभी सहायक पदार्थों को पी गया तथा इन पदार्थों से कवि का अहं समाप्त हो गया। जब कवि का अहं हो गया तो उससे सर्वजनहिताय रचना का उदय हुआ तथा शब्दों के अंकुर फूटने लगे। फिर उस रचना ने एक संपूर्ण रूप ले लिया। इसी तरह खेती में भी बीज विकसित होकर पौधे का रूप धारण कर लेता है तथा पत्तों व फूलों से लदकर झुक जाता है।

विशेष-

(i) कवि ने कल्पना के माध्यम से रचना-कर्म को व्यक्त किया है।
(ii) रूपक अलंकार है। कवि ने खेती व कविता की तुलना सूक्ष्म ढंग से की है।
(iii) 'पल्लव-पुष्प', 'गल गया' में अनुप्रास अलंकार है।
(iv) खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति है।
(v) दृश्य बिंब का सुंदर उदाहरण है।
(vi) प्रतीकात्मकता का समावेश है।

प्रश्न

(क) कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है और क्यों ***?***
(ख) कविता की रचना-प्रक्रिया समझाइए।
(ग) खेत अगर कागज हैं तो बीज क्षण का विचार, फिर पल्लव-पुष्प क्या हैं***?***
(घ) मूल विचार को 'क्षण का बीज' क्यों का गया है***?*** उसका रूप-परिवर्तन किन रसायनों से होता है***?***

उत्तर-

(क) कवि ने कवि-कर्म की तुलना खेत से की है। खेत में बीज खाद आदि के प्रयोग से विकसित होकर पौधा बन जाता है। इस तरह कवि भी भावनात्मक क्षण को कल्पना से विकसित करके रचना-कर्म करता है।

(ख) कविता की रचना-प्रक्रिया फसल उगाने की तरह होती है। सबसे पहले कवि के मन में भावनात्मक आवेग उमड़ता है। फिर वह भाव क्षण-विशेष में रूप ग्रहण कर लेता है। वह भाव कल्पना के सहारे विकसित होकर रचना बन जाता है तथा अनंत काल तक पाठकों को रस देता है।

(ग) खेत अगर कागज है तो बीज क्षण का विचार, फिर पल्लव-पुष्प कविता हैं। यह भावरूपी कविता पत्तों व पुष्पों से लदकर झुक जाती है।

(घ) मूल विचार को 'क्षण का बीज' कहा गया है क्योंकि भावनात्मक आवेग के कारण अनेक विचार मन में चलते रहते हैं। उनमें कोई भाव समय के अनुकूल विचार बन जाता है तथा कल्पना के सहारे वह विकसित होता है। कल्पना व चिंतन के रसायनों से उसका रूप-परिवर्तन होता है।

2.छोटा मोरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज बहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फुटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना।

शब्दार्थ- अलौकिक-दिव्य, अद्भुत। **रस-** साहित्य का आनंद, फल का रस। **रोपाई-** छोटे-छोटे पौधों को खेत में लगाना। **अमृत धाराएँ-** रस की धाराएँ। **अनतता-** सदा के लिए। **अक्षय-** कभी नष्ट न होने वाला। **यात्र** -बर्तन, काव्यानंद का स्रोत।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी की पाठ्यपुस्तक **'आरोह, भाग-2'** में संकलित कविता **'छोटा मेरा खेत'** से

उद्धृत है। इसके रचयिता गुजराती कवि **उमाशंकर जोशी** हैं। इस कविता में कवि ने खेत के माध्यम से कवि-कर्म का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या-"छोटा मेरा खेत..... नमित हुआ विशेष।" की व्याख्या काव्यांश-1 में देखें। कवि आगे कहता है कि जब पन्ने रूपी खेत में कविता रूपी फल झूमने लगता है तो उससे अद्भुत रस की अनेक धाराएँ फूट पड़ती हैं जो अमृत के समान लगती हैं। यह रचना पल भर में रची थी, परंतु उससे फल अनंतकाल तक मिलता रहता है। कवि इस रस को जितना लुटाता है, उतना ही यह बढ़ता जाता है। कविता के रस का पात्र कभी समाप्त नहीं होता। कवि कहता है कि उसका कविता रूपी खेत छोटा-सा है, उसमें रस कभी समाप्त नहीं होता।

विशेष-

(i) कवि-कर्म का सुंदर वर्णन है।

(ii) कविता का आनंद शाश्वत है।

(iii) छोटा मेरा खेत चौकाना' में रूपक अलंकार है।

(iv) तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली है।

(v) 'रस' शब्द के अर्थ हैं-काव्य रस और फल का रस। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

प्रश्न

(क) 'रस अलौकिक, अमृत धाराएँ फूटती'। इस की अलौकिक धाराएँ कब, कहाँ और क्यों फूटती हैं?

(ख) 'लुटते रहने से भी' क्या काम नहीं होता और क्यों?

(ग) 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है और क्यों?

(घ) कवि इन पंक्तियों में खेत से किसकी तुलना कर रहा है?

उत्तर-

(क) अलौकिक अमृत तुल्य रस-धाराएँ फलों के पकने पर फलों से फूट पड़ती हैं। ऐसा तब होता है जब उन पके फलों को काटा जाता है।

(ख) साहित्य का आनंद अनंत काल से लुटते रहने पर भी कम नहीं होता, क्योंकि सभी पाठक अपने-अपने ढंग से रस का आनंद उठाते हैं।

(ग) 'रस का अक्षय पात्र' साहित्य को कहा गया है, क्योंकि साहित्य का आनंद कभी समाप्त नहीं होता। पाठक जब भी उसे पढ़ता है, आनंद की अनुभूति अवश्य करता है।

(घ) कवि ने इन पंक्तियों में खेत की तुलना कागज के उस चौकोर पन्ने से की है, जिस पर उसने कविता लिखी है। इसका कारण यह है कि इसी कागजरूपी खेत पर कवि ने अपने भावों-विचारों के बीज बोए थे जो फसल की भाँति उगकर आनंद प्रदान करेंगे।

(ख) बगुलों के पंख

नभ में पाँती-बाँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरा आँखे।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया

हले हॉले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखे
नभ में पाँती-बँधी बगुलों के

शब्दार्थ- नभ-आकाश । **पाँती**-पंक्ति । **कजरारे**-वाले । **साँझ**-संध्या, सायं । **सर्तज**-चमकीला, उज्जवल । **श्वेत** -सफेद। **काया**-शरीर। **हौले-हौले**-धीरे-धीरे। **निज**-अपनी। **माया**-प्रभाव, जादू। **तनिक**-थोड़ा। **पाँखें**-पंख।

प्रसंग-प्रस्तुत कविता **'बगुलों के पंख'** हमारी पाठ्यपुस्तक **'आरोह, भाग-2'** में संकलित है। इसके रचयिता **उमाशंकर जोशी** हैं। इस कविता में सौंदर्य की नयी परिभाषा प्रस्तुत की गई है तथा मानव-मन पर इसके प्रभाव को बताया गया है।

व्याख्या-कवि आकाश में छाए काले-काले बादलों में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए बगुलों के सुंदर-सुंदर पंखों को देखता है। वह कहता है कि मैं आकाश में पंक्तिबद्ध बगुलों को उड़ते हुए एकटक देखता रहता हूँ। यह दृश्य मेरी आँखों को चुरा ले जाता है। काले-काले बादलों की छाया नभ पर छाई हुई है। सायंकाल चमकीली सफेद काया उन पर तैरती हुई प्रतीत होती है। यह दृश्य इतना आकर्षक है कि अपने जादू से यह मुझे धीरे-धीरे बाँध रहा है। मैं उसमें खोता जा रहा हूँ। कवि आहवान करता है कि इस आकर्षक दृश्य के प्रभाव को कोई रोके। वह इस दृश्य के प्रभाव से बचना चाहता है, परंतु यह दृश्य तो कवि की आँखों को चुराकर ले जा रहा है। आकाश में उड़तें पंक्तिबद्ध बगुलों के पंखों में कवि की आँखें अटककर रह जाती हैं।

विशेष-

(i) कवि ने सौंदर्य व सौंदर्य के प्रभाव का वर्णन किया है।
(ii) 'हौले-हौले' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(iii) खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
(iv) बिंब योजना है।
(v) 'आँखें चुराना' मुहावरे का सार्थक प्रयोग है।

प्रश्न

(क) कवि किस दूश्य पर मुग्ध हैं और क्यों?
(ख) 'उसे कोई तनिक रोक रक्खी-इस पक्ति में कवि क्या कहना चाहता हैं?
(ग) कवि के मन-प्रायों को किसने अपनी आकर्षक माया में बाँध लिया हैं और कैसे?
(घ) कवि उस सौंदर्य को थोड़ी देर के लिए अपने से दूर क्यों रोके रखना चाहता हैं? उसे क्या भय हैं?

उत्तर-

(क) कवि उस समय के दृश्य पर मुग्ध है जब आकाश में छाए काले बादलों के बीच सफेद बगुले पंक्ति बनाकर उड़ रहे हैं। कवि इसलिए मुग्ध है क्योंकि श्वेत बगुलों की कतारें बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया की तरह प्रतीत हो रहे हैं।
(ख) इस पंक्ति में कवि दोहरी बात कहता है। एक तरफ वह उस सुंदर दृश्य को रोके रखना चाहता है ताकि उसे और देख सके और दूसरी तरफ वह उस दृश्य से स्वयं को बचाना चाहता है।

(ग) कवि के मन-प्राणों को आकाश में काले-काले बादलों की छाया में उड़ते सफेद बगुलों की पंक्ति ने बाँध लिया है। पंक्तिबद्ध उड़ते श्वेत बगुलों के पंखों में उसकी आँखें अटककर रह गई हैं और वह चाहकर भी आँखें नहीं हटा पा रहा है।

(घ) कवि उस सौंदर्य को थोड़ी देर के लिए अपने से दूर रोके रखना चाहता है क्योंकि वह उस दृश्य पर मुग्ध हो चुका है। उसे इस रमणीय दृश्य के लुप्त होने का भय है

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

1. छोटे चौकोने खेत की कागज़ का पना कहने में क्या अर्ध निहित है?

अथवा

कागज़ के पन्ने की तुलना छोटे चौंकाने खेत से करने का आधार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में यही अर्थ निहित है कि कवि ने कवि कर्म को खेत में बीज रोपने की तरह माना है। इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि कविता रचना सरल कार्य नहीं है। जिस प्रकार खेत में बीज बोने से लेकर फ़सल काटने तक काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है, उसी प्रकार कविता रचने के लिए अनेक प्रकार के कर्म करने पड़ते हैं।

2. रचना के संदर्भ में *'अंधड़'* और *'बीज'* क्या है?

उत्तर- रचना के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ है-भावना का आवेग और 'बीज' का अर्थ है-विचार व अभिव्यक्ति। भावना के आवेग से कवि के मन में विचार का उदय होता है तथा रचना प्रकट होती है।

3. *'रस का अक्षय पात्र'* से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

उत्तर- अक्षय का अर्थ है-नष्ट न होने वाला। कविता का रस इसी तरह का होता है। रस का अक्षय पात्र कभी भी खाली नहीं होता। वह जितना बाँटा जाता है, उतना ही भरता जाता है। यह रस चिरकाल तक आनंद देता है। खेत का अनाज तो खत्म हो सकता है, लेकिन काव्य का रस कभी खत्म नहीं होता। कविता रूपी रस अनंतकाल तक बहता है। कविता रूपी अक्षय पात्र हमेशा भरा रहता है।

4. व्याख्या करें-

1. शब्द के अंकुर फूटे
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
2. रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

उत्तर-

1. कवि कहना चाहता है कि जब वह छोटे खेतरूपी कागज के पन्ने पर विचार और अभिव्यक्ति का बीज बोता है तो वह कल्पना के सहारे उगता है। उसमें शब्दरूपी अंकुर फूटते हैं। फिर उनमें विशेष भावरूपी पुष्प लगते हैं। इस प्रकार भावों व कल्पना से वह विचार विकसित होता है।

2. कवि कहता है कि कवि-कर्म में रोपाई क्षण भर की होती है अर्थात भाव तो क्षण-विशेष में बोया जाता है। उस भाव से जो रचना सामने आती है, वह अनंतकाल तक लोगों को आनंद देती है। इस फसल की कटाई अनंतकाल तक चलती है। इसके रस को कितना भी लूटा जाए, वह कम नहीं होता। इस प्रकार कविता कालजयी होती है।

कविता के आस-पास

1.* शब्दों के माध्यम से जब कवि दृश्यों, चित्रों, ध्वनि-योजना अथवा रूप-रस-गांध को हमारे ऐंद्रिक अनुभवों में साकार कर *देता हैं तो बिब का निमणि होता है। इस आधार पर प्रस्तुत कविता से बिब की खोज करें।

उत्तर- कवि ने बिंबों की सुंदर योजना की है। अपने भावों को प्रस्तुत करने के लिए बिंबों का सहारा उमाशंकर जोशी ने लिया है। कुछ बिंब निम्नलिखित हैं

प्रकृति बिंब

- छोटा मेरा खेत चौकोना।
- कोई अंधड़ कहीं से आया।
- शब्द के अंकुर फैंटे।
- पल्लव पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
- झूमने लगे फल।
- नभ में पाँती बँधे बगुलों के पाँख।
- वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें।

2. जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप हो, रूपक कहलाता हैं। इस कविता में से रूपक का चुनाव करें।

उत्तर-

(i) भावोंरूपी आँधी।

(ii) विचाररूपी बीज।

(iii) पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

(iv) कजरारे बादलों की छाई नभ छाया।

(v) तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. *'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?*

उत्तर-

कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

2. 'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए

उत्तर- इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि के कार्य के समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर

जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

3. कवि को खेत का रूपक अपनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

उत्तर- कवि का उद्देश्य कवि-कर्म को महत्ता देना है। वह कहता है कि काव्य-रचना बेहद कठिन कार्य है। बहुत चिंतन के बाद कोई विचार उत्पन्न होता है तथा कल्पना के सहारे उसे विकसित किया जाता है। इसी प्रकार खेती में बीज बोने से लेकर फसल की कटाई तक बहुत परिश्रम किया जाता है। इसलिए कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत पड़ी।

4. *'छोटा मेरा खेत हैं कविता का उद्देश्य बताइए।*

उत्तर- कवि ने रूपक के माध्यम से कवि-कर्म को कृषक के समान बताया है। किसान अपने खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर पौधा बनता है तथा पकने पर उससे फल मिलता है जिससे लोगों की भूख मिटती है। इसी तरह कवि ने कागज को अपना खेत माना है। इस खेत में भावों की आँधी से कोई बीज बोया जाता है। फिर वह कल्पना के सहारे विकसित होता है। शब्दों के अंकुर निकलते ही रचना स्वरूप ग्रहण करने लगती है तथा इससे अलौकिक रस उत्पन्न होता है। यह रस अनंतकाल तक पाठकों को अपने में डुबोए रखता है। कवि ने कवि-कर्म को कृषि-कर्म से महान बताया है क्योंकि कृषि-कर्म का उत्पाद निश्चित समय तक रस देता है, परंतु कवि-कर्म का उत्पाद अनंतकाल तक रस प्रदान करता है।

5. *शब्दरूपी अंकुर फूटने से कवि का क्या तात्पर्य है?*

उत्तर- कवि कहता है कि जिस प्रकार खेत में बीज पड़ने के कुछ दिनों बाद उसमें अंकुर फूटने लगते हैं, उसी प्रकार विचाररूपी दिस अंड्रफ्ट लातेहैं। यहाकविता कर्मक पाहताचणहै इसाके बाद हारवना अनास्वाप - ग्रहण करती है।

6. *कविता लुटने पर भी क्यों नहीं मिटती या खत्म होती?*

उत्तर- यहाँ'लुटने से' आशय बाँटने से है। कविता का आस्वादन अनेक पाठक करते हैं। इसके बावजूद यह खत्म नहीं होती क्योंकि कविता जितने अधिक लोगों तक पहुँचती है उतना ही अधिक उस पर चिंतन किया जाता है। वह शाश्वत हो जाती है।

7. 'अंधड़' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'अंधड़' भावनात्मक आवेग है। काव्य-रचना अचानक किसी प्रेरणा से होती है। कवि के मन में भावनाएँ होती हैं। जिस भी विचार का आवेग अधिक होता है, उसी विचार की रचना अपना स्वरूप ग्रहण करती है।

8. *'बीज गल गया निःशेष ' से क्या तात्पर्य है?*

उत्तर- इसका अर्थ यह है कि जब तक कवि के मन में कविता का मूल भाव पूर्णतया समा नहीं जाता, तब तक वह निजता (अहं) से मुक्त नहीं हो सकता। कविता तभी सफल मानी जाती है, जब वह समग्र मानव-जाति की भावना को व्यक्त करती है। कविता को सार्वजनिक बनाने के लिए कवि का अहं नष्ट होना आवश्यक है।

9. 'बगुलों के पंख 'कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर-

यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है। वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

10. 'पाँती-बँधी' से कवि का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इसका अर्थ है-एकता। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों को एकता के साथ रहना चाहिए। एक होकर चलने से मनुष्य अद्‌भुत विकास करेगा तथा उसे किसी का भय भी नहीं रहेगा।

स्वर्य करें

1. कवि को खेत कागज के पन्ने के समान लगता है। आप इससे कितना सहमत हैं?

2. कवि ने साहित्य को किस संज्ञा से संबोधित किया है और क्यों?

3. कवि-कर्म और कृषि-कर्म दोनों में से किसका प्रभाव दीर्घकालिक होता है और कैसे?

4. कवि सायंकाल में किस माया से बचने की कामना करता है और क्यों?

5. 'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर शाम के मनोहारी प्राकृतिक दृश्य का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

अथवा

कवि उमाशंकर जोशी में प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करने की अनूठी क्षमता है-उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6. पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (5x1=5)

1. छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया। नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नामित हुआ विशेष।

प्र.1. कवि कागज़ के पन्ने को किस रूप में देखता है?

क. चौकोर खेत के रूप में
ख. आयातकार आकृति के रूप में
ग. हरे-भरे खेत के रूप में
घ. भावनाओं के रूप में

प्र.2." कोई अंधड़ कहीं से आया"- इस पंक्ति में 'अंधड़' से क्या संकेत किया गया है?

क. चौकोर खेत
ख.विचारों और भावनाओं की आँधी
ग.आँधी और बारिश
घ.गर्म हवाओं कीआँधी

प्र.3" शब्द के अंकुर फूटे"-इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

क. उपमा
ख.अनुप्रास
ग.यमक
घ.रूपक

प्र.4. कवि का छोटा खेत किस आकार का था?

क. चौकोना
ख.तिकोना
ग.आयताकार
घ.वक्र

प्र.5 .साहित्य का रसायन क्या है?

क. श्रद्धा
ख.सम्मान
ग.कल्पना
घ.जल्पना

उत्तरः- 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग) .

2. झूमने लगे पल
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई आनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना ।

प्र.1.'झूमने लगे फल'- इसमें क्या अर्थ निहित है ?

क. कवि की रचना तैयार हो जाती है।
ख.किसान की फसल पक जाती है।
ग.चित्रकार का चित्र बन जाता है।
घ.शिल्पी का शिल्प सामने आता है।

प्र.2 . 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है?

क. फसल को
ख.खेत को
ग.साहित्य को
घ.फल को

प्र. 3.कविता में कवि कर्म की तुलना किससे की गई है?

क. शिल्प-कर्म से
ख.लौह-कर्म से
ग.कृषि-कर्म से
घ.इनमें से कोई नहीं

प्र.4. रस का पात्र कैसा है?

क. कमज़ोर
ख.अक्षय
ग.नीरस
घ.निंदनीय

प्र.5.कवि ने अभिव्यक्ति रूपी बीज किस पर बोया था?

क. कागज के पन्ने पर
ख.आंगन में
ग.खेत में
घ.छत पर

उत्तर :- 1. (क) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ख) 5. (क) .

3.नभ में पांति-बंधे बगुलों के पंख,

चुराए लिए जातीं वे मेरी आंखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया ।
हौले-हौले जाती मुझे बांध निज माया से ।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो ।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आंखें
नभ में पांति-बंधे बगुलों के पाँखें।

प्र.1. बगुलों के पंखों का रंग कैसा है?

क. काला
ख.नीला
ग.सफेद
घ.मटमैला

प्र.2. आसमान में बगुले किस प्रकार उड़ते जा रहे हैं ?

क. अलग-अलग होकर
ख.सब एक झुंड में
ग.पंक्ति बद्ध होकर
घ.वृत्ताकार में

प्र.3. पंक्ति बद्ध होकर उड़ते जा रहे बगुलों के दृश्य में कौन-सा बिंब है?

क. गतिशील बिंब
ख.स्थिर बिंब
ग.स्पर्श बिंब
घ.श्रव्य बिंब

प्र.4. उडते जा रहे बगुलों को देखकर कवि पर क्या प्रभाव पड़ा ?

क. कवि एक टक उन्हें देखता रहा
ख.कवि उन्हें पकड़ने जा रहा था
ग.कवि स्वयं उड़ रहा था
घ.कवि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा

प्र.5. " बगुलों के पंख"- नामक कविता के रचनाकार का नाम बताइए।

क. शिवमंगल सिंह सुमन

ख.शमशेर बहादुर सिंह
ग.हज़ारी प्रसाद द्विवेदी
घ.उमाशंकर जोशी

उत्तरः- 1.(ग) 2.(ग) 3.(क) 4.(क) 5.(घ).

भक्तिन

महादेवी वर्मा -

हिंदी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार श्रीमती महादेवी वर्मा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित है । नारी प्रसार को कार्यान्वित कर उन्होंने अपनी सामाजिक सेवा का समाज में शिक्षा - स्वरूप भी स्पष्ट कर दिया है । संस्मरणात्मक रेखाचित्र में बेजोड महादेवी वर्मा ने 'भक्तिन' नामक रेखाचित्र में अपनी सेविका भक्तिन के विविध पहलुओं का सांगोपांग चित्रण कर समाज के निम्न वर्ग की भूमिका पर प्रकाश डालने का जो भरसक प्रयास किया है , वह सराहनीय है । घरेलू सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय कर उनके व्यक्तित्व के नकारात्मक पक्ष को स्वीकार करते हुए सकारात्मक़ पक्ष को उजागर कर पाठकों के मानस पटल पर स्थायी रूप प्रदान करने का काम कम महत्त्वपूर्ण नहीं है ।

(1निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।

सेवक धर्म में हनुमान जी से 1.1स्पर्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनाम धन्वा गोपालिका की कन्या है नाम है लउमिन अर्थात लक्ष्मी । पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बंध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं।

.1हनुमान से भक्तिन की स्पर्धा किस में है?

कसेवक धर्म में (भक्ति भाव में। ग (

खदया धर्म में (घदौलत में-धन (

.12भक्तिन किसकी पुत्री है?

कगोपालिका की (ख) अंजना की (

गइनमें से किसी की नहीं। (लक्ष्मी की घ (

.3किसको अपने नाम की विशालता दुर्वह है?

कहनुमान को (खभक्तिन को (

गलछमिन को । (महादेवी वर्मा को घ (

.4भक्तिन की समझदारी के लिए प्रमाण है।

कवह सेवा धर् (म में हनुमान से स्पर्धा करने वाली

खवह अनामधन्वा गोपालिका की पुत्री है। (

गअपने नाम की विशालता उसे दुर्वह है। (

घसमृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। वह अपना (

.5समृद्धि सूचक नाम है

महादेवी (ख) अंजना पुत्री (क)

लक्ष्मी (भक्तिन घ (ग)

जीवन के दूसरे 1.2परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है। जब उसने गेहूए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि तीनतीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मछिया के ऊपर - विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियों काक भुशंडी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।

.1जीवन के दूसरे परिच्छेद से क्या आशय है?

क वैवाहिक जीवन ख अवैवाहिक जीवन

ग सन्यास जीवन घइनमें से कोई नहीं। .

.2भक्तिन द्वारा तीन कन्याओं को जन्म देने पर सास और जिठानियों की क्या प्रतिक्रिया थी?

क मुस्कुराकर प्रशंसा की खओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की (

ग खुशी से नाचने लगी घहंसकर खुशी प्रकट की (

.3दोनों जिठानियां सास के पद के लिए कैसे उम्मीदवार हो गई?

क भक्तिन का अपहास करके ख भक्तिन से स्पर्धा करके

ग पुत्रों को जन्म देकर घ मर्यादा पूर्ण व्यवहार द्वारा

.4'लीक छोड़कर चलने' का मतलब है

कसभी के साथ मिलकर चलना - ख पुरानी परंपरा पर चलना

ग पुरातन तरीके से अलग नए तरीके से चलना घ इनमें से कोई नहीं

5. विधात्री का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

क जेठानियों के लिए- ख भक्तिन के लिए

ग बेटियों के लिए घसास के लिए। .

1.3 शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती है । मुझे स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता, अतः मैंने भक्तिन को रोका। उसने अकुंठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है। कुतुहलवश मैं पूछ ही बैठी क्या लिखा है"? तुरंत उत्तर मिला । कौन से "तीरथ गए मुडाएँ सिद्ध"- शास्त्र का यह रहस्यम सूत्र है यह जान लेना मेरे लिए संभव ही नहीं था। अतः मैं हार कर मौन हो रही और भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार को, एक दरिद्र नापित के गंगाजल से धुले उस्तरे द्वारा यथाविधि निष्पन्न होता रहा ।।

1. लेखिका को क्या अच्छा नहीं लगता?

क चोरी करना खझूठ बोलना -

ग स्त्रियों का सिर घुटाना। घ शास्त्र की गलत व्याख्या देना।

2. क्या बोलकर भक्त ने सिर घुटने को सही माना ?

क विज्ञान के उदाहरण द्वारा ख गुरु वचन द्वारा

ग अपनी स्वतंत्रता कहकर घ इनमें से कोई नहीं

3. लेखिका किस कार्य में हार गयी?

क भक्तिन को समझाने में ख भारत संबंधित जानकारी प्राप्त करने में

ग भक्तिन द्वारा बताए गए रहस्यमयी सूत्र के स्रोत जानने में

घ उपरोक्त सभी

.4यथाविधि समास का नाम क्या है?

क अव्ययीभाव ख तत्पुरुष

ग बहुव्रीहि घ द्वंद्व

.5अकुंठित शब्द के लिए उचित विकल्प कौन सा है ?

क मूल शब्द ख उपसर्ग युक्त शब्द

गप्रत्यय युक्त शब्द- घउपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्द है। .

बेटी की कोठरी में घुसकर भीतर से द्वार बंद कर एक दिन मां की अनुपस्थिति में वर महारूप ने 1.4 लिया और उसके समर्थक गाँव वालों को बुलाने लगे। युवती ने जब इस डकैत वर की मरम्मत कर कुंडी होती तब पंच बेचारे समस्या में पड़ गए । तीतरबाज युवक कहता था, वह निमंत्रण पाकर भीतर गया और युवती उसके मुख पर अपनी पांचों उंगलियों के उभार में इस निमंत्रण के अक्षर पढ़ने का अनुरोध करती थी। अंत में दूध पानी करने के लिए पंचायत बैठी और सब-का-दूध पानी-का-ने सिर हिला हिला कर इस समस्या का मूल कारण कलयुग को स्वीकार किया। अपीलहीन फैसला हुआ कि चाहे उन दोनों में एक सच्चा हो चाहे दोनों झूठे, पर जब वे एक कोठरी से निकले तब उनका पति पत्नी के रूप में रहना ही कलयुग के दोष का परिमार्जन कर सकता है।

.1यहां पर महाशय ने क्या किया ?

क शादी से इनकार कर दिया। .लड़की को बुलाकर शादी कर ली । ख .

ग शादी का प्रस्ताव रखा घ लड़की के घर में घुसकर दरवाजा बंद कर दिया।

.2यहां प्रस्तुत युवती कौन है?

खभक्तिन की बेटी । .महादेवी वर्मा की बेटी ख .

ग भक्तिन घइनमें . से कोई नहीं

.3युवती ने वर के प्रति क्या प्रतिक्रिया की है ?

क थप्पड मारा ख स्वागत किया .

ग पंचायत को बुलाया घ गले लगाया

.4पंचायत ने क्या निर्णय लिया था?

कदोनों को दंड दिया । . ख दोनों का विवाह करवाया। .

गदोनों को अलग कर दिया। . घ पिता के साथ भेज दिया।-दोनों को माता .

.5दूधपानी हो गया-का-दूध पानी-का- - मुहावरे का अर्थ क्या है?

कऔर झूठ अलग अलग करना। सच .दूध से पानी अलग करना । ख .

गसत्य के साथ झूठ मिलाकर बोलना। . घइनमें से कोई नहीं । .

उत्तर संकेत

1. गदयांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर

प्रश्न सं	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**

प्रश्न सं 1	ग	ख	ग	घ	घ
प्रश्न सं 2	क	ख	ग	ग	घ
प्रश्न सं 3	ग	ग	ग	क	घ
प्रश्न सं 4	घ	ख	क	ख	ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में दीजिए । 40

1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम क्यों छिपाना चाहती थी ?

भक्तिन का वास्तविक नाम था लछमिन अर्थात लक्ष्मी । लक्ष्मी धन की देवी है, लेकिन भक्तिन का पूरा जीवन अभावों का था । इस प्रकार नाम और वास्तविकता के बीच में बडा विरोधाभास था । अत : भक्तिन अपना वास्तविक नाम छिपा कर रखना चाहती थी ।

2. भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया ।

नौकरी की खोज में भक्तिन जब महादेवी वर्मा के पास पहुंची , तब भक्तिन ने बताया कि वह अपना समृद्धिसूचक नाम - लछमिन - किसी को बताना नहीं चाहती थी । अत: महादेवी वर्मा ने उसकी कंठी माला को देखकर उसका नया नामकरण दिया - भक्तिन ।

3. भक्तिन अच्छी है , यह कहना कठिन होगा । लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?

भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं है। भक्तिन हर बात को अपने अनुकूल बना देने के लिए अति चतुर है । घर में इधर उधर पडा हुआ पैसा वह अपने पास रख लेती है । इसके अलावा वह परिस्थितियों के अनुरूप झूठ बोलने की कला में भी निपुण है । अत: लेखिका ने कहा कि भक्तिन अच्छी है , यह कहना कठिन होगा।

4. बिना पढे ही भक्तिन पढने वालों की गुरु क्यों बन गई ? स्पष्ट कीजिए ।

भक्तिन को अंगूठा निशानी देकर वेतन लेना नहीं होता , इसी से बिना पढे ही बह पढने वालों की गुरु बन बैठी । वह इंस्पैक्टर के समान कक्षा में घूम घूमकर किसी को आ , इ की बनावट , किसी के हाथ की मंथरता , किसी की बुद्धि की मंदता पर टिका टिप्पणी करने का अधिकार पा गई ।

5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया ?

स्त्रियों का सिर घुटाना महादेवी वर्मा को अच्छा नहीं लगता , अत: उन्होंने भक्तिन को रोका । भक्तिन को अकुंठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है - तीरथ गए मुंडाए सिद्ध । इस उक्ति के आधार पर भक्तिन ने अपना चूडाकर्म हर वृहस्पतिवार को किया करती थी ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दो 60ं में दीजिए ।

1. दो कन्या रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अन्धी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी । ऐसी घटनाओं से ही अक्सर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है । क्या इससे सहमत है?

भक्तिन को छोडकर अपने ससुराल में तीन बुजुर्ग महिलाएं थी - एक सास और दो जिठानियाँ । इन तीनों ने एक से अधिक पुत्रों को जन्म देकर अपनी महिमा को कायम रखा था । लेकिन भक्तिन ने तीन

पुत्रियों को जन्म दिया था । उत्तर भारतीय समाज में अशिक्षा और शास्त्र बोध के अभाव में लडकियों के प्रति अमानवीय व्यवहार किया करता था । ऐसा व्यवहार करने में बुजुर्ग महिलाएं भी पीछे नहीं थी ।इस सामाजिक परिवेश का प्रभाव भक्तिन की सास और जिठानियों पर भी पडा है । अत: इससे केवल स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बनने की दृष्टि से देखना असंगत होगा ।

2. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं , बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार या स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परम्परा का प्रतीक है । कैसे ?

पुराण में स्वयंवर का जिक्र है जो कि समाज में महिलाओं की महिमा का सूचक है । लेकिन मध्यकाल में आते ही समाज में महिलाओं का स्थान गिर गया और उसे भेड बकरियों की जैसी बिकने की प्रकृति बढती रही । आधुनिक जमाने में भी लडका लडकी में समानता अधिकतर दिखाई नहीं पडती । पुरुष वर्चस्व समाज में हर नियम और आचार संहिता को समाज ने पुरुषों के हित के अनुसार तोडा मरोडा है यहाँ महिलाएँ उसका शिकार बनती जा रही है । यहाँ भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरदस्ती पति थोपा गया जिसे आजीवन उसे सहना पडता है जोकि पुरुष वर्चस्व समाज का ही उदाहरण है ।

3. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गयी ?

महादेवी वर्मा का पूरा जीवन शहर से जुडा हुआ है । उनका भोजन भी शहरीला है । उन्हें दूध और घी अच्छा नहीं लगा। अत: भक्तिन ने रोटियों के साथ अमचूर और लाल मिर्च की चटनी बनाया करती थी । कभी कभी वह गांव से लाया हुआ गुड भी दे देती थी । अपने व्यक्तित्व के अनुसार भोजन के सम्बंध में भी भक्तिन के लिए किसी प्रकार के परिवर्तन की कल्पना तक सम्भव नहीं थी । भक्तिन गांव के खाद्य पदार्थ न केवल तैयार करती थी , बल्कि क्रियात्मक रूप से महादेवी वर्मा को सिखाती भी रहती थी । अत: महादेवी वर्मा शर में रहते हुए भी अधिक देहाती बनी ।

4. भक्तिन मूर्ख है या विद्या बुद्धि का महत्त्व नहीं जानती , यह कहना गलत है । महादेवी वर्मा ने ऐसा क्यों कहा ?

भक्तिन मूर्ख नहीं , बल्कि बडी चतुर है। शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती है । स्त्रियों का सिर घुटाना महादेवी वर्मा को अच्छा नहीं लगता , अत: उन्होंने भक्तिन को रोका । भक्तिन को अकुंठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है - तीरथ गए मुंडाए सिद्ध । भक्तिन हर बात को अपने अनुकूल बना देने के लिए अति चतुर है । घर में इधर उधर पडा हुआ पैसा वह अपने पास रख लेती है । इसके अलावा वह परिस्थितियों के अनुरूप झूठ बोलने की कला में भी निपुण है । बिना पढे ही बह पढने वालों की गुरु बन बैठी । इन सबसे पता चलता है कि भक्तिन मूर्ख नहीं है ।

5. भक्तिन और महादेवी वर्मा के बीच का सम्बंध कैसा है?

भक्तिन और महादेवी वर्मा के बीच में सेवक- स्वामी का सम्बंध होने पर भी ऐसा कहना पूर्ण रूप से सही नहीं है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता , जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं है जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हंस पडे । भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जैसे आंगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना । भक्तिन सदा समय महादेवी वर्मा के साथ छाया के रूप में साथ देती थी और कभी भी उनसे अलग होना नहीं चाहती थी ।

बाज़ार दर्शन

- जैनेंद्र कुमार

' बाज़ार दर्शन ' जैनेंद्र कुमार द्वारा रचित एक विचारात्मक निबंध है ।प्रस्तुत पाठ में लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि बाज़ार की जादुई ताकत कैसे मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है । साधारणतया बाज़ार में सामान सजासजा कर रखते है जिससे मानव का मन स्वयमेवा आकर्षित हो - जाता है । इस आकर्षण के कारण बहुत सारे सामान खरीदे जाते हैं और बाद में समझे जाते हैं कि इनमें से बहुत से सामान आवश्यक नहीं थे। प्रस्तुत पाठ इशारा करता है कि बाज़ार जाने से पहले ही इरादा तय करना है कि हमें क्याक्या खरीदने चाहिए ताकि बाज़ार के जादू का प्रभाव कम कर सकें।-

1,निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।

आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है । और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं , स्त्रीत्व का प्रश्न है । स्त्री माया न जोडे , तो क्या मैं जोड़ूँ ? फिर भी सच सच है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है । मूल में एक और तत्व की महिमा सविशेष है । वह तत्व है मनीबैग , अर्थात् पैसे की गर्मी या एनर्जी ।

1. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है ?

कबाजार प्रदर्शन । (

खबा (जार दर्शन ।

गबाजार का जादू । (

घबाजारूपन । (

2. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर पत्नी की प्रमुखता किस बात पर है ?

कवेशभूषा में (

खकला में - पाक (

गसजावट में । (

घपर्चेजिंग में । (

3. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर कौन सा कथन सही है ?

कपत्नी को समान - पति (बताया गया है ।

खपत्नी की महिमा बतायी (गई है ।

ग(पत्नी को पति ने बहुत सम्मान दिया है ।

घपत्नी की ओट ली जाती है । (
4. प्रस्तुत गद्यांश का प्रसंग निम्नलिखित में से कौन सा है ?
कपत्नी के बीच का तर्क । - पति (
ख पत्नी दोनों रसोई घर में - पति (कार्यरत हैं।
गदोनों ने बाजार जाकर बहुत जरूरी (सामान खरीदे ।
घदोनों ने बाजार जाकर बहुत से सामान खरीदे । (
5. प्रस्तुत गद्यांश का मूल भाव क्या है ?
कबाजार में अकेला जाना चहिए । (
खबाजार में जाते समय सदा पत्नी को साथ लेना चाहिए । (
गमनीबैग के आधार प (र सामान खरीदे जाते हैं ।
घआवश्यक सामान खरीदने चाहिए । बाजार में जाकर हमें हर (

.2निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।

लोग संयमी भी होते हैं । वे फ़िजूल सामान को फ़िजूल समझते हैं । वे पैसा बहाते नहीं है और बुद्धिमान होते हैं । बुद्धि और संयमपूर्वक वह पैसे को जोडते जाते हैं, जोडते जाते हैं । वह पैसे की पावर की इतना निश्चय समझते हैं कि उसके प्रयोग की परीक्षा उन्हें दरकार नहीं है। बस खुद पैसे के जुडा होने पर उनका मन गर्व से भरा फूला रहता है ।
1. प्रस्तुत गद्यांश का लेखक कौन है ?
क कुमारजैनेंद्र (
खजैनेंद्र यादव (
गजैनेंद्र द्विवेदी (
घजैनेंद्र नाथ (
2. प्रस्तुत गद्यांश में किस प्रकार के लोगों के बारे में बताया गया है ।
ककंजूस लोगों के बारे में (
खसामान्य लोगों के बारे में । (
ग खर्चीले (लोगों के बारे में ।
घमें । बुद्धिमान लोगों के बारे (
3. प्रस्तुत गद्यांश की शैली किस प्रकार की है ।
क उदाहरण शैली (
खविचारात्मक शैली (
गव्यंग्य शैली - हास्य (
घआत्मकथात्मक शैली (
4. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर बताइए कि मन कब गर्व से भरा फूला रहता है ?
कपैसा खर्च करने पर (
खबहुत सामान खरीदने पर (

गमन पसंद सामान खरीदने पर (
घअधिक पैसा संचय करने पर (
5. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर कौन सा कथन असत्य है ?
क जो पैसे बहाते नहीं है (, वे अपने को बुद्धिमान समझते हैं ।
खकुछ लोग पैसे की पावर समझकर खर्च न (हीं करते हैं ।
गखर्च करते हैं । कुछ लोग पैसे की पावर समझकर (
घकुछ लोग सदा पैसे जुटाने में लगे रहते हैं । (

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर 3 लिखिए ।

बाजार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है , वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो , और मन खाली हो , ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुंच पाएगा ।

1. बाजार के जादू का असर कब होता है ?
कजेब भरी और मन खाली (
खजेब खाली और मन भी खाली (
गदोनों स्थितियों में (
घतीनों उत्तर गलत हैं। (
2. मन खाली है इसका क्या आशय है -?
कमन शांत है। (
ख मन में समस्याएँ नहीं हैं (।
गमन में एकाग्रता है । (
घविचार नहीं है । मन में पक्का (
3. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर जादू का असर किस से होता है?
कधन सम्पत्ति के प्रति आकर्षण से (
ख(पैसों के प्रति आकर्षण से
गअधिकार के प्रति आकर्षण से (
घचीजों के प्रति आकर्षण से (
4. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर बताइए कि बाजार जाते समय हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए ?
कजेब भर देना चाहिए (
खजरूरी चीजों की सूची तैयार करनी है (
गमन खाली कर देना चाहिए (
घकिसी को अपने साथ ले जाना चाहिए । (
5. प्रस्तुत गद्यांश का विषय क्या है ?
क जेब भरी और मन (खाली
खबाजार का जादू (

गबाजार का असर (

घजादू का असर (

उत्तर सूची

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।

1, *1. खबाजार दर्शन । (*

2. घपर्चेजिंग में । (

3. घपत्नी की ओट ली जाती है । (

4. घसामान खरीदे । दोनों ने बाजार जाकर बहुत से (

5. गमनीबैग के आधार पर सामान खरीदे जाते हैं । (

जैनेंद्र कुमार (क 1 .2

2. ककंजूस लोगों के बारे में (

3 गव्यंग्य शैली - हास्य (

4. घअधिक पैसा संचय करने पर (

5.गकुछ लोग पैसे की पावर सम (झकर खर्च करते हैं ।

3. 1. गस्थितियों में दोनों (

2. घमन में पक्का विचार नहीं है । (

3. घचीजों के प्रति आकर्षण से (

4. खजरूरी चीजों की सूची तैयार करनी है (

5. खबाजार का जादू (

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में दीजिए । 40

1. बाजारूपन से क्या तात्पर्य है ?

बाजारूपन का मतलब है बाजार का आमंत्रण । बाजार में माल ऐसा सजा सजाकर रखते हैं मानो वह आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो । बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है जिससे आदमी को लगता है कि अपने पास काफी नहीं है और चाहिए और चाहिए । बाज़ारूपन से बाज़ार शैतान का जाल बन जाता है ।

2. किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं ? अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है ?

बाज़ार को सार्थकता वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है । दूसरे शब्दों में वही आदमी बाज़ार को सार्थकता प्रदान कर सकता है जिसका मन खाली न हो । मन खाली होने पर बाज़ार

न जाना चाहिए मन भरा रहने पर ग्राहक समझता है कि उसकी जरूरते क्या हैं ? बाज़ार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना ।

3. बाज़ार के जादू की विशेषताएँ क्या क्या हैं ?

बाज़ार एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है , जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है । सभी सामान जरूरी और आराम को बढावा देने वाला मालूम होता है । जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती , बल्कि खलल ही डालती है ।

4. बाज़ार के जादू से बचने का उपाय क्या है ?

बाज़ार के जादू की जकड से बचने का एक ही सीधा सा उपाय है कि बाज़ार आओ तो खाली मन न हो । मन खाली हो , तब बाज़ार न जाओ । मन लक्ष्य में भरा हो तो बाज़ार भी फैला का फैला ही रह जाएगा । तब वह घाव बिल्कुल नहीं दे सकेगा बल्कि कुछ आनंद ही देगा । मन भरा रहकर आवश्यकता के समय बाज़ार जाने पर बाज़ार के जादू से हम बच सकते हैं ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 60 शब्दों में दीजिए ।

1. बाजार के जादू चढने और उतरने पर मनुष्य पर क्या क्या असर पडता है ?

बाज़ार एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है , जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है । सभी सामान जरूरी और आराम को बढावा देने वाला मालूम होता है । जेब भरी हो, और मन खाली हो , ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो , तो भी जादू चल जाएगा । जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती , बल्कि खलल ही डालती है । थोडी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक मिल जाता है पर इससे अभिमान की गिल्टी की और खुराक ही मिलती है ।

2. बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन सा सशक्त पहलू उभरकर आता है ? क्या आपकी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है ?

भगत जी का मन भरा पडा था । वह संयमी भी है । वह जानता है कि वह किस प्रकार बाज़ार को सार्थकता प्रदान कर सकती है और बाज़ार उसे किस प्रकार प्रयोजनमूलक बना सकता है ? क्रय और विक्रय दोनों स्थितियों में उनका लक्ष्य पक्का निर्धारित है । न वह बाज़ारूपन बढा देता है और न वह बाज़ारूपन का शिकार बन जाता है अतउनमें बाजार का जादू चढने या उतरने की बात नहीं होती : जिससे बाज़ार सदा उसका साथी है ।

भगत जी का आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है क्योंकि उसके व्यवहार में खलल होने की कोई गुंजाइश नहीं है । कारण यह है कि उनका मन भरा हुआ है। कोई घाव नहीं है । बाज़ार उन्हें सदा आनंद ही आनंद प्रदान करता है ।

3. बाज़ार किसी का लिंग , जाति , धर्म या क्षेत्र नहीं देखता , वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय शक्ति को । इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है । आप इससे कहाँ तक सहमत है ?

साधारणतया बाज़ार में सिर्फ़ बाज़ारूपन है। सामान ऐसा सजा सजाकर रखता है कि मानो लगता है कि बाजार हमें आमंत्रित करता है जहाँ न कोई जाति भेद है , न लिंग भेद । बाज़ार की सार्थकता आवश्यकता के समय काम आना है । दुकानदार का लक्ष्य है अधिक से अधिक सामान बेच लेना और

ग्राहक का लक्ष्य है कम दाम में अधिक सामान खरीदना । अत: बाज़ार में धर्म भेद या क्षेत्रीयता जैसे विषयों के लिए कोई स्थान नहीं है । इस प्रकार देखते हैं तो हम पाते हैं कि बाज़ार ही ऐसा एकमात्र स्थान है जहाँ संकुचित वृत्तियों से आगे बढकर एक सानाजिक समता की भावना की झलक होती है ।

4. किस प्रकार का बाज़ार मानवता के लिए विडम्बना है ?

बाज़ारूपन बनने पर बाज़ार सच्चा लाभ ले नहीं सकता जिससे कपट बढता है और परस्पर में सद्भाव की कमी होती है । सद्भाव के ह्रास होने पर आदमी आपस में भाई भाई नहीं रह पाते । एक की हानि दूसरे का अपना लाभ दिखता है जिससे शोषण होने लगता है । ऐसी स्थिति में कपट सफल होता है , और निष्कपट शिकार होता है । ऐसे बाजार मानवता के लिए विडम्बना है और जो ऐसे बाज़ार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है , वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है । वह मायावी शास्त्र है । वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है ।

काले मेघा पानी दे

- धर्मवीर भारती

पाठ का सार

'काले मेघा पानी दे'- धर्मवीर भारती का एक प्रसिद्ध संस्मरण है। इसमें लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के बीच के द्वंद्व का चित्रण है ।विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामर्थ्य । इसमें कौन कितना सार्थक है ? इसी दुविधा को लेकर लेखन पानी के संदर्भ में पाठ की रचना की है। आषाढ़ का पहला पखवारा बीत जाने के बाद भी बारिश नहीं होती है । इस अवसर पर जीवन में खेती और बहुकाज प्रयोग से संबंधित अनेक चुनौतियां आ जाती है ।जीवन में आने वाली चुनौतियों का निराकरण विज्ञान न कर पाए तो उत्सव धर्मी भारतीय समाज चुप नहीं बैठता। वह शिक्षा और बेबसी के भीतर से उपाय ढूंढ कर किसी भी कीमत पर जीवित रहने के लिए इन समस्याओं का समाधान खोजता है। इस संस्मरण में लेखक के किशोर जीवन का चित्रण है। इसमें उन्होंने दिखाया है कि अनावृष्टि को दूर करने के लिए गांव के बच्चों की इंद्रसेना द्वार- द्वार पानी मांगने चलती है । लेखक का मन तर्कशील है ।भारत में विज्ञान की बहुत उन्नति हो गई है और नए- नए आविष्कारों के कारण लोगों का जीवन सुविधाओं से भरा हुआ है। लेकिन लोग अपने जीवन की समस्याओं को वैज्ञानिक दृष्टि से सुलझाना नहीं चाहते हैं और यह बहुत दुखद बात है।

लेखक के अनुसार मनुष्य के मन में बैठे विश्वास को हम लौकिक कर्मकांड या संस्कृति की घटना के रूप में लेते हैं ।वास्तव में उनकी राय में यह विश्वास यदि जानलेवा या नस्ल - जाति मज़हब और लिंग के आधार पर किसी समुदाय के लिए अपमानजनक है तो इसे अंधविश्वास समझना चाहिए और उसका शीघ्र निराकरण करना है । वह इस भीषण सूखे में इस प्रकार इंदर सेना के ऊपर पानी डालने की बात को पानी की बर्बादी के रूप देखता है और लेखक की राई में विश्वास तो आपातकाल में निराशा दूर करने या अधीरता को थामने या विभक्त जनचेतना को जोड़ने के अर्थ में ही लेना है। बारिश के लिए किए जाने वाले कार्य इसके अंदर नहीं आता है, इसलिए इसको अंधविश्वास समझ कर उसका निराकरण करना चाहिए।

लेखक अपनी जीजी की संतुष्टि केलिए और अपने प्रति उनके सद्भाव को बचाए रखने केलिए तमाम रीति-रिवाज़ों को ऊपरी तौर पर ही सही करने को बचपन में बाध्य हो जाता है । अंत में लेखक यह प्रश्न पाठकों को छोड़ देता है कि विज्ञान का सत्य बड़ा है या सहज प्रेम का ? या दोनों ?

पाठभाग पर आधारित प्रश्न :-

निम्नलिखित गदयांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1:

उन लोगों के दो नाम थे-इंदर सेना या मेढक-मंडली। बिलकुल एक-दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्नस्वरूप शरीर, उनकी उछल-कूद, उनके शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ काँदो से चिढ़ते थे, वे उन्हें कहते थे मेढ़क-मंडली। उनकी अगवानी गालियों से होती थी। वे होते थे दस-बारह बरस

से सोलह-अठारह बरस के लड़के, साँवला नंगा बदन सिर्फ एक जाँधिया या कभी-कभी सिर्फ़ लैंगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था, "बोल गंगा मैया की जय।" जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियाँ और लड़कियाँ छज्जे, बारजे से झाँकने लगती थीं और यह विचित्र नंग-धडंग टोली उछलती-कूदती समवेत पुकार लगाती थी :

क) गाँव से पानी माँगने वालों के नाम क्या थे?

1) मेढक-मंडली

2) इंदर सेना

3) मेढक-मंडली या इंदर सेना।

4) सोलह-अठारह बरस के लड़के ।

ख) मेढ़क-मंडली से क्या तात्पर्य है?

1) मेंढकों की मंडली ।

2) मेंढक की तरह उछल-कूद, शोर-शराबा व कीचड़ करते बच्चे ।

3) बच्चों की मंडली ।

4) इंदर सेना।

ग) मेढ़क-मंडली में कैसे लड़के होते थे?

1) दस-बारह वर्ष से सोलह-अठारह वर्ष के लड़के।

2) लैंगोटी पहनते छोटे लडके।

3) साँवले रंग के जाँधिया पहनते लडके।

4) दस-बारह वर्ष से सोलह-अठारह वर्ष के साँवले रंग के लैंगोटी या जाँधिया पहनते लड़के।

घ) इंदर सेना के जयकारे की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

1) इंदर सेना की जय" सुनते ही लोगों में हलचल मच जाती थी|

2) स्त्रियाँ और लड़कियाँ बारजे से इस टोली के क्रियाकलाप देखने लगती थीं|

3) जयकारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे।

4) उपर्युक्त सभी

ङ) ये पानी क्यों माँगते थे?

1) अनावृष्टि से उत्पन्न अपनी प्यास बुझाने केलिए ।

2) अनावृष्टि को दूर करने के लिए।

3) नहाने केलिए ।

4) उपर्युक्त कोई नहीं ।

गद्यांश :2

कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति ?

क) लेखक के मन को क्या बातें कचोटती हैं?

1) लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति केलिए मांगें करते हैं।

2) लोगों के मन में त्याग की चिंता बिल्कुल नहीं है ।

3) लोग अपना कर्तव्य बिल्कुल नहीं निभाते हैं ।

4) उपर्युक्त सभी ।

ख) गगरी तथा बैल के उल्लख से लेखक क्या कहना चाहता हैं?

1) गगरी देश में उपलब्ध बर्तन है और बैल एक जानवर ।

2) देश में संसाधनों की कमी नहीं है परंतु जनता की ज़रूरतें पूरी नहीं हो पातीं।

3) गगरी का पानी बैल को उपलब्ध नहीं होता है।

4) उपर्युक्त कोई नहीं है ।

ग) भ्रष्टाचार की चर्चा करते समय हमें क्या देखना आवश्यक हैं ?

1) इस पर ज़रुर विचार करना कि हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं?

2) भ्रष्टाचार देश में किन-किन क्षेत्रों में व्याप्त है ?

3) भ्रष्टाचार का निराकरण हम कैसे कर सकते हैं ?

4) उपर्युक्त कोई नहीं ?

घ) 'आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?'-आपके विचार से यह स्थिति कब बदल सकती है?

1) जब लोग स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार से दूरी बना लेंगे, तब।

2) जब समाज में इसे बदलने की दृढ़ इच्छा-शक्ति जाग्रत हो जाए,तब।

3) जब सरकार में इसे बदलने की दृढ़ इच्छा-शक्ति जाग्रत हो जाए,तब ।

4) उपर्युक्त तीनों

ङ) लेखक समाज की किस कुरीति को खत्म करना चाहता था?

1) अपराध

2) भ्रष्टाचार

3) अंधविश्वास

4) चोरी-डकैती

गद्यांश 3

लेकिन इस बार मैंने साफ़ इन्कार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भरकर पानी इस गंदी मेढक-मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भरकर पानी ले गईं-उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू-मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे भी तमतमाई, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोलीं, 'देख भइया, रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं, "तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है।"

क) लेखक ने किस काय से इनकार किया ?

1) मेढक-मंडली पर बाल्टी भर पानी डालने से इनकार कर दिया ।

2) ऋषि-मुनियों को दान देने से इनकार कर दिया ।

3) अंधविश्वास के प्रचार करने से इनकार कर दिया ।

4) जीजी के घर जाने से इनकार कर दिया ।

ख) पानी डालते समय जीजी की क्या हालत थी?

1) पानी डालते समय जीजी के हाथ काँप रहे थे।

2) पानी डालते समय जीजी के बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे।

3) जीजी लेखक से थोडी नाराज़ हुई।

4) उपर्युक्त सभी

ग) जीजी ने नाराज लेखक से क्या कहा?

1) जीजी ने नाराज लेखक से गुस्सा न करने को कहा।

2) जीजी ने लेखक से पूछा कि यदि हम इंद्र को अर्घ्य नहीं चढ़ाएँगे तो भगवान इंद्र हमें पानी कैसे देंगे?

3) जीजी ने नाराज लेखक को लड्डू-मठरी खाने को दिए।

4) जीजी ने ऋषि-मुनियों को बदनाम न करने केलिए कहा ।

घ) जीजी ने दान के पक्ष में क्या तर्क दिए?

1) जो हम पाना चाहते हैं, उसे पहले दान देना पड़ता है।

2) त्याग और भोग में कुछ संबंध नहीं ।

3) जीवन में त्याग करनेवाले की जीत होती है ।

4) मनुष्य को दानी होना अनिवार्य है

ङ) जीजी लेखक के हाथों पूजा अनुष्ठान क्यों कराती थी ?

1) लेखक के कल्याण के लिए

2) अपने कल्याण के लिए

3) सब के कल्याण के लिए

4) उपरोक्त सभी

उत्तर सूची

पाठभाग पर आधारित प्रश्न :-

गद्यांश 1 : क) 3- मेढक-मंडली या इंदर सेना।

ख) 2- मेंढक की तरह उछल-कूद, शोर-शराबा व कीचड़ करते बच्चे ।

ग) 4- दस-बारह वर्ष से सोलह-अठारह वर्ष के साँवले रंग के लँगोटी या जाँघिया पहनते लड़के।

घ) 4- उपर्युक्त सभी।

ङ) 2- अनावृष्टि को दूर करने के लिए।

गद्यांश 2

क) मेढक-मंडली पर बाल्टी भर पानी डालने से इनकार कर दिया ।

ख) देश में संसाधनों की कमी नहीं है परंतु जनता की ज़रूरतें पूरी नहीं हो पातीं।

ग) इस पर ज़रुर विचार करना कि हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं?

घ) 'उपर्युक्त तीनों

ङ) भ्रष्टाचार

गद्यांश 3

क) मेढक-मंडली या इंदर सेना।

ख) उपर्युक्त सभी

ग) जीजी ने लेखक से पूछा कि यदि हम इंद्र को अर्घ्य नहीं चढ़ाएँगे तो भगवान इंद्र हमें पान देंगे?

घ) जो हम पाना चाहते हैं, उसे पहले दान देना पड़ता है।

ङ) लेखक के कल्याण के लिए

प्रश्नोत्तर-

1 लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आप को इंदरसेना कहकर क्यों बुलाती थी ?

जो लोग लड़कों के नंगे शरीर ,उनकी उछल कूद, उनके शोर शराबे और उसके कारण-गली में होने वाली कीचड़ से चढ़ते थे, वे लड़कों की टोली को मेंढक मंडली कह कर पुकारते थे| लेकिन बच्चों की एक टोली अपने आप को इंदरसेना कहती थी क्योंकि उनके अनुसार वे इंद्र की सेना के सैनिक हैं और उसी के लिए लोगों से पानी मांगते हैं ताकि इंद्र बादलों के रूप में बरस कर सब को पानी दे सके ।जो लोग यह विश्वास करते थे कि इस तरह करने से इंद्र भगवान प्रसन्न होंगे और वर्षा करेंगे वे भी इन बच्चों को इंद्रसेना कहते थे|

2 जीजी ने इंद्रसेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

जीजी ने निम्नलिखित तर्कों के द्वारा इंद्रसेना पर पानी फेंके जाने को सही ठहराया -

जीजी के अनुसार हमें पहले देने का भाव अपने अंदर पैदा करना चाहिए उसके बाद लेने के बारे में सोचना चाहिए। हम इंद्रसेना को पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देगा ।यह पानी की बर्बादी नहीं है, इसे पानी का अर्घ्य चढ़ाना कहते हैं।

पहले त्याग करो फिर फल पाने की आशा करो। त्याग उस वस्तु का मान्य होता है जिसकी तुम्हें भी बहुत आवश्यकता है ।

खेती का उदाहरण देकर जीजी ने कहा कि इंद्रसेना पर पानी फेंकना एक तरह पानी की बुवाई करना है ।हम बीज बनाकर पानी देते हैं। फिर काले मेघा से पानी मांगते हैं ।इस प्रकार पानी वाले बादलों की फसल आ जाती है।

3 'पानी दे गुड़धानी दे' मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की मांग क्यों की जा रही है?

गुडधानी गुड और अनाज के मेल से बना मीठा खाद्य पदार्थ है। पानी बरसेगा तभी खेतों में गन्ना और धान उत्पन्न होगा। गन्ने से गुड बनेगा और गुड़ धानी तैयार हो जाएगी। इस तरह गुड़धानी का अर्थ इस संदर्भ में अनाज से हैं। बच्चे मेघों से पानी की मांग भी करते हैं ,जिससे उनकी प्यास बुझती है पर पेट भरने के लिए अनाज की आवश्यकता होती है। एक साथ दोनों की मांग की जाती है।

4 गागरी फूटी बैल पियासा' इंद्रसेना के इस खेल गीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

कृषि प्रधान भारतीय संस्कृति में किसानों के लिए बैल घर के सदस्य के समान ही है। बैल ही कृषि का आधार है ।यदि वे प्यासे हैं तो कृषि कार्य ठीक ढंग से नहीं हो सकता। वैसे भी पानी की आवश्यकता सभी को है -मनुष्य और जानवर सभी को। इसलिए इंद्रसेना सभी के लिए एक साथ पानी मांग रही है।

5 इंद्रसेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है ?नदियों का भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

गंगा भारत की सबसे पूज्य नदी है। गंगा मैया को हमारे भारतीय जनजीवन में विशेष आदर सम्मान प्राप्त है। प्रत्येक शुभ कार्य करने से पहले उसका स्मरण किया जाता है ।नदियों के किनारे ही नई सभ्यताओं ने जन्म ली है। कृषि प्रधान भारतीय समाज का आधार ही नदी है। नदियों को मोक्षदायिनी भी माना जाता है। इसमें गंगा का स्थान सर्वोपरि है अतः सभी नदियों का प्रतिनिधित्व करते हुए गंगा मैया की जय बोला जाता है ।

6 रिश्तो में हमारी भावना शक्ति का बंट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए|

यह सत्य है कि निस्वार्थ प्यार मनुष्य की संवेदनाओं को स्पर्श करता है और उसे कभी दुर्बल भी बनाता है। पाठ में लेखक का जीजी के साथ भावनात्मक संबंध है ।उसके निस्वार्थ प्यार के सामने वह अपने आदर्श के साथ भी समझौता करने को विवश हो जाता है ।उसके तर्कों के सामने उसकी बुद्धि की शक्ति कमजोर पड़ जाती है। वह वे सारे काम करने को तैयार हो जाता है जिन पर वह विश्वास नहीं करता ।वह त्योहारों पर उन अनुष्ठानों को करता है जिनको जड़ से उखाड़ने की बातें बाहर करता रहता है। इस तरह जीजी का निस्वार्थ प्यार लेखक के मन के वैज्ञानिक चिंतन को भी हिला देता है।

पहलवान की ढोलक

-फणीश्वर नाथ रेणु

पाठ का सारांश

'पहलवान की ढोलक' फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित एक श्रेष्ठ कहानी है।

इस कहानी में श्यामनगर के समीप का एक गाँव सरदी के मौसम में मलेरिया और हैजे से ग्रस्त था। चारों ओर सन्नाटे से युक्त बाँस-फूस की झोंपड़ियाँ खड़ी थीं। रात्रि में घना अंधेरा छाया हुआ था। चारों ओर करुण सिसकियों और कराहने की आवाजें गूंज रही थीं।। सियारों और पेचक की भयानक आवाजें इस सन्नाटे को बीच-बीच में अवश्य थोड़ा-सा तोड़ रही थीं। इस भयंकर सन्नाटे में कुत्ते । समूह बाँधकर रो रहे थे। रात्रि भीषणता और सन्नाटे से युक्त थी, लेकिन लुट्टन पहलवान की ढोलक इस भीषणता को तोड़ने का प्रयास कर रही थी। इसी पहलवान की ढोलक की आवाज इस भीषण सन्नाटे से युक्त मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरा करती थी।

लुट्टन सिंह के माता-पिता नौ वर्ष की अवस्था में ही उसे छोड़कर चले गए थे। उसकी बचपन में शादी हो चुकी थी, इसलिए विधवा सास ने ही उसका पालन-पोषण किया। ससुराल में पलते-बढ़ते वह पहलवान बन गया था। एक बार श्यामनगर में एक मेला लगा। मेले के दंगल में लुट्टन सिंह ने एक प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दे डाली, जो शेर के बच्चे के नाम से जाना जाता था। श्यामनगर के राजा ने बहुत कहने के बाद ही लुट्टन सिंह को उस पहलवान के साथ लड़ने की आज्ञा दी, क्योंकि वह एक बहुत प्रसिद्ध पहलवान था।

लुट्टन सिंह ने ढोलक की 'धिना-धिना, धिकधिना', आवाज से प्रेरित होकर चाँद सिंह पहलवान को बड़ी मेहनत के बाद चित कर दिया। चाँद सिंह के हारने के बाद लुट्टन सिंह की जय-जयकार होने लगी और वह लुट्टन सिंह पहलवान के नाम से प्रसिद्ध हो गया। राजा ने उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे अपने दरबार में रख लिया। अब लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। लुट्टन सिंह पहलवान की पत्नी भी दो पुत्रों को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गई थी।

लट्टन सिंह अपने दोनों बेटों को भी पहलवान बनाना चाहता था,इसलिए वह बचपन से ही उन्हें कसरत आदि करवाने लग गया। उसने बेटों को दंगल की संस्कृति का पूरा ज्ञान दिया। लेकिन दुर्भाग्य से Jएक दिन उसके वयोवृद्ध राजा का स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात विलायत से नए महाराज आए। राज्य की गद्दी संभालते ही नए राजा साहब ने अनेक परिवर्तन कर दिए। दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। बेचारे लुट्टन सिंह पहलवान पर कुठाराघात हुआ। वह हतप्रभ रह गया। राजा के इस रवैये को देखकर लुट्टन सिंह अपनी ढोलक कंधे में लटकाकर बच्चों सहित अपने गाँव वापस लौट आया। वह गाँव के एक किनारे पर झोपड़ी में रहता हुआ नौजवानों और चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। गाँव के किसान व खेतिहर मजदूर भला क्या कुश्ती सीखते। अचानक गाँव में अनावृष्टि अनाज की कमी, मलेरिया, हैजे आदि भयंकर समस्याओं का वज्रपात हुआ। चारों ओर लोग भूख, हैजे और मलेरिये से मरने लगे। सारे गाँव में तबाही मच गई। लोग इस त्रासदी से इतना डर गए कि सूर्यास्त होते ही अपनी-अपनी । झोंपडियों में घस जाते। रात्रि की विभीषिका और सन्नाटे को केवल लट्टन सिंह पहलवान की ढोलक की तान ही ललकारकर चुनौती देती थी। यही तान इस भीषण समय में धैर्य प्रदान करती थी। यही तान शक्तिहीन गाँववालों में

संजीवनी शक्ति भरने का कार्य करती थी।
पहलवान के दोनों बेटे भी इसी भीषण विभीषिका के शिकार हुए। प्रातः होते ही पहलवान ने अपने दोनों बेटों को निस्तेज पाया। बाद में वह अशांत मन से दोनों को उठाकर नदी में बहा आया। लोग इस बात को सुनकर दंग रह गए। इस असह्य वेदना और त्रासदी से भी पहलवान नहीं टूटा। रात्रि में फिर पहले की तरह ढोलक बजाता रहा; इससे लोगों को सहारा मिला, लेकिन चारपाँच - दिन बीतने के पश्चात जब रात्रि में ढोलक की आवाज सुनाई नहीं पड़ी, तो प्रातकाल उसके कुछ : शिष्यों ने पहलवान की लाश को सियारों द्वारा खाया हुआ पाया। इस प्रकारप्रस्तुत कहानी के अंत में पहलवान भी भूखमहामारी की शक्ल में आई मौत का शिकार बन गया। यह कहानी हमारे - ने की समक्ष व्यवस्था की पोल खोलती है। साथ ही व्यवस्था के कारण लोक कलाओं के लुप्त हो ओर संकेत भी करती है तथा हमारे सामने ऐसे अनेक प्रश्न पैदा करती है कि यह सबक्यों हो रहा है?

<u>बहुविकल्पीय प्रश्न</u>

1. सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी | गांव की झोंपडियों से कराहने और कै करने की आवाज़,'हरे राम! हे भगवान!' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी | बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठो से माँ - माँ पुकारकर रो पड़ते थे | पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी |

कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है | वे दिन भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे | संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे |

रात्रि अपनी भीषणताओं के साथ चलती रहती और उसकी सारी भीषणता को, ताल ठोककर ललकारती रहती थी - सिर्फ पहलवान की ढोलक !

अ. रात्रि की निस्तब्धता का क्या कारण था
क. महामारी का फैलना
ख. विदेशी आक्रमण
ग. भयानक गरीबी
घ. अँधेरी रात
ब. निस्तब्धता किन कारणों से और अधिक भयानक हो रही थी ?
क. झोंपडियों से कराहने और कै करने की आवाज़ से
ख. सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ से
ग. बच्चों के रोने की आवाज़ से
घ. उपर्युक्त सभी
स. किसमें परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है?
क. मनुष्यों में
ख. पेड़-पौधों में

ग. कुत्तों में
घ. बच्चों में

ड. रात्रि की भीषणता को कौन ललकारता था ?
क. लुट्टन सिंह
ख. पहलवान की ढोलक
ग. राजा
घ. महामारी
इ. गद्यांश में किस पहलवान का उल्लेख है ?
क. चाँद सिंह
ख. लुट्टन सिंह
ग. श्याम सिंह
घ. दारा सिंह

2. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अद्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य विहीन प्राणियों में यह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्तिशून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे। जिस दिन पहलवान के दोनों बेटे क्रूर काल की चपेटाघात में पड़े, असह्वा वेदना से छटपटाते हुए दोनों ने कहा था - " बाबा ! उठा पटक दो वाला ताल बजाओ |"

अ. पहलवान की ढोलक किसे ललकार लगाती थी ?
क. पहलवान को
ख. रात्रि की विभीषिका को
ग. संजीवनी शक्ति को
घ. इनमें से कोई नहीं
ब. "बाबा उठा पटक दो वाला ताल बजाओ" यह किसने कहा ?
क. गांव वालों ने
ख. दंगल के पहलवानों ने
ग. पहलवान के लड़कों ने
घ. ये सभी
स. गद्यांश में गांव की किस स्थिति का वर्णन है ?

क. दंगल का दृश्य
ख. महामारी का दृश्य
ग. स्कूल का दृश्य
घ. चुनाव का दृश्य
ड. बूढ़े बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य क्यों नाचने लगता ?
क. पहलवान को देखकर
ख. पहलवान के बेटों को देखकर
ग. पहलवान की ढोलक की आवाज़ सुनकर
घ. पेचक की आवाज़
इ. गांव में संजीवनी शक्ति का काम कौन कराती है ?
क. पहलवान की आवाज़
ख. ढोलक की आवाज़
ग. गायों की आवाज़
घ. पेचक की आवाज़
3. विजयी लुट्टन कूदता-फाँदता, ताल ठोंकता सबसे पहले बाजे वालों की ओर दौड़ा और ढोलों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया | फिर दौड़कर उसने राजा साहब को गोद में उठा लिया | राजा साहब के कीमती कपडे मिट्टी में सन गए | मैनेजर साहब ने आपत्ति की - "हें - हें .... अरे - रे!" किन्तु राजा साहब ने स्वयं उसे छाती से लगाकर गद्गद होकर कहा - "जीते रहो बाहदूर! तुमने मिट्टी की लाज रख ली!"

पंजाबी पहलवानों की जमायत आँखे पोंछ रही थी | लुट्टन को राजा साहब ने पुरस्कृत ही नहीं किया, अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया | तब से लुट्टन राज-पहलवान हो गया और राजा साहब उसे लुट्टन सिंह कहकर पुकारने लगे | राज पंडितों ने मुंह बिचकाया -"हुज़ूर ! जाति का ..... सिंह !"

अ. लुट्टन ने विजयी होने पर सबसे पहले किसे प्रणाम किया?
क. राजा को
ख. सास को
ग. भगवान् को
घ. ढोल को
ब. लुट्टन द्वारा राजा साहब को गोद में उठाने पर किसने आपत्ति की ?
क. राजा साहब ने
ख. मैनेजर ने
ग. राज पंडितों ने
घ. पंजाबी पहलवानों ने
स.राजा साहब ने लुट्टन को किस प्रकार पुरस्कृत किया?

क. इनाम देकर
ख. प्रशंसा कर
ग. गले लगाकर
घ. राज पहलवान बनाकर
ड. पंजाबी पहलवान किसकी आँखे पोंछ रहे थे ?
क. चाँद सिंह की
ख. लुट्टन की
ग. राजा साहब की
घ. मैनेजर की
इ. राज पंडितों द्वारा लुट्टन की विरोध से समाज की किस बुराई की ओर संकेत किया गया है ?
क. दास प्रथा की ओर
ख. जाति प्रथा की ओर
ग. क्षेत्रीयता की ओर
घ. सांप्रदायिकता की ओर
उत्तर
1.
अ. क ब. घ स. ग ड. ख इ. ख
2.
अ. ख ब. ग स. ख ड. ग इ. ख
3.
अ. घ ब. ख स. घ ड. क इ. ख

दो अंक वाले प्रश्न

1. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्न के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर:

लुट्न पहलवान का जीवन उतारचार होना -सुख से उसे दो-चढ़ावों से भरपूर रहा। जीवन के हर दुख-पड़ा।सबसे पहले उसने चाँद सिंह पहलवान को हराकरे राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया। फिर काला खाँ को भी परास्त कर अपनी धाक आसपास के गाँवों में स्थापित कर ली। वह पंद्रह वर्षों तक अजेय पहलवान रहा। अपने दोनों बेटों को भी उसने राजाश्रित पहलवान बना दिया। राजा के मरते ही उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से राजकुमार ने आते ही पहलवान और उसके दोनों बेटों को राजदरबार से अवकाश दे दिए। गाँव में फैली बीमारी के कारण एक दिन दोनों बेटे चल बसे। एक दिन पहलवान भी चल बसा और उसकी लाश को सियारों ने खा लिया। इस प्रकार दूसरों को जीवन संदेश देने वाला पहलवान स्वयं खामोश हो गया।

2. **पहलवान की ढोलक की उठती-गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है?**

उत्तर

महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज बूढ़े-बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

3. **गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढ़ोल क्यों बजाता रहा ?**

उत्तर:

- लुट्टन पहलवान ने कभी कुश्ती नहीं हारी थी | ढ़ोल की आवाज़ सुनते ही उसमे शक्ति का संचार हो जाता था | वह ढ़ोल को ही अपना गुरू मानता था | वह यह भी मानता था कि इसकी आवाज़ गाँववालों में उत्साह का संचार कर देगी , जिससे वे महामारी का सामना डटकर कर सकेंगे |
- इसलिए वह सारी रात अपने पुत्रों की सहायता से गाँववालों के परोपकार हेतु ढोल बजता रहता | उसने मौत के सन्नाटे को चीरने के लिए और अपने पुत्रों की मृत्यु के पश्चात भी जीवन के उत्साह को बनाए रखने के लिए ढोल बजाना जारी रखा |

4. **गाँव में फैली बीमारी से उत्पन्न गाँव की दशा का चित्रण कहानीकार ने किस प्रकार किया है?**

उत्तर:

गाँव में महामारी ने पाँव पसार लिए थे। चारों ओर मौत का भयानक तांडव फैला था। रेणु' लिखते हैं कि सियारों का क्रंदन और चेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़ 'हरे राम, हे भगवान! की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे कभी-कभी निर्बल कंठों से माँ-माँ पुकारकर रो पड़ते थे।

5. 'पहलवान की ढोलक' कहानी में किस प्रकार पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या को व्यक्त किया गया है? लिखिए।

उत्तर -

'पहलवान की ढोलक कहानी में पुरानी व्यवस्था और नई व्यवस्था के टकराव से उत्पन्न समस्या यह है-

1. पुरानी व्यवस्था में कलाकारों और पहलवानों को राजाओं का आश्रय एवं संरक्षण प्राप्त था। वे शाही खर्च पर जीवित रहते थे, पर नई व्यवस्था में ऐसा न था।
2. पुरानी व्यवस्था में राज-दरबार और जनता द्वारा इन कलाकारों को मान सम्मान दिया जाता

था, पर नई व्यवस्था में उन्हें सम्मान देने का प्रचलन न रहा।

तीन अंक वाले प्रश्न

1. पहलवान की ढोलक पाठ का एक संदेश यह भी है कि लोककलाओं को संरक्षण दिया जाना चाहिए। अपने विचार लिखिए।

उत्तर

लेखक ने इस कहानी में भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या को श्यामनगर के राजा श्यामानंद के बदलने पर नए विलायती राजा के श्यामनगर का राजा बनने की व्यवस्था के प्रतीक रूप में उद्घाटित किया है। यहाँ श्यामनगर का राजा लोक संस्कृति का शौकीन था इसलिए वह वहाँ प्रतिवर्ष दंगल और कुश्ती का आयोजन करवाया करता था।

उसने लुट्टन सिंह पहलवान की वीरता को देखकर भी उसे राज परिवार का पहलवान नियुक्त कर दिया था तथा लुट्टन सिंह का सारा खर्च भी राजा के खजाने से चलता था लेकिन उसकी मृत्यु के पश्चात वहाँ एक नया विलायती राजा आया तो उसने आते ही दंगल को घोड़ों की रेस में बदल दिया तथा लुट्टन सिंह को भी दिया जाने वाला सम्मान और खर्च बंद करा दिया। उसे लोक संस्कृति बिल्कुल भी पसंद नहीं थी।

इसलिए उसने अपने राज्य में विलायती संस्कृति को फैलाने का प्रयास किया। जिसके परिणामस्वरूप धीरे-धीरे राज व्यवस्था बदलकर नए स्वरूप में ढल गई और लोक संस्कृति विलुप्त होने लगी। इस प्रकार इस पाठ से हमें यह संदेश भी मिलता है कि लोककलाओं को भी संरक्षण दिया जाना चाहिए।

2. 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लुट्टन का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर

लुट्न पहलवान के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

1. **व्यक्तित्व-** लुट्टन सिंह लंबा-चौड़ा व ताकतवर व्यक्ति था। वह लंबा चोंगा पहनता था तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधता था। वह इकलौती एवं अनाथ संतान था। अतः उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया था।

2 **भाग्यहीन**-लुट्टन का भाग्य शुरू से ही खराब था। बचपन में माता-पिता गुजर गए। पत्नी युवावस्था में ही चल बसी थी। उसके दोनों लड़के महामारी की भेंट चढ़ गए। इस प्रकार वह सदैव पीड़ित रहा।

3 **साहसी**-लुट्टन साहसी था। उसने अपने साहस के बल पर चाँद सिंह जैसे पहलवान को चुनौती दी तथा उसे हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे पहलवान को भी चित कर दिया। महामारी में भी वह सारी रात ढोल बजाता था।

4. **संवेदनशील**-लुट्टन में संवेदना थी। वह अपनी सास पर हुए अत्याचारों को सहन नहीं कर सका और पहलवान बन गया। गाँव में महामारी के समय निराशा का माहौल था। ऐसे में वह रात में

ढोल बजाकर लोगों में जीने के प्रति उत्साह पैदा करता था।

3. राजा साहब ने लुट्टन को क्यों सहारा दिया था? अंत में उसकी दुर्गति होने का क्या कारण था? तर्क सहित उत्तर लिखिए |

उत्तर: लुट्टन ने बचपन से ही कुश्ती सीखी। उसने चाँद पहलवान को हरा दिया। श्यामनगर के मेले के दंगल में उसने यह चमत्कार दिखाया। राजा साहब ने उसे आश्रय दिया। इसके बाद उसने सभी नामी पहलवानों को हरा दिया। अब वह दर्शनीय जीव बन गया था। पंद्रह साल तक वह राजदरबार में रहा। उसने दोनों बेटों को भी पहलवानी में उतारा। राजा साहब के मरने के बाद नए राजा को घुड़सवारी में रुचि थी। उसने पहलवान व उसके बेटों को राजदरबार से निकाल दिया। अब वह गाँव आकर रहने लगा। यहाँ उसे भोजन भी मुश्किल से मिलता था। महामारी ने उसके बेटों को छीन लिया। उनके चार-पाँच दिन बाद वह भी मर गया। व्यवस्था के बदलने पर अधिकारियों का इस बात का ख्याल रखना चाहिए था कि उन लोक कलाकारों की जीविकोपार्जन कैसे होगा |

4. पहलवान लुट्टन को 'राजदरबार का दर्शनीय जीव-' क्यों कहा जाता था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-राजा साहब के पास एक बाघ था। उसके दहाड़ने पर लोग कहतेराजा का बाघ बोल रहा है। -... ठाकुर बाड़े के सामने पहलवान के गजरने पर लोग समझ लेते कि राजदरबार का पहलवान दहाड़ रहा है। लुट्टन से बराबरी करने वाला कोई पहलवान नहीं रह गया था। इसी कारण उसे'राज-दरबार का दर्शनीय जीव' कहा जाता था।

5. ढोलक की थाप मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी - कला से जीवन के संबंध को ध्यान में रखते हुए अपना विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर:- कला व्यक्ति के मन में बसी हुई स्वार्थ, परिवार, धर्म, भाषा और जाति आदि की सीमाएँ को मिटाकर मानव मन को विस्तृता और व्यापकता प्रदान करती है। व्यक्ति के मन को उदात्त बनाती है।

कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। आत्मसंतोष एवं आनंद की अनुभूति भी इसके ज्ञानार्जन से ही होती है और इसके मंगलकारी प्रभाव से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। जब यह कला संगीत के रुप में उभरती है तो कलाकार गायन और वादन से स्वयं को ही नहीं श्रोताओं को भी अभिभूत कर देता है। मनुष्य आत्मविस्मृत हो उठता है। दीपक राग से दीपक जल उठता है और मल्हार राग से मेघ बरसना यह कला की साधना का ही चरमोत्कर्ष है।

भाट और चारण भी जब युद्धस्थल में उमंग, जोश से सरोबार कविता-गान करते थे तो वीर योद्धाओं का उत्साह दोगुना हो जाता था तो युद्धक्षेत्र कहीं हाथी की चिंघाड़, तो कहीं घोड़ों की हिनहिनाहट तो कहीं शत्रु की चीत्कार से भर उठता था यह गायन कला की परिणति ही तो है। इसी प्रकार मानव कला के हर एक रूप काव्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला और रंगमंच से अटूट संबंध है।

'शिरीष के फूल '

- हज़ारी प्रसाद द्विवेदी।

अपने लेखन द्वारा निबंध विधा को सर्जनात्मक साहित्य की कोटि में ला देने वाले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के ललित निबंध 'शिरीष के फूल' आपके निबंध संग्रह 'कल्पलता' से उद्धृत है। लेखक के अनुसार शिरीष के फूल मनुष्य की दृढ़ इच्छाशक्ति और जिजीविषा के प्रतीक है। लेखक ने आंधी लू तथा गर्मी की प्रचंडता में अवधूत की भांति स्थिर रहने वाले शिरीष की तरह व्यक्ति को भी प्रत्येक परिस्थिति में धैर्यवान और कर्तव्यशील बने रहने के लिए प्रेरित किया है। यह निबंध लेखक के प्रतिनिधि निबंधों में से एक है। इस निबंध का शिल्प ईक्षुदंड की तरह है- सांस्कृतिक संदर्भ एवं शब्दावली के भड़कीले खोल के भीतर सहज भावधारा के मधुरस से युक्त।

बहुविकल्पी प्रश्न

1, भीषण गर्मी और लू के बीच किस पेड के फूल खिले रहते हैं?

(क) अशोक

(ख) अमलतास

(ग) शिरीष

(घ) वट

2.लेखक ने शिरीष की तुलना किससे की है?

(क) अवधूत से

(ख) गृहस्थ से

(ग) अग्नि से

(घ) सेवक से

3.संस्कृत साहित्य में शिरीष के फूल को क्या माना गया है ?

(क) कठोर

(ख) ठंडा

(ग) स्वच्छ

(घ) कोमल

4.कालिदास ने शिरीष के फूलों के बारे में क्या लिखा है?

(क) शिरीष के फूल कठोर होते हैं

(ख) केवल भौंरों के पैरों का दबाव ही सह सकता है

(ग) हल्के और मजबूत होते हैं

(घ) केवल चिड़ियों के पैरों का दबाव ही सह सकता है

5.लेखक ने जगत के अति प्रामाणिक सत्य किसे माना है?

(क) जरा और मृत्यु को

(ख) धन और दौलत को
(ग) माया और मोह को
(घ) गृहस्थ और सन्यासी को

6.संसार की सबसे सरस रचनाएं किनके मुंह से निकली है?
(क) गृहस्थों के मुंह से
(ख) राजाओं के मुंह से
(ग) अवधूतों के मुंह से
(घ) इनमें से कोई नहीं

7.कर्णाट राज की रानी विज्जिका ने किन्हें सर्वश्रेष्ठ कवि माना है ?
(क) ब्रह्मा जी को
(ख) वेद व्यास जी को
(ग) बाल्मीकि जी को
(घ) इनमें से सभी को

8.राजा दुष्यंत द्वारा शकुंतला के बनाए गए चित्र में क्या कमी रह गई थी?
(क) शकुंतला की भौंहें तिरछी थी
(ख) कानों में शिरीष का फूल पहनाना भूल गए
(ग) केश सज्जा ठीक से नहीं कर पाए
(घ) गले का हार पहनाना भूल गए

9.लेखक ने सुमित्रानंदन पंत को क्यों महत्व दिया है?
(क) उन्होंने प्रकृति के सूक्ष्म रूप का चित्रण किया है
(ख) लेखक से उनकी मित्रता थी
(ग) दूसरे कवियों की तरह ही उन्होंने रचनाएं की हैं
(घ) कालिदास और सुमित्रानंदन पंत एक ही भाषा के कवि है

10.कालिदास शकुंतला का वर्णन करने में क्यों सफल रहे ?
(क) क्योंकि उन्हें संस्कृत का ज्ञान था
(ख) क्योंकि वह जंगल में अकेले रहते थे
(ग) क्योंकि उन्हें भगवती का काली का वरदान प्राप्त था
(घ) क्योंकि वह विदग्ध, अनासक्त, स्थिर प्रज्ञ प्रेमी थे।

उत्तर

1.(ख), 2. (क), 3. (घ),4. (ख),5. (क),6. (ग),7. (घ),8. (ख), 9.(क), 10.(घ).

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30- शब्दों में दीजिए। 40

1. लेखक के अनुसार' शिरीष के फूल' पाठ का उद्देश्य क्या है?

उत्तर. लेखक ने इस पाठ के माध्यम से मानव की अजेय जिजीविषा और कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंता रत , कर्तव्यशील बने रहने का महान मानवीय मूल्यों को स्थापित किया है। लेखक शिरीष के पुराने फलों की अधिकार लिप्सा तथा नए पत्ते एवं फलों द्वारा उन्हें धक्का देकर बाहर निकालने में साहित्य, समाज व राजनीति में पुरानी और नई पीढ़ी के द्वंद्व की ओर भी संकेत करता है।

2. लेखक को शिरीष के विषय में वनस्पति शास्त्री ने क्या बताया?

उत्तर. वनस्पति शास्त्री ने लेखक को बताया कि शिरीष उस श्रेणी का वृक्ष है, जो वायुमंडल से अपना रस स्वयं खींचता है। इसी कारण शिरीष का फूल भयंकर गर्मी में भी सरस बना रहता है। ज्येष्ठ की प्रचंड गर्मी में भी शिरीष पुष्प के खिले रहने के कारण इसे शीत पुष्प भी कहा जाता है । शिरीष ही एकमात्र ऐसा वृक्ष है जो हमेशा पुष्पित पल्लवित रहता है और हमें शीतलता प्रदान करता है।

3. कबीर और कालिदास के बारे में लेखक क्या बताता है?

उत्तर. कबीर और कालिदास के बारे में लेखक बताता है कि कबीर मस्त और बेपरवाह होते हुए भी सरसता तथा मादकता से युक्त थे। कालिदास भी अनासक्त योगी की तरह थे इसी कारण वे मेघदूत काव्य का निर्माण कर सकें। भारत के इतिहास में कबीर और कालिदास का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा गया है।

4. शिरीष के फल किस तरह के व्यक्ति की प्रवृत्ति के प्रतीक है?

उत्तर. शिरीष के फल बहुत ही कठोर होते हैं। ये नये फूल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। इसलिए शिरीष के फल उन व्यक्तियों के प्रतीक है जो सत्ता को छोड़ना नहीं चाहते ।जैसे अधिकांश राजनीतिक नेता अपनी सत्ता छोड़ना नहीं चाहते वह हर तरीके से नयी पीढ़ी को आगे आने से रोकना चाहते हैं।

5. संस्कृत साहित्य में शिरीष की महिमा का उल्लेख किस प्रकार किया गया है ?

उत्तर. शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। इसके फूल बहुत नाजुक होते हैं। वे केवल भौरों के पदों का ही भार सहन कर सकते हैं। पक्षियों के पैरों का भी नहीं । शिरीष के फूल की इसी महिमा का संस्कृत साहित्य में उल्लेख हुआ है।

III.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-**60** शब्दों में दीजिए।

1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है?

उत्तर. काल के समक्ष भी विजयी रहने वाला कालजयी कहलाता है। शिरीष का वृक्ष अवधूत की भांति बसंत के आने से लेकर भाद्रपद मास तक बिना किसी परेशानी के पुष्पित होता रहता है।

जब ग्रीष्म ऋतु में सारी पृथ्वी अग्नि कुंड की तरह जलने लगती है, लू के कारण हृदय भी सूखने लगता है तो उस समय भी शिरीष का वृक्ष कालजयी अवधूत की तरह जीवन में विजेता होने का प्रदर्शन कर रहा होता है। वह संसार के सभी प्राणियों को धैर्यशील , चिंता रहित व कर्तव्य शील बने रहने के लिए प्रेरित करता है। यही कारण है कि लेखक इसे अवधूत की तरह मानता है।

2.हाय वह अवधूत आज कहां है? ऐसा कह कर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर. हाय, अवधूत आज कहां है? निबंध की अंतिम पंक्ति है। इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहता है कि महात्मा गांधी शिरीष के फूल की भांति थे। लेखक के अनुसार प्रेरणादाई और आत्मविश्वास रखने वाले लोग अब रहे ही नहीं। अब केवल शरीर यानी भौतिकता को प्राथमिकता देने वाले लोग ही रह गए हैं । ऐसे लोगों में आत्मविश्वास बिल्कुल नहीं होता ऐसे लोग मन की सुंदरता पर ध्यान नहीं देते । आज के खून -खच्चर और मार-काट के बीच देहबल पर आत्मबल के वर्चस्व के प्रतीक गांधी जैसे अनासक्त योगी न रहेंगे तो मानवता ही ध्वस्त हो जाएगी।

श्रम विभाजन और जाति-प्रथा

-बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर

प्रस्तुत पाठ भारतीय संविधान के निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के भाषण का हिंदी रूपांतर है ।यह भाषण जाति- पांति तोडक मंडल के वार्षिक सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण के रूप में दिया जाना था, किंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्ण सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन ही स्थगित हो गया और यह भाषण पढ़ा नहीं जा सका ।बाद में डॉक्टर अंबेडकर ने इसे स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में छपवाया। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर सदैव जातिगत भेदभाव का विरोध करते रहे । इसे जड़ से मिटाने की उनकी हार्दिक इच्छा अभी कुछ सीमा तक ही पूरी हुई है। विडंबना की बात तो यह है कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है । डॉक्टर अंबेडकर के अनुसार समता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृता ये तीन तत्व आदर्श समाज में अनिवार्यतः होने चाहिए ,जिससे लोकतंत्र सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया के अर्थ तक भी पहुंचे ।

बहुविकल्पी प्रश्न

जाति प्रथा के समर्थक किस कारण से जाति -प्रथा का पोषण करते हैं?

(क) यह कार्य कुशलता के लिए आवश्यक है

(ख) इससे समाज में अव्यवस्था फैलती है

(ग) समाज में लोगों की पहचान बनी रहती है

(घ) इनमें से कोई नहीं

2. जाति प्रथा स्वस्थ समाज के लिए एक बुराई क्यों है?

(क) यह श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए हैं

(ख) यह मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बांध देती हैं

(ग) यह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने से रोकती है

(घ) इनमें से सभी

3.लेखक ने भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण किसे बताया है?

(क) श्रम विभाजन को

(ख) जाति प्रथा को

(ग) स्वतंत्रता को

(घ) इनमें से कोई नहीं

4. लेखक के अनुसार जाति प्रथा कौन सा पेशा करने की अनुमति देती हैं?

(क) निजी पेशा

(ख) स्वतंत्र पेशा

(ग) पैतृक पेशा

(घ) इनमें से कोई नहीं

5.स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित समाज को लेखक ने कैसा समाज कहां है?

(क) मिश्रित समाज

(ख) स्वतंत्र समाज

(ग) आदर्श समाज

(घ) बहुल समाज

6. लेखक ने कितने तरह की दासता का उल्लेख किया है?

(क) दो तरह की

(ख) तीन तरह की

(ग) चार तरह की

(घ) पांच तरह की

7. समता शब्द का नारा किस क्रांति में लगाया गया था ?

(क) रूसी क्रांति में

(ख) जर्मन क्रांति में

(ग) अमेरिकन क्रांति में

(घ) फ्रांसीसी क्रांति में

8.'श्रम विभाजन' किस आधार पर उचित है ?
(क) रुचि और क्षमता के आधार पर
(ख) जाति के आधार पर
(ग) व्यवसाय के आधार पर
(घ) जन्म के आधार

9. आधुनिक युग में कब अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ती है ?
(क) धन अर्जित करने के कारण (ख) जाति प्रथा के कारण
(ग) अधिक शिक्षित हो जाने के कारण
(घ) तकनीकी विकास एवं बदलाव के कारण

10. समाज के सभी लोगों को आरंभ से ही क्या उपलब्ध कराना चाहिए ?
(क) अच्छा घर
(ख) अच्छा भोजन
(ग) समान अवसर
(घ) तकनीकी प्रशिक्षण
उत्तर
1.(क), **2.**(घ), **3.**(ख), **4.**(ग), **5.**(ग), **6.**(ख), **7.**(घ), **8.**(क), **9.**(घ), **10.**(ग).

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में दीजिए।

1. भारत की जाति प्रथा की क्या विशेषता है?

उत्तर. भारत की जाति प्रथा की यह विशेषता है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करने के साथ-साथ उन्हें एक दूसरे की तुलना में ऊंच-नीच यानि आसमान स्तर वाला भी बना देती है। सभी समाज की जरूरत है श्रम विभाजन । लेकिन यह व्यवस्था श्रमिकों को विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक रूप से विभाजित करती हैं।

2. जाति प्रथा बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण है। कैसे?

उत्तर. जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की अनुमति नहीं देती। जाति प्रथा उस पेशे को अपनाने की अनुमति नहीं देती भले ही वह उस में पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

3. डॉक्टर अंबेडकर के आदर्श समाज की परिकल्पना कैसी थी?

उत्तर-डॉ भीमराव अंबेडकर के अनुसार उनका आदर्श समाज स्वतंत्रतासमानता और भ्रातृता पर , न होगा। समाज में जब भाईचारा बढ़ेगा तभी हर व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की आधारि स्वतंत्रता मिलेगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने का पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। समाज के सदस्यों को प्रारंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

4. भीमराव अंबेडकर के मत में दासता की व्यापक परिभाषा क्या है? समझाइए ।

उत्तर-लेखक के अनुसार दासता का अर्थ केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। जब कुछ लोगों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है तो ऐसी स्थिति को भी दासता ही कहा जाएगा। जाति प्रथा के कारण अनेक लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। अतः जाति प्रथा दासता को भी जन्म देती है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए। 60

1. जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे डॉक्टर अंबेडकर के क्या तर्क है?

उत्तर. यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है ।इसमें व्यक्ति की क्षमता की उपेक्षा की जाती है ।यह केवल माता-पिता के सामाजिक स्तर का ध्यान रखती है ।व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका श्रम विभाजन होना अनुचित है । जाति प्रथा व्यक्ति को जीवन भर के लिए एक ही व्यवसाय से बांध देती है। व्यवसाय उपयुक्त हो या अनुपयुक्त, व्यक्ति को उसे ही अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है। विपरीत परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती भले ही भूखा क्यों न मरना पड़े !

2.लेखक के ' समता ' संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. लेखक के अनुसार सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, आलोचकों का यह तर्क एक सीमा तक उचित है ।परंतु तथ्यात्मक होते हुए भी यह विशेष महत्व नहीं रखता। अपने शाब्दिक अर्थ में समानता काल्पनिक होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्यों की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती हैं-

१,शारीरिक वंश परंपरा ।

२,सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की कल्याण कामना, शिक्षा

तथा वैज्ञानिक ज्ञानार्जन आदि सभी उपलब्धियां जिनके कारण सभ्य समाज जंगली लोगों की

अपेक्षा विशिष्टता प्राप्त करता है।

३,मनुष्य के अपने प्रयास।

-इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते। तो क्या इन विशेषताओं के कारण समाज को भी व्यक्तियों के साथ असमान व्यवहार करना चाहिए? समता के विरोधी इस बात को लेकर निरुत्तर हो जाते हैं।

****

पूरक(2-वितान भाग) पुस्तिका-

पाठ 1-सिल्वर वैडिंग

मनोहर श्याम जोशी-

पाठ परिचय इस कहानी के | कहानी की रचना मनोहर श्याम जोशी ने की है "वैडिंग-सिल्वर" - प्रमुख पात्र यशोधर पंत के चरित्र चित्रण के माध्यम से आधुनिक पारिवारिक परिस्थितियों को पीढ़ियों के अन्तराल और उनके बीच वैचारिक मतभेद के | प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है करना वर्तमान मेंं परिवार में द्वंद्व की स्थिति सामान्यतः बनी रहती है निकता की ओर आधु | धीरे नष्ट -बढ़ता हमारा समाज नित नई प्रगति कर रहा है लेकिन दूसरी तरफ मानवीय मूल्य धीरे | होते जा रहे हैं

इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अन्तराल का मार्मिक चित्रण किया गया है आधुनिकता के दौर | में यशोधर बाबू परम्परागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं उनका उसूल पसंद | यशोधर बाबू को दिल्ली में अपने | होना दफ्तर एवं घर के लोगों के लिए सर दर्द बन गया था | अतः वे उनके आदर्श बन गए | पाँव ज़माने में किशनदा ने मदद की

दफ्तर में विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह मेनन और,के दिन दफ्तर के कर्मचारी (सिल्वर वैडिंग) जो वे बड़े अनमोल ढंग से देते हैं क्योंकि उन्हें | चड्ढा उनसे जलपान के लिए पैसे मांगते हैं विज्ञापन कंपनी में काम ,बड़ा बेटा भूषण| यशोधर बाबू के तीन बेटे हैं | फिजूलखर्ची पसंद नहीं दूसरा बेट | करता हैा आईरिका एस की तैयारी कर रहा है और तीसरा छात्रवृति के साथ अमे.ए. वह विवाह हेतु किसी ,बेटी भी डॉक्टरी की पढाई के लिए अमेरिका जाना चाहती है | जा चुका है यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश हैं किन्तु परम्परागत | भी वर को पसंद नहीं करती

संस्कारों के कारण वे दुविधा में हैं को अधिक पुरानी पीढ़ी के लोग मानवीय मूल्यों एवं रिश्तों| उन्हें भी परिवर्तन अच्छा लगता है लेकिन उनमें से अधिकांशतः यशोधर पंत | अहमियत देते हैं की तरह पुराणी विचारधारा से जकड़े हुए होने के कारण उस परिवर्तन को आसानी से स्वीकार नहीं दूस | कर पाते हैंरी तरफ यशोधर पंत की पत्नी समय के अनुसार अपने आप को बदलने में सक्षम होती है क्योंकि संतान प्रेम के कारण उन्हें बच्चों की ख़ुशी में स्वयं की ख़ुशी दिखाई देती है आधुनिक न होते हुए भी | उनकी पत्नी ने स्वयं को बच्चों की सोच के साथ ढाल लिया है | बच्चों के जोर देने पर वे अधिक मार्डन बन गई हैं |

बच्चे घर पर सिल्वर वैडिंग की पार्टी रखते हैं | जो यशोधर बाबू के उसूलों के खिलाफ था , उनका बेटा उन्हें ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है तथा सुबह दूध लेने जाते समय उसे ही पहन कर बेटे का ज | जो उन्हें अच्छा नहीं लगता ,जाने को कहता हैरुरत से ज्यादा तनख्वाह पाना , उनसे किसी बात पर सलाह न माँगना और दूध लेन का ,करना तनख्वाह की रकम स्वयं खर्च जिम्मा स्वंय न लेकर उन्हें ड्रेसिंग गाउन पहनकर दूध लेने जाने की बात कहना जैसी बातें जीवन के इस मोड़ पर स्वयं को अपने उसूलो| यशोधर बाबू को बुरी लगती हैंं के साथ अकेले पाते हैं " |जो हुआ होगायह दोनों वाक्य | कहनी के दो बीज वाक्य हैं "परसमहाऊ इन प्रा" और " | यशोधर पंत की द्वंद्वात्मक सोच को प्रदर्शित करते हैं

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. आप "सिल्वर वैडिंग" कहानी की मूल संवेदना किसे कहेंगे ?
(क) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव
(ख) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य
(ग) पीढ़ी का अंतराल
(घ) इनमें से कोई नहीं

2. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाऊ इम्प्रापर" इन जुमलें में कौन सा भाव निहित है ?
(क) अनिर्णय की स्थिति
(ख) द्वंद्व का भाव
(ग) यथास्थितिवाद यानि ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेने का भाव
(घ) उपर्युक्त सभी

3. 'सिल्वर वैडिंग'कहानी में शादी की वर्षगाँठ थी ?
(क) बीसवीं
(ख) पैतीसवीं
(ग) पच्चीसवीं
(घ) तीसवीं

4. कहानी "सिल्वर वैडिंग" में किशनदा की मृत्यु के सन्दर्भ में 'जो हुआ होगा' से कहानीकार का क्या तात्पर्य रहा है ?

(क) लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है

(ख) लेखक को मृत्यु का कारण पता है

(ग) लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है

(घ) लेखक को मृत्यु से कोई अंतर नहीं पड़ता है

5. कहानी "सिल्वर वैडिंग" के अनुसार -"यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती हैं लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं |" यशोधर बाबू की असफलता का क्या कारण था ?

(क) पत्नी बच्चों से अधिक प्रेम करती थी

(ख) किशनदा उन्हें भड़काते थे

(ग) पीढ़ी के अंतराल के कारण

(घ) वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे

6. यशोधर का व्यक्तित्व किससे प्रभावित था ?

(क) किशनदा से

(ख) अपने ताऊ जी से

(ग) अपने पिता जी से

(घ) इनमें से कोई नहीं

7. यशोधर बाबू मूल रूप से कहाँ के रहने वाले थे ?

(क) दिल्ली

(ख) पंजाब

(ग) उत्तराखंड

(घ) उत्तरप्रदेश

8. नई पीढ़ी का रवैया पाठ में कैसा है ?

(क) संवेदनशील

(ख) असंवेदनशील

(ग) सहयोगात्मक

(घ) सहानुभूतिपूर्ण

9. किशनदा का पूरा नाम क्या था ?

(क) कृष्ण पांडे

(ख) कृष्णानंद पांडे

(ग) किशन पांडे

(घ) इनमें से कोई नहीं

10. यशोधर बाबू स्वयं को डेमोक्रेटिक कैसे समझते हैं ?

(क) बेटा बेटी को समान समझते हैं

(ख) वे अपने नियम परिवार में लागू नहीं करते हैं

(ग) सभी को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है

(घ) उपर्युक्त सभी

11. जनार्दन जोशी कौन थे ?

(क) यशोधर पंत के बहनोई

(ख) यशोधर पंत के मित्र

(ग) यशोधर पंत के अधीनस्थ कर्मचारी

(घ) यशोधर पंत के पड़ोसी

12. किशनदा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता क्यों नहीं कर पाए थे ?

(क) किशनदा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा था जिसे किशनदा ने स्वीकार नहीं किया

(ख) यशोधर बाबू की पत्नी किशनदा से नाराज़ थी

(ग) यशोधर बाबू के घर में किशनदा के लिए स्थान का अभाव था

(घ) यशोधर बाबू का अपना परिवार था जिसे वह नाराज नहीं करना चाहते थे

13. यशोधर बाबू के बेटे भूषण ने उन्हें उनकी शादी की 25वीं वर्षगाँठ पर क्या उपहार दिया ?

(क) ऊनी ड्रेसिंग गाउन

(ख) आधुनिक घड़ी

(ग) कुर्ता पजामा

(घ) इनमें से कोई नहीं

14. यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक न होते हुए भी आधुनिकता में कैसे ढल गई ?

(क) मन की इच्छा से

(ख) वक्त को देखते हुए

(ग) बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी के कारण

(घ) इनमें से कोई नहीं

15. किशनदा की किस परम्परा को यशोधर ने जीवंत रखा ?

(क) भोज का आयोजन करना

(ख) जन्मदिन मनाना

(ग) घर में होली गवाना

(घ) शादी की वर्षगाँठ मनाना

16. सिल्वर वैडिंग कहानी से संबंधित पात्र नहीं हैं ?

(क) भूषण

(ख) किशनदा

(ग) यशोधर बाबू

(घ) महेशनाथ

17. किशनदा के मानस पुत्र कौन हैं ?

(क) जनार्दन जोशी

(ख) भगवान दास

(ग) यशोधर पंत

(घ) भूषण

18. यशोधर बाबू अपनी पत्नी को क्या कहकर उनका मजाक उड़ाते थे ?

(क) शानयल बुढ़िया

(ख) बूढ़ी मुहं मुंहासे, लोग करें तमासे

(ग) चटाई का लहँगा

(घ) उपर्युक्त सभी

19. चंद्रदत्त तिवारी कौन थे ?

(क) यशोधर पंत का भांजा

(ख) यशोधर पंत का मित्र

(ग) यशोधर पंत का ममेरा भाई

(घ) यशोधर पंत का अधीनस्थ कर्मचारी

20. मकान के विषय में किशनदा की कौन-सी उक्ति यशोधर बाबू को जँचती थी?

(क) सरकारी क्वार्टर सरकारी ही होता है

(ख) अपना मकान होना चाहिए

(ग) मूरख लोग मकान बनाते हैं,सयाने उनमें रहते हैं

(घ) इनमें से कोई नहीं

21. जब सब्जी लेकर यशोधर घर पहुँचें तो उनकी दशा कैसी थी ?

(क) द्वारका जाने वाले सुदामा जैसी

(ख) द्वारका से लौटे सुदामा जैसी

(ग) बचपन के सुदामा जैसी

(घ) पत्नी के साथ सुदामा जैसी

22. यशोधर बाबू का अपने बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार था ?

(क) घृणापूर्ण

(ख) इर्ष्यापूर्ण

(ग) स्नेहपूर्ण

(घ) अलगाव भरा

23. सिल्वर वैडिंग' कहानी के अनुसार यशोधर बाबू शादी की सालगिरह मनाने के पक्ष में क्यों नहीं थे ?

(क) क्योंकि वे इसे पश्चिम की नक़ल मानते थे

(ख) क्योंकि ऐसा करना उनके हित में नहीं था

(ग) क्योंकि इससे पैसों की बर्बादी होती है

(घ) क्योंकि वे रूढ़ीवादी विचारधारा को नहीं मानते थे

24. यशोधर बाबू अनुशाशन प्रिय हैं |

अभिकथन :- यशोधर बाबू अधिकारी के रूप में दफ्तर में अपने मातहतों से एक दूरी बनाकर रखते थे |

कारण:- दफ्तर से चलते चलते वे अपने मातहतों से कोई मनोरंजक बात करते थे

(क) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, अभिकथन कारण की सही व्याख्या है |

(ख) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, अभिकथन कारण की सही व्याख्या नहीं है |

(ग) अभिकथन सत्य है और कारण असत्य है |

(घ) अभिकथन और कारण दोनों असत्य हैं |

25. अभिकथन :- यशोधर बाबू की पत्नी उनसे नाराज़ रहती थी |

कारण :- नवविवाहिता पर पुराने नियम लागू होने के कारण

(क) अभिकथन और कारण दोनों सहीं हैं , अभिकथन कारण की सही व्याख्या नहीं है |

(ख) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, अभिकथन कारण की सही व्याख्या है |

(ग) अभिकथन और कारण दोनों असत्य हैं |

(घ) अभिकथन सत्य और कारण असत्य है |

26. निष्कर्ष कथन :- यशोधर बाबू अपने बच्चों की तरक्की होने पर ज्यादा खुश नहीं थे |

पहला कारण - बच्चे आधुनिक रहन-सहन से रहते थे

दूसरा कारण - बच्चे पीढ़ीगत अंतराल के कारण वे सभी जीवन मूल्य भूल चुके थे |

दिए गए कथन के सही कारणों को नीचे दिए गए विकल्प के आधार पर चुनिए -

(क) पहला कारण

(ख) दूसरा कारण

(ग) दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

27. अभिकथन :- यशोधर बाबू किशनदा को अपना रोल मोडल मानते है |

कारण :- यशोधर बाबू आधुनिक विचारों वाले व्यक्ति हैं |

(क) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, अभिकथन कारण की सही व्याख्या है |

(ख) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, अभिकथन कारण की सही व्याख्या नहीं है |

(ग) अभिकथन सत्य है और कारण असत्य है |

(घ) अभिकथन और कारण दोनों असत्य है |

28. "सिल्वर वैडिंग" कहानी में बुजुर्गों के प्रति कम होती सम्मान की भावना क्या व्यक्त करती है ?

(क) समाज के नवीन पक्ष

(ख) मानवीय मूल्य

(ग) नई पीढ़ी की नई सोच

(घ) बुजुर्गों के प्रति उनके दायित्व बोध को

29. यशोधर बाबू अपने बच्चों से क्या अपेक्षा रखते हैं ? सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर सटीक विकल्प चुनिए |

(क) उनके बच्चे आधुनिक विचारों को न अपनाएं

(ख) उनके बच्चे पार्टी वगैरह न किया करें

(ग) उनके बच्चे अब घर की जिम्मेदारियों का भर अपने ऊपर ले लें

(घ) उनके बच्चे रूढ़ीवादी परम्पराओं का पालन करें

30. यशोधर बाबू को अपने पर गर्व और प्रसन्नता का बोध कब होता है ?

(क) जब भूषण उन्हें सिल्वर वैडिंग का उपहार देता है

(ख) जब वह ऑफिस से मंदिर जाते हैं

(ग) जब लोग उनके बच्चों की उन्नति देखकर उनसे इर्ष्या करते हैं

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर सूचिका..

1.	ख
2.	घ
3.	ग
4.	क
5.	घ
6.	क

7.	ग
8.	ख
9.	ख
10.	घ
11.	क
12.	ग
13.	क
14.	ग
15.	ग
16.	घ
17.	ग
18.	घ
19.	क
20.	ग
21.	ख
22.	ग
23.	क
24.	क
25.	क
26.	क
27.	ग

28.	ग
29.	ग
30.	ग

पाठ जूझ - 2-

-लेखक -आनंद यादव

परिचय ,1935 सन् : जन्म - कागल 27 :में मृत्यु (महाराष्ट्र) कोल्हापुर ,नवम्बर पुणे में 2016 एक 'जूझ' आनंद यादव द्वारा रचित .मराठी के प्रख्यात कथाकार डॉ : विशेष**आत्मकथात्मक उपन्यास** है। आनन्द यादव को के साहित्य अकादमी पुरस 1990 उपन्यास के लिए " जूझ“ृकार से सम्मानित किया गया था।

पाठ परिचय -ई के लिए किये संघर्ष पाठ में लेखक आनंद यादव ने अपने बचपन में पढ़ा "जूझ" को बताया है। लेखक के पिता ने लेखक की पढ़ाई छुड़ा दी है। विद्यालय न जाने के कारण लेखक पाँचवी कक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया है। लेखक के पिता चाहतेहैं कि वह पढ़ाई-लिखाई छोड़कर खेती-ए तड़पता है। वह इसलिए बाड़ी में हाथ बँटाए । परन्तु लेखक का मन विद्यालय जाने के लि अपनी माँ से बात करता है। लेखक की माँ**गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति दत्ताजी राव देसाई** से निवेदन करती हैं कि वे लेखक के पिता को समझाएँ कि वे अपने पुत्र को विद्यालय जाने दें। दत्ताजी राव देसाई के समझाने पर लेखक के पिता उसे विद्यालय भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं , लेकिन वे लेखक के सामने यह शर्त रखते हैं- विद्यालय जाने से पहले और विद्यालय से आने के बाद उसे खेत में काम करना होगा और जानवरों को चराना होगा।

लेखक जब विद्यालय की पाँचवी कक्षा में जाता है तो देखता है कि उसके साथ के सभी विद्यार्थी पास होकर अगली कक्षा में चले गए हैं वह अपने आपको अपरिचित विद्यार्थियों के बीच पाता है। , **कक्षा का एक बालक चह्वाण** उसके साथ शरारत भी करता है। इन सब घटनाओं से लेखक का मन उदास हो जाता है। पर आने वाले दिनों में लेखक बड़ी मेहनत से पढ़ता है। इस कारण से लेखक पर सभी शिक्षक प्रसन्न रहते हैं और **वसंत पाटिल नामक होशियार लड़का** उसका मित्र बन जाता है। विद्यालय में **लेखक सबसे अधिक प्रभावित** होता है अपने मराठी के अध्यापक न .वा .

सौंदलगेकर स◌े। नसौंदलगेकर को मराठी कविता की बहुत अच्छी समझ है तथा वे स्वयं भी .वा. हिन्दी और संस्कृत भाषा की कविताओं के बारे में ,राठी के अलावा अंग्रेजीकविता लिखते हैं। वे म भी जानते हैं। उनके पढ़ाने का ढंग भी बड़ा प्रभावी है। वे बड़े ही अच्छे ढंग से गाकर कविता पढ़ाते और समझाते हैं।

उनसे प्रभावित होकर लेखक की कविताओं की ओर रुचि बढ़ती जाती है। लेखक उन्हीं के अंदाज में कविता गाने का अभ्यास करता है और तुकबंदी करके छोटीछोटी कविताएं लिखने लगता है। पहले - पर ,लेखक को खेतों में पानी देते समय अथवा जानवरों को चराते समय अकेलापन बुरा लगता था अब ल◌ेखक को अकेलापन अच्छा लगाने लगा है क्योंकि वह अब अकेलेपन में कविताओं को गाने का अभ्यास करता है। वह कई बार खेत में या भैंस चराते समय कागज़ आदि न होने पर पत्थर , लकड़ी के तख्ते या भैंस की पीठ पर ही कविता लिखना शुरू कर देता है। लेखक कविताएँ लिखकर अपने**मराठी शिक्षक श्री न सौंदलगेकर .वा .**को दिखाता है। लेखक उनसे मराठी कविताओं के संग्रह लेकर पढ़ने लगता हैजिससे उसकी भाषा परिष्कृत हो जाती है। साथ ही वह उनसे कविता , छंद और अलंकार पर भी चर्चा प्रारंभ करता है। ,की भाषा

पाठ में आए प्रमुख पात्र एवं उनका परिचय -

आनंदा - लेखक स्वयं पर उसकी माँ और विद्यालय के शिक्षक उसे आनंदा कहकर बुलाते हैं । लेखक का वास्तविक नाम आनंद यादव है।

लेखक की माँपाठ में माँ का नाम नहीं बताया गया है। वह लेखक की पढ़ाई की पक्षधर है। इसके - लिए वह दत्ताजी राव देसाई से बात भी करती है।

रतन यादव लिखाई छोड़कर खेती में -लेखक के पिता। वे चाहते हैं कि लेखक पढ़ाई - **(रतनप्पा)** उनका हाथ बँटाए। चवाण का लड़का कक्षा का शरारती बालक । लेखक के विद्यालय जाने पर उसका गमछा छीन लेता है।

मंत्रीगणित के अध्यापक बड़ी ही अनुशासनप्रिय और अनुशासनहीन छात्रों को दंडित करने वाले - ।

वसंत पाटिल - कक्षा का सबसे होशियार बच्चा एवं मॉनीटर। लेखक उससे मित्रता करता है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न:-

.1जूझ साहित्य की किस विधा में लिखा गया है ?

(घ) संस्मरण (ग) आत्मकथात्मक उपन्यास (ख) कहानी (क) रेखाचित्र

.2लेखक अपने दादा के सामने बोलने की हिम्मत क्यों नहीं करता था ?

उसके पिता बहुत गुस्सैल और हिंसक थे (ख)

वह अपने पिता से बहुत डरता था (क)

उपर्युक्त सभी (घ)

बात पर लेखक पर नाराज़ होते थे-वह बात (ग)

.3लेखक पढना क्यों चाहता था ?

उसके अनुसार खेती मे कोई भविष्य नहीं है (क)

लिखकर नौकरी करना - पढ़ (ख) चाहता था

उपर्युक्त सभी (घ)

नौकरी करके या व्यापार करके धन कमाया जा सकता है (ग)

.4लेखक का दादा कोल्हू जल्दी क्यों चलाता था ?

वह बहुत मेहनती था (क)

वह अपने बनाए गुड़ के अच्छे दाम (ख)प्राप्त करना चाहता था

वह अपने हर कार्य को सबसे पहले करना चाहता था (ग)

उपर्युक्त में से कोई भी नहीं (घ)

.5दादा ने लेखक को खेती के कार्य में क्यों लगा दिया ?

वह लेखक को खेती के कार्य सिखाना चाहता था (क)

स्वतंत्र रहकर नगर में वह स्वयं (ख) घूमना चाहता था

वह लेखक के भविष्य के बारे में सोचता था (ग)

उपर्युक्त में से कोई भी नहीं (घ)

.6दादा राव सरकार का नाम सुनते ही उनसे मिलने क्यों चला गया ?

राव सरकार गाँव के सम्मानित व्यक्ति थे (क)

उधार ले रखा था दादा ने राव सरकार से (ख)

दादा राव सरकार (ग)से डरता था

उपर्युक्त में से कोई भी नहीं (घ)

.7राव सरकार ने दादा को किस ? डांटा लिए के बात किस-

फसल में लागत न लगाने के लिए (ख)

खेतों की तरफ ध्यान न देने के लिए (क)

उपर्यु (घ)

लेखक की पढाई छुडवाने के लिए (ग)क्त सभी

.8राव साहब ने लेखक को क्या निर्देश दिए ?

वह कल से स्कूल जाना शुरू करे (क)

वह मन लगाकर पढाई करे (ख)

यदि उसका पिता उसे स्कूल न भेजे तो वह उनके पास आ जाए (ग)

उपर्युक्त सभी (घ)

.9दादा ने राव साहब के सामने अपने बेटे पर क्या आरोप लगाए?

वहाँ घूमता रहता है-यहाँ (ख)

लेखक सिनेमा देखने चला जाता है (क)

उपर्युक्त सभी (घ)

खेती और घर के काम में ज़रा भी ध्यान नहीं देता (ग)

.10लेखक ने राव साहब के सामने किस प्रकार अपना पक्ष रखा ?

उसका दादा कभी उसे सिनेमा देखने के लिए पैसे नही (क)ं देता

उसने कंडे बेचकर प्राप्त धन से कपड़े सिलवाए (ख)

वहाँ कंडे बेचने के लिए घूमता है-वह यहाँ (ग)

उपर्युक्त सभी (घ)

.11दादा ने अपने बेटे के सामने स्कूल जाने के लिए क्या शर्त रखी ?

स्कूल से पहले खेत में जाकर फसल को पानी देगा (क)

स्कूल से आन (ख)े के बाद ढोर चराने जाएगा

खेती के कार्य में अधिकता होने पर स्कूल नहीं जाएगा (ग)

उपर्युक्त सभी (घ)

.12लेखक को स्कूल में पहले दिन अपनी कक्षा में दीवार से पीठ सटाकर क्यों बैठ गया ?

लेखक को संकोच हो रहा था (क)

शरारती बच्चे उसकी धोती (ख)खींच रहे थे

खेती का कार्य करने के कारण उसकी पीठ में दर्द था (ग)

उपर्युक्त में से कोई भी नहीं (घ)

.13वसंत पाटिल की नक़ल करने पर लेखक को क्या लाभ हुआ ?

वह भी मॉनीटर जैसा सम्मान (ख) वह भी गणित में होशियार हो गया (क)

पाने लगा

अध्यापक उसे (ग) शाबाशी देने लगे उपर्युक्त सभी (घ)

.14लेखक को अकेलेपन में आनंद क्यों आने लगा ?

वह कविताएँ रच सकता था (ख) वह खुलकर गा सकता था (क)

उपर्युक्त सभी (घ) वह कविता गाकर उसका अभिनय कर सकता था (ग)

.15लेखक के पंख कब निकले ?

जब लेखक के द्वारा बनाई गयी लय को बच्चों के सामने प्रस्तुत कराया गया (क)

के समारोह में गवाया गया उसके गीत को स्कूल (ख)

जब मराठी अध्यापक उसकी प्रशंसा करने लगे (ग)

उपर्युक्त सभी (घ)

.16बैठना शुरू किया ? .17कक्षा का मॉनिटर कौन था ? .18इनमें ? हैं नहीं पात्र के कहानी 'जूझ' में कक्षा किस पुनः में विद्यालय ने नायक के कहानी 'जूझ'

सातवीं (घ) तीसरी (ग) पाँचवीं (ख) चौथी (क)

मंत्री (घ) आनंद (ग) वसंत पाटिल (ख) चव्हाण (क)

चड्ढा (घ) दत्ता जी राव (ग) सौन्दलगेकर (ख) आनंद यादव (क)

.19आनंदा भैंस की पीठ पर क्या करता था ?

कहानी लिखता था (ख) बैठ कर घूमता था (क) गीत लिखता था (घ) कविता लिखता था (ग)

.20इनमें ? है पात्र का कहानी 'जूझ'

(ख) यशोधर (क) भूषण सौन्दलगेकर (घ) किशन दा (ग)

? थी लगती अच्छी को नायक के कहानी 'जूझ' .21

कहानी लिखना (ख) मास्टर की छड़ी की मार खाना (क)

वर्गो में उछल कूद (घ) शरारती बच्चों का साथ (ग)

.22पाठशाला के खुलने का समय था ?

10:00 (क)बजे 11:00 (ख)बजे 9:00 (ग)बजे 8:00 (घ)बजे

.23आनंद की मटमैली धोती का मजाक किसने बनाया ?

मंत्री (घ) बसंत (ग) चव्हाण (ख) वसंत पाटिल (क)

.24आनंद के पिता का मुख्य व्यवसाय था ?

क (क)ोल्हू से गुड़ तैयार करना दूध (घ) मवेशी चराना (ग) कबाड़ बेचना (ख) बेचना

? बना कवि आकर में संपर्क किसके नायक का कहानी 'जूझ' .25

चव्हाण (घ) वसंत पाटिल (ग) मास्टर मंत्री (ख) मास्टर सौन्दलगेकर (क)

.26बालक आनंद अपने पिता को क्या कहते थे ?

दा (घ) दादा (ग) पिताजी (ख) पापा (क)

.27पाठशाला जाने के लिए किसका मन तड़पता था ?

चौहान का (घ) वसंत पाटिल का (ग) चव्हाण का (ख) आनंद यादव का (क)

.28दत्ता जी राव के यहाँ रात्रि में गए थे ?

(क) आनंद क और ख दोनों (घ) वसंत पाटिल (ग) आनंद की माँ (ख)

.29कविता पढ़ने? था किसे शौक का पढ़ाने-

भगवान दास (घ) दत्ता जी राव (ग) मंत्री (ख) सौन्दलगेकर (क)

.30ददा के अनुसार लेखक में गलत आदतें थी ?

उपर्युक्त सभी (घ) चारा बेचने की (ग) सिनेमा देखने की (ख) कंडे बेचने की (क)

.31आनंद यादव हैं ?

बिहार के प्रख्यात कथाकार (ख) मराठी के प्रख्यात कथाकार (क)

गुजरात के प्रख्यात कथाकार (घ) पंजाब के प्रख्यात कथाकार (ग)

.32आनंद किसकी कविता ध्यान से सुनता था ?

वसंत पाटिल की (घ) चौहान की (ग) सौन्दलगेकर की (ख) मंत्री की (क)

? है हुआ लिए किसके प्रयोग का 'गुर्राना' तरह की 'सूअर बरहेल' में कहानी 'जूझ' .33

आनंद के पिता के लिए(ख) आनंद की माँ के लिए (क)

आनंद(ग) के शिक्षक के लिए मित्रों के लिए आनंद के(घ)

.34लेखक के मास्टर सौन्दलगेकर के संपर्क में आने से उस पर क्या प्रभाव पड़ा ?

वह लिखते समय सचेत रहने लगा (ख) उसकी मराठी भाषा सुधरने लगी (क)

उपर्युक्त सभी (घ) लय आदि का ज्ञान हो गया, छंद,अलंकार (ग)

.35बिठोवा अन्ना कौन था ?

गाँव का ही प्रतिष्ठित व्यक्ति (ख) शिक्षक (क) गणित का (घ) आनंद के चाचा (ग)

अध्यापक

? कहा किसने । "तू है नहीं वाला होने बालिस्टर" .36

शिक्षकों ने (घ) लेखक की माता ने (ग) लेखक के पिता ने (ख) लेखक के दादा ने (क)

.37बसंत पाटिल किस विषय में होशियार था ?

संस्कृत (घ) गणित (ग) अंग्रेजी (ख) हिन्दी (क)

.38पाठशाला से लौटकर आनंद क्या करता था ?

खेत में पानी देता था (घ) ढोर चराता था (ग) पढ़ता था (ख) खेलता था (क)

.39रखमाबाई के साथ समय कौन बिताता था ?

आनंद के पिता (घ) आनंद (ग) भूषण (ख) यशोधर (क)

.40आनंद की माँ उसे पढ़ाना चाहती थी ?

नवीं कक्षा तक (घ) दसवीं कक्षा तक (ग) सातवीं कक्षा तक (ख) पाँचवीं कक्षा तक (क)

.41जूझ कहानी का नायक लगभग कितने वर्षों से पाठशाला नहीं गया था ?

वर्ष 5 लगभग (घ) लगभग डेढ़ वर्ष (ग) वर्ष 4 लगभग (ख) वर्ष 2 लगभग (क)

.42जूझ कहानी में कहानीकार की पढ़ाई का विरोध किसने किया ?

मित्रों ने (घ) समाज ने (ग) पिता ने (ख) माँ ने (क)

पाठ 'जूझ' .43के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया ?

अकेलापन उपयोगी है (ख) अकेलापन डरावना है (क)

अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है (घ) अकेलापन अनावश्यक है (ग)

" -अनुसार के पाठ 'जूझ' .44पढ़ाई सही रवैया का राव जी दत्ता और लेखक में सम्बन्ध के लिखाई- - क्योंकि "। था

था चाहता करना नहीं बाड़ी-खेती लेखक (क) बाड़ी -दत्ता जी राव जानते थे की खेती (ख)

में लाभ नहीं है

लिख कर सफल होना बहुत आवश्यक था-लेखक का पढ़ (ग)

ले (घ)खक का पिता नहीं चाहता था कि वह आगे की पढ़ाई करे ।

रमालाजूझ :

-1ख	- 6क	- 11घ	- 16ख	- 21क	- 26ग	- 31क	- 36ख	- 41ग
-2घ	- 7घ	- 12क	- 17ख	- 22ख	- 27क	- 32ख	- 37ग	- 42क
-3घ	- 8घ	- 13घ	- 18घ	- 23ख	- 28घ	- 33ख	- 38ग	- 43ख
-4ख	- 9घ	- 14घ	- 19ग	- 24क	- 29क	- 34घ	- 39घ	- 44ख
-5ख	- 10घ	- 15घ	- 20घ	- 25क	- 30घ	- 35ख	- 40ख	

पाठ-3 अतीत में दबे पाँव

- ओम थानवी

पाठ का सार-यह ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है। उन्होंने इस पाठ में विश्व के सबसे पुराने और नियोजित शहरों-मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा का वर्णन किया है। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में मोहनजोदड़ो ओर पंजाब प्रांत में हड़प्पा नाम के दो नगरों को पुरातत्वविदों ने खुदाई के दौरान खोज निकाला था। मोहनजोदड़ो ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर था। मोहनजोदड़ो अर्थात मुर्दों का टीला। यह नगर मानव निर्मित छोटे-छोटे टीलों पर बना था। मोहनजोदड़ो में प्राचीन और बड़ा बौद्ध स्तूप है। इसकी नगर योजना अद्‌वितीय है। लेखक ने खंडहर हो चुके टीलों, स्नानागार, मृद-भांडों, कुओं-तालाबों, मकानों व मार्गों का उल्लेख किया है जिनसे शहर की सुंदर नियोजन व्यवस्था का पता चलता है। बस्ती में घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर नहीं खुलते, हर घर में जल निकासी की व्यवस्था है, सभी नालियाँ की ढकी हुई हैं, पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है।

नगर में चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा एक महाकुंड भी है। इसकी दीवारें ओर तल पक्की ईंटों से बने हैं। कुंड के पास आठ स्नानागार हैं। कुंड में बाहर के अशुद्ध पानी को न आने देने का ध्यान रखा गया। कुंड में पानी की व्यवस्था के लिए कुंआ है। एक विशाल कोठार भी है जिसमें अनाज रखा जाता था । उन्नत खेती के भी निशान दिखते हैं -कपास, गेहूं, जौ, सरसों, बाजरा आदि के प्रमाण मिले हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता में न तो भव्य राजमहल मिलें हैं ओर ही भव्य मंदिर। नरेश के सिर पर रखा मुकुट भी छोटा है। मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता व आडम्बर का अभाव रहा है। उस समय के लोगों ने कला ओर सुरुचि को महत्त्व दिया। नगर-नियोजन, धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ, मृदभांड, उन पर चित्रित मानव ओर अन्य आकृतियाँ, मुहरें, उन पर बारीकी से की गई चित्रकारी। एक पुरातत्त्ववेत्ता के मुताबिक सिंधु सभ्यता की खूबी उसका

सौंदर्य-बोध है जो "राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था।

1."अतीत में दबे पांव" नामक पाठ के लेखक कौन है ?

क) ओम थानवी ख) रामकिशोर

ग) मनोहर श्याम जोशी घ) आनंद यादव

2."अतीत में दबे पांव" पाठ किस विधा में लिखा गया हैं ?

क) एक यात्रा वृत्तांत और रिपोर्ताज ख) लेख

ग) निबंध घ) फीचर

3."अतीत में दबे पांव" नामक पाठ में किस सभ्यता का वर्णन हैं ?

क) रोमन ख) मेसोपोटामिया

ग) मुअनजो -दड़ो (सिंधुकालीन) घ) मिस्र

4. वर्तमान में यह पुरातात्विक स्थल कहां है ?

क)भारत में ख) पाकिस्तान के सिंध प्रांत में

ग) बांग्लादेश में घ) भूटान में

5. मोहनजोदड़ो किस नदी के तट पर स्थित हैं ?

क) गंगा नदी ख) यमुना नदी

ग) रावी नदी घ) सिंधु नदी

6. मुअनजो -दड़ो किस काल के शहरों में सबसे बड़ा शहर है ?

क) ताम्रकाल ख) पाषाण काल

ग) लौह काल घ) काष्ठ काल

7. मुअनजो -दड़ो का अर्थ क्या है ?

क) दो जगहों को जोड़ना ख) मृतकों या मुर्दों का टीला

ग) समाधियों की जगह घ) इनमें से कोई नहीं

8. वर्तमान में मुअनजो -दड़ो को किस नाम से जाना जाता है ?

क) मोहनजोदाड़ो ख) मोअनजोदड़ो

ग) मोहनजोदड़ो घ) उपर्युक्त सभी

9 . मुअनजो -दड़ो के टीले कैसे हैं ?

क) मानवनिर्मित ख) प्राकृतिक

ग) क और ख दोनों घ) इनमें से कोई नहीं

10. सिंधु नदी के पानी से बचने के लिए जमीन की सतह को किस तरह ऊपर उठाया गया था ?

क) मिट्टी के द्वारा ख) कच्ची - पक्की ईंटों की चिनाई से (टीलों के रूप में)

ग) पत्थरों द्वारा घ) उपर्युक्त सभी

11.मसोपोटेमिया के अभिलेखों में प्रयोग "मेलुहा" शब्द संभवतः किसके लिए प्रयोग होता होगा ?

क) मोहनजोदड़ो के लिए ख) मिस्र के लिए

ग) रोम के लिए घ) यूनान के लिए

12.मुअनजो-दड़ो (मोहनजोदड़ो) की खोज किसने की -

क) राखलदास बनर्जी ख) माधव स्वरूप वत्स ने

ग) जाॅन मार्शल ने घ) इनमें से कोई नहीं

13. राखलदास बनर्जी कौन थे ?

क) पुरातत्ववेत्ता ख) गायक

ग) खुदाई करने वाले मजदूर घ) देखरेख करने वाले

14. राखलदास बनर्जी यहां पर किस वर्ष आए थे ?

क) सन् 1920 ख) सन 1922 में

ग) सन् 1820 में घ) सन् 1823 में

15 . मोहनजोदड़ो की खुदाई किस के निर्देश पर शुरू हुई थी ?

क) जॉन अब्राहम ख) जॉन मार्शल

ग) जॉन मार्टिन घ) जॉन स्मिथ

16.भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक कौन थे ?

क) जॉन एफ कैनेडी ख) यू आर राव

ग) जॉन मार्शल घ) माधोस्वरूप वत्स

17.यह स्थल किस चीज की अनूठी मिसाल है ?

क) नगर नियोजन की ख) सड़क निर्माण की

ग) कुओं के निर्माण की घ) पानी निकासी की

18. सिंधु घाटी सभ्यता कितने साल पुरानी हैं ?

क) 500 वर्ष पूर्व ख) 2500 वर्ष पूर्व

ग) 5,000 वर्ष पूर्व घ) 4500 वर्ष पूर्व

19.मोहनजोदड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है ?

क) 3000 वर्ष पूर्व का ख) 5,000 वर्ष पूर्व का

ग) 4000 वर्ष पूर्व का घ) 1000 वर्ष पूर्व का

20.मोहनजोदड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा ?

क) नृत्य का ख) गायन का

ग) सभ्यता का घ) इनमें से कोई नहीं

21. सिंधु घाटी की सभ्यता को किस सभ्यता के समकक्ष माना जाता है ?

क) मसोपोटेमिया (इराक) और मिस्र की सभ्यता

ख) रोम की ग) ईरान की घ) इनमें से कोई नहीं।

22. सिंधु घाटी की जल संबंधी अनूठी विशेषता क्या है ?

क) कुँओं की व्यवस्था ख) जल निकासी का प्रबंध

ग) स्नानागार की व्यवस्था घ) उपर्युक्त सभी

23. मोहनजोदड़ो नगर कितने हेक्टेयर में फैला हुआ था ?

क) 200 हेक्टेर में ख) 500 हेक्टेर में

ग) 300 हेक्टर में घ) 400 हेक्टर

24.लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो की आबादी लगभग कितनी थी ?

क) 75000 ख) 65000

ग) 62000 घ) 85000

25.सिंधु घाटी संस्कृति किस प्रकार की मानी जाती है ?

क) मैदानी संस्कृति ख) पहाड़ी संस्कृति

ग) वन्य संस्कृति घ) पठारी संस्कृति

26.100 वर्षों में अब तक मोहनजोदड़ो के कितने भाग की खुदाई की गई है ?

क) दो तिहाई ख) एक तिहाई

ग) एक चौथाई घ) आधे भाग की

27. मोहनजोदड़ो के स्तूप के चबूतरे वाले हिस्से को किस नाम से पुकारते हैं ?

क) दुर्ग ख) किला

ग) गढ़ घ)इनमें से कोई नहीं

28.मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी थी ?

क) 40 फीट ख) 30 फीट

ग) 35 फीट घ) 33 फीट

29.महाकुंड की लंबाई, चौड़ाई और गहराई कितनी है ?

क) 40× 25 ×7फुट ख) 35×20×10 फुट

ग) 45×25×7 फुट घ) 40×25×8 फुट

30.महाकुंड के तीन तरफ किसके कमरे बने हुए हैं ?

क) पुजारियों के ख) पहरेदारों के

ग) साधुओं के घ) इनमें से कोई नहीं

31.महाकुंड में ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल क्यों किया गया था ?

क) अशुद्ध पानी के प्रवेश को रोकने के लिए

ख) मजबूती के लिए ग) क और ख दोनों घ) इनमें से कोई नहीं।

32. कोठार किस काम आते थे ?

क) हथियार रखने के काम ख) कर से प्राप्त अनाज जमा करने के काम

ग) गोला- बारूद रखने के काम घ) बंदियों को रखने के लिए

33. मोहन जोदड़ो से सिंधु नदी कितनी दूरी पर बहती है ?

क) 10 किलोमीटर की दूरी पर ख) 8 किलोमीटर की दूरी पर

ग) 5 किलोमीटर की दूरी पर घ) इनमें से कोई नहीं

34. मोहनजोदड़ो , हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी है ?

क) राष्ट्रीय संग्रहालय , नई दिल्ली ख) राष्ट्रीय संग्रहालय, जयपुर

ग) राष्ट्रीय संग्रहालय, मुंबई घ) इनमें से कोई नहीं।

35.मोहनजोदड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीजों की संख्या कितनी है ?

क) 48000 से अधिक ख) 25000 से अधिक

ग) 1200 से अधिक घ) 50,000 से अधिक

36.मोहनजोदड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है ?

क) चंडीगढ़ ख) नई दिल्ली

ग) अमृतसर घ) मुंबई

37.सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?

क) बने हुए कुँए ख) सौंदर्यबोध

ग) सड़कें घ) बैलगाड़ी

38.लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्यबोध को क्या नाम दिया है ?

क) राजपोषित सौंदर्यबोध ख) धर्म पोषित सौंदर्यबोध

ग) समाज पोषित सौंदर्यबोध घ)इनमें से कोई नहीं

39.मोहनजोदड़ो में कुओं को छोड़कर अन्य चीजों के आकार कैसे थे ?

क) चौकोर या आयताकार ख) गोलाकार

ग) त्रिकोण घ) इनमें से कोई नहीं

40.सिंधु घाटी के छोटे टीलों पर बनी बस्तियों को क्या कहा गया है ?

क) छोटा नगर ख) नीचा नगर

ग) श्रेष्ठ नगर घ) इनमें से कोई नहीं।

41. "सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।" प्रस्तुत पंक्ति से तात्पर्य है-

क) राजा प्रजा की तरह सादगी से रहता था।

ख) साधन बहुत थे जो देखने में आकर्ष थे।

ग) सभी प्रकार के साधन थे किंतु दिखावा नहीं था।

घ) सभी लोग सम्पन्न थे और वे दिखावा नहीं करते थे।

42. अतीत में दबे पाँव पाठ के अनुसार " सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।" ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि-

क) सौंदर्य के प्रति चेतना अधिक थी।

ख) राजा से बड़ा स्थान लोगों के कार्यों का था।

ग) धर्म का महत्व न था, अतः समाज सर्वोपरि था।

घ) अमीर-गरीब न थे ,अतः समाज में समानता थी।

43. टूटे-फूटे खंडहर हर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ जिंदगियों के अनछुए समय के भी दस्तावेज होते हैं, क्योंकि-

क) इनमें बीते हुए जीवन के चिह्न महसूस होते हैं।

ख) इनमें कला ,खानपान इत्यादि में सदा जीवंतता रहती है।

ग) इनके अध्ययन मात्र से इतिहास की व्याख्या संभव हो जाती है।

घ) इतिहास की समझ हेतु केवल सभ्यता और संस्कृति को जानना आवश्यक होता है।

उत्तरमाला-

1. (क)	2. (क)	3. (ग)	4.(ख)
5. (घ)	6. (क)	7. (ख)	8. (ग)
9. (क)	10. (ख)	11. (क)	12.(क)
13.(क)	14.(ख)	15.(ख)	16(ग)
17.(क)	18.(ग)	19.(ख)	20.(ग)

21.(क) 22.(ख) 23.(क) 24.(घ)

25. (क) 26.(ख) 27.(ग) 28.(घ)

29.(क) 30.(ग) 31.(क) 32.(ख)

33.(ग) 34.(क) 35.(घ) 36.(क)

37.(ख) 38.(ग) 39.(क) 40.(ख)

41.(ग) 42.(ख) 43.(क)

परियोजना कार्य

परियोजना का महत्व -

- नए ज्ञान की ओर अग्रसर
- खोजी प्रवृत्ति में वृद्धि
- भाषा ज्ञान -समृद्ध एवं व्यावहारिक
- समस्या समाधान की क्षमता का विकास

परियोजना कार्य करते समय निम्नलिखित आधार को अपनाया जा सकता है

- प्रमाण पत्र
- आभार ज्ञापन
- विषय सूची
- उद्देश्य
- समस्याविषय का बयान/
- परिकल्पना
- प्रक्रिया साक्ष्य संग्रह), साक्ष्य का विश्लेषण(
- प्रस्तुतीकरण विषय का विस्तार))
- अध्ययन का परिणाम

• अध्ययन की सीमाएं

• स्रोत

• अध्यापक टिप्पणी

विषय

• भाषा और साहित्य से जुड़े विविध विषयोंसाहित्यकारों /विधाओं /

/समकालीन लेखनविषय के आधार पर/

समकालीन विषय

• कोविड-19 और हम

• भूमिका -क्या है, क्यों हैं आदि का विवरण

• विभिन्न देशों में प्रभाव

• भारत के साथ तुलनात्मक अध्ययन

• कारण और निवारण

• आप की भूमिकासुझाव /योगदान /

परियोजना उदाहरण

• **हिंदी कविता में प्रकृति चित्रण -'उषा; कविता**

• कविता में प्रकृति का प्रभाव

• विभिन्न कवियों की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन

• भाषा शैली

• विशेषताएं

• वर्तमान के साथ प्रासंगिकता इत्यादि

बाजार दर्शन

• वर्तमान बाजार का स्वरूप

• समय के साथ बदलता बाजार

• सामाजिक मानसिकता पर बाजार का प्रभाव

• विज्ञापनों का प्रभाव

• बाजार का सदुपयोग

• आपकी भूमिका

योगदान सुझाव

परियोजना की शब्द सीमा लगभग 2000 शब्दों की होनी चाहिए

मुख पृष्ठ

परियोजना कार्य

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, कक्षा :12वीं, हिंदी कोड सं)(आधार)302)

सत्र .....

शीर्षक ..... :

प्रस्तुतकर्ता विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

निर्देशक का नाम :

विद्यालय का नाम :

विद्यार्थी का घोषणा पत्र

मैं ..... कक्षा .....

विद्यालय एतद् द्वारा यह घोषणा करता..... हूँकरती हूँ कि /

केमार्गदर्शन में तैयार किया गया परियोजना .....मेरे रा

यह .....

....., मेरा मौलिक कार्य है ।

हस्ताक्षर

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

विद्यालय का नाम :

दिनांक :

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ..... नामक
परियोजना कार्य .....(नाम(
..... (कक्षा (..... (विद्यालयद्वारा (
प्रस्तुत किया गया है, जो कि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा 12वीं, हिंदी
(आधार कोड सं)(302) की वार्षिक परीक्षा का अंश है। यह इनका मौलिक कार्य
है।
निर्देशक.....
दिनांक प्राचार्य .....:

आंतरिक परीक्षक बाहरी परीक्षक/

आभारोक्ति

मैं श्री .....
/श्रीमती .....प्राचार्यप्राचार्या केंद्रीय /
विद्यालय..... के प्रति आभार व्यक्त करता हूँकरती हूँ /,जिनके
मार्गदर्शन में यह परियोजना कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो पाया ।मैं श्री श्रीमती /
(हिंदी) शिक्षिका/स्नातकोत्तर शिक्षक....., केंद्रीय विद्यालय --
---

के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँकरती हूँ /, जिन्होंने विषय को समझाने और उसे विस्तार
देने में मेरी कदम कदम पर सहायता की ।
मैं हर उस व्यक्ति के प्रति आभार व्यक्त करता हूँकरती हूँ /, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से
इस परियोजना कार्य को पूरा करने में सहायक रहा है|
हस्ताक्षर
विद्यार्थी का नाम
अनुक्रमांक
विद्यालय का नाम

केन्द्रीय विद्यालय संगठन - एर्णाकुलम संभाग

आदर्श प्रश्नपत्र - 2022-23 - 1

कक्षा XII - (हिंदी केंद्रिक) अंक-80 समय-3 घंटे

सामान्य निर्देश:-

कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्नपत्र में दो खण्ड हैं और कुल 13 प्रश्न हैं ।

कृपया प्रश्नों का उत्तर लिखना शुरु करने से पहले उस प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

इस प्रश्न पत्र को पढने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है।

खंड अ वस्तुपरक प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त उत्तरवाले विकल्प को चुनकर लिखिए (1 x 10)

हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है–'संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है। जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेजी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी को समुचित स्थान देना ज़रूरी है।

1. भाषा व्यवसायी से क्या अभिप्राय है?

(i) राजनीति मुखौटा ओढ़ने वाले लोग
(ii) अन्धविश्वासी लोग
(iii) प्रशासनिक भेदभाव वाले लोग
(iv) उपभोक्तावादी लोग

2. संविधान के कौन-से अनुच्छेद में हिन्दी भाषा विकास के लिए निर्देश दिए गए हैं?
(i) अनुच्छेद 312
(iii) अनुच्छेद 351
(iii)अनुच्छेद 315
(iv)अनुच्छेद 513

3. संविधान में संघ से क्या तात्पर्य है-
(i) अमेरिकी सरकार
(ii) ब्रिटेन सरकार
(iii) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
(iv) भारत गणतन्त्र या भारत सरकार

4. संघ का क्या कर्त्तव्य है?
(i) हिन्दी भाषा के प्रसार को रोकना।
(ii) हिन्दी भाषा का अनुप्रयोग करना।
(iii) हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाना।
(iv) अंग्रेजी भाषा महत्त्व देना।
5. भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य है-
(i) हिन्दी के अतिरिक्त
(ii) अंग्रेजी के अतिरिक्त
iii) संस्कृत के अतिरिक्त
iv) भोजपुरी के अतिरिक्त

6. हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से अभिप्राय-
(i) घरेलू क्षेत्रों में बढ़ावा मिलना।
(ii) वनस्पति क्षेत्रों में बढ़ावा मिलना।
(iii) राजनीति क्षेत्रों में बढ़ावा मिलना।
(iv) विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें बढ़ावा मिलना।
7. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।
(i) विभिन्न भाषा
ii) हिन्दी भाषा का महत्त्व

(iii) अंग्रेज़ी के गुण

((iv) इनमें से कोई नहीं

8. युवा पीढ़ी पर किस भाषा की मानसिकता हावी है?

(i) अंग्रेजी

(ii) हिन्दी

iii) तेलगू

(iv) संस्कृत

9. हिन्दी भाषा के विकास की आवश्यकता क्यों है?

(i) अंग्रेजी भाषा की मानसिकता से उबरने के लिए।

(ii) संस्कृत भाषा की मानसिकता से उबरने के लिए।

(iii) हास्य एवं व्यंग्य भाषा शुद्धि के लिए।

(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

10. इस मिट्टी में जन्मी हमारी भाषाओं की ----------और----------

. संकट में प्रतीत होता है? रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) भूत और व्यापार

(ii) शिक्षा और समाचार

(iii) अस्मिता और भविष्य

iv) भाषा और विकास

2. निम्नलिखित पद्यांशों मे से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चयन द्वारा कीजिए । (1x5)

जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अम्बर के आनन को देखो;
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछाबर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;

मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ
मुरझाईं कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाईं फिर कहाँ खिलीं,
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुबन शोर मचा
जो बीत गई सो बात गई।

प्रश्न-

1. प्रस्तुत काव्यांश में किस घटना पर अम्बर शोक नहीं मनाता है?

(i) तारों के टूटने पर
(ii) बादलों के गरजने पर
(iii) ग्रहों के टकराने पर
(iv) बिजली के कड़कने पर

2. मधुबन शोर नहीं मचाता-

(i) फलों पर
(ii) सूखे फूलों पर
(iii) पौधों पर
(iv) पेड़ों पर

3. प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'वल्लरी' का अर्थ है-

(i) तना
(ii) पत्ती
(iii) जड़
(iv) लता

4. प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'निछाबर' का अर्थ है-

(i) उत्सर्ग
(ii) मुग्ध
(iii) मोहित
(iv) आसक्त

5. प्रस्तुत काव्यांश के सम्भावित शीर्षकों में से नहीं है-

(i) जो हुआ सो हुआ
(ii) जो बीत गया सो बीत गया
(iii) बीता वक्त लौटता नहीं
(iv) जैसी करनी वैसी भरनी

अथवा

कालिदास का अमर काव्य है,

मैं तुलसी की रामायण।
अमृतवाणी हूँ गीता की,
घर घर होता पारायण
मैं भूषण की शिवा बावनी,
आल्हा का हुंकारा हूँ।
सूरदास का मधुर गीत मैं,
मीरा का इकतारा हूँ।
वरदायी की गौरव गाथा,
रण गर्जन गंभीर हूँ।
मातृभूमि पर मिटने वाले,
मतवाले की पीर हूँ।
मेरा परिचय इतना है,
मैं भारत की तस्वीर हूँ।

प्रश्न-

1. कविता में किसके बारे में बात की गई है?

(i) देश के बारे में
(ii) तुलसीदास के बारे में
(iii) रामायण के बारे में
(iv) मधुर गीत के बारे में

2. गीता को अमृतवाणी कहने का कारण है-

(i) गीता मधुर गीतो का संग्रह है।
(ii) गीता के उपदेश मनुष्य को जीवन का वास्तविक अर्थ समझाते हैं।
(iii) गीता एक मनोरंजक काव्य है।
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं।

3. 'वरदायी' की कविताएँ निम्नलिखित में से कौन-से रस से भरी होती है?

i) शृंगार रस
(ii) वीभत्स रस
iii) वीर रस
(iv) हास्य रस

4. प्रस्तुत काव्यांश में 'मतवाले की पीर' से आशय है-

(i) किसी देशभक्त क्रान्तिकारी का समाधि स्थल
(ii) कृषि योग्य भूमि
(iii) किसी व्यक्ति का निवास स्थान
(iv) कोई क्रीड़ा स्थल

5. प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'पारायण' का अर्थ है-

(i) समय बांधकर किसी ग्रन्थ का आरम्भ से अन्त तक पाठ
(ii) किसी विषय पर वाद-विवाद
(iii) किसी घटना विशेष को स्मरण करना
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

अभिव्यक्ति और माध्यम (1x5)
3. निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनकर लिखिए
क) भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार-पत्रों में लिखने वाले पत्रकार को क्या कहते हैं?
(i) फ्रीलांसर
(ii) अल्पकालिक पत्रकार
(iii) अंशकालिक पत्रकार
(iv) संपादक
ख) इनमें से समाचार-पत्र की आवाज़ किसे माना जाता है?
(i) फीचर
(ii) आलेख
(iv) स्तंभ
(ii) संपादकीय
ग). समाचार लेखन की श्रेष्ठ शैली कौन-सी है?
(i) सीधा पिरामिड शैली
ii) उलटा पिरामिड शैली
iv) विवेचनात्मक शैली
iii) व्याख्या शैली
घ) फोन-इन से क्या आशय है ?
(i) इसके माध्यम से रिपोर्टर फोन पर बात करके सूचन दर्शकों तक पहुँचाता है। वह घटना वाली जगह पर मौजूद होता है।
(ii) टेलीविजन पत्रकारिता में किसी घटना की सूचना देना और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाना और सुनाना।
(iii) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण होना।
iv)उपर्युक्त में से कोई नहीं।
ङ) भारत की पहली इंटरनेट या वेब पत्रकारिता साइट कौन-सी है?
(i) इंडिया टुडे
(iii) रीडिफ
(iii) वैबदुनिया
(iv) आउटलुक

4.निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निर्देशानुसार सही उत्तरवाले विकल्पो का चयन

कीजिएः (1x5)

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक-एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु !
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ।।

1. समाज में चारों ओर किसका बोल-बाला है?
(i) प्रेम और भाईचारे का
(ii) गरीबी और बेकारी का
(iii) घृणा और लड़ाई का
(iv) अमीरी और रोजगारी का

2. संपूर्ण समाज को गरीबी ने किस रूप में घेर रखा है?
i)रावण
(ii) राक्षस
iii)शैतान
(iv) दानव

3. वेदों और पुराणों के अनुसार संकट के समय कौन सहायता करता है?
(i) नेता लोग
(iii) देवता
(ii) अफसर
(iv) प्रभु राम

4. 'दारिद-दसानन' में अलंकार है?
(i) यमक
ii) श्लेष
(iii) रूपक
iv) उत्प्रेक्षा

5. प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त 'बनिज' शब्द का क्या अर्थ है?
i)बनिया
ii) व्यापारी
(iii) नौकर

(iv) परिवार

5 निम्नलिखित) गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही उत्तरवाले विकल्प चुनकर लिखिए (1x5)
एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हजरत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक।

प्रश्न-

1. वनस्पति शास्त्री के अनुसार शिरीष का पेड़ कहाँ से रस खींचता है?
(i) जीवमंडल से
(ii) भूमंडल से
(iii) सौरमंडल से
(iv) वायुमंडल से

2. अनासक्त योगी किसे कहा गया है?
(i) महाकवि तुलसीदास जी को
(ii) महाकवि कालिदास जी को
(iii) संत कबीरदास जी को
(iv) महाकवि सूरदास जी को

3. अवधूत किसे कहते हैं?
(i) केसर को
(ii) संन्यासी को
(iii) धरती को
(iv) वायु मंडल को

4. काव्यांश में' यह हजरत' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(i) कबीरदास के लिए
(ii) कालिदास के लिए
(iii) शिरीष के पेड़ के लिए
(iv) वनस्पति शास्त्री के लिए

5. लेखक किस कवि को कवि मानता है?
(i) जिसे दुनियादारी से अधिक मतलब न हो
(ii) जो सुंदर कविताएँ लिखता हो
(iii) जो स्वार्थी हो

(iv) जो निजि कल्याण को सर्वोपरि समझता हो

पूरक पाठ वितान (10)

6.निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार सही विकल्पों का चयन कीजिए: (10x1)

1. जब सब्ज़ी लेकर यशोधर घर पहुँचे तो उनकी दशा कैसी थी?

i) द्वारिका जाने वाले सुदामा जैसी

(ii) द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी

(iii) कृष्ण के साथ सुदामा जैसी

(iv) पत्नी के साथ सुदामा जैसी

2. किशनदा सुबह सैर से लौटते वक्त यशोधर के घर में झाँकते हुए क्या कहते थे?

(i) हेल्दी-वेल्दी एंड वाइज

(ii) शुभ प्रभात

(iii) समतिंग इमप्रोपर

(iv) इनमें से कोई नहीं

3 बिड़ला मन्दिर से यशोधर बाबू कहाँ जाते थे?

(A) घर

(B) गोल मार्केट

(C) पहाड़गंज

(D) आफिस

4. . 'जूझ' के लेखक के पिता का नाम क्या था ?

(i) रतनाप्पा

(ii) कृष्णाप्पा

(iv) मोहनाप्पा

(iii) रामाप्पा

5. 'जूझ' के लेखक के कक्षा अध्यापक का नाम क्या था?

(i) वसत

ii) सौंदलगेकर

(iii) मंत्री

iv) मोहन

6."जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है?

i) पढ़ने की प्रवृत्ति का

ii) कविता करने की प्रवृत्ति का

(iii) लेखन प्रवृत्ति का

(iv) संघर्षमयी प्रवृत्ति का

7. मुअनजो-दड़ो को किस युग का नगर माना जाता है?

(ii) पाषाण युग

(iv) लौह युग

(i) कांस्य युग

(iii) ताम्र युग

8.मुअनजो-दड़ो का शाब्दिक अर्थ है-

(i) शिलालेख

(ii) पठारी क्षेत्र

(iii) पर्वतीय नगर

(iv) मृतकों का टीला

9. मुअनजो-दड़ो का नगर नियोजन निम्नलिखित में से किस व्यवस्था पर आधारित था?

i) हाइब्रिड प्लान

(ii) ग्रिड प्लान

(iv) लीनियर प्लान

(iii) ट्री प्लान

10 मेसोपोटामिया के शिलालेखों में मुअनजोदड़ो के लिए किस शब्द का सम्भावित प्रयोग मिलता है?

i) मुनजो

(ii) इंडस

iii) मेलुहा

(iv) इनमें से कोई नहीं

खण्ड ब- वर्णनात्मक प्रश्न

जनसंचार और रचनात्मक लेखन (20)

7.निम्नलिखित में से किसी एक अप्रत्याशित विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए (6x1)

I) आज़ादी का अमृत महोत्सव

Ii) बाल मज़दूरी

Iii) दुर्घटना से देर भली

iv)प्रिय खेल

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिएः-) 3x2)

I).कहानी का चरम उत्कर्ष लिखते समय कथाकार को क्या सावधानी बरतनी चाहिए?

ii)नाटक के प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए

Ii)रेड़ियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

9.निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए- (4x2)

I) फीचर और समाचार में क्या अंतर है ?

ii)विशेष लेखन की भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?

iii)संदेह करना पत्रकार का गुण क्यों माना जाता है?

पाठ्य - पुस्तक(20)

10.निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए: (3x2)

i)पतंग के साथ- साथ वे भी उड़ रहे हैं- कवि ने बच्चों के लिए ऐसा क्यों कहा है? (3)

Ii) बादलों को" वित्लव के वीर "क्यों कहा गया है ?(3)

Iii) "उषा" कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्रण है - कैसे? (3)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए ।(2x2)

i)शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भव क्यों कहा गया है? (2)

ii) फिराक की रुबाइयों में उभरने वाले वात्सल्य रस का एक शब्दचित्र प्रस्तुत करें ।(2)

iii) "भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई- आशय स्पष्ट कीजिए।(2)

12. निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए (3x2)

i)' बाज़ार दर्शन ' पाठ के आधार पर बाज़ार का जादू चदने का आशय स्पष्ट कीजिए ।(3)

Ii) लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं ,यही ढोल है(3)?

Iii) "काले मेधा पानी दे ' संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता है - स्पष्ट कीजिए ।(3)

13. निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में लिखिए (2x2)

I) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

Ii) डॉ आंबेड़कर की कल्पना का आदर्श समाज कैसे होगा(2)?

Iii) इंदर सेना को मेंढ़क मंडली क्यों कहा जाता था(2)

----------/

आदर्श प्रश्न पत्र - 1

कक्षा12 - हिन्दी केंदिक - उत्तर संकेत

खंड अं

1)अपठित गद्यांश (1x10)

उत्तर-

1.(i) राजनीति मुखौटा ओढ़ने वाले लोग
2. (iii) अनुच्छेद 351
3. (iv) भारत गणतन्त्र या भारत सरकार
4. (iii) हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाना
5. (i) हिन्दी के अतिरिक्त
6. (iv) विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें बढ़ावा मिलना
7.(ii) हिन्दी भाषा का महत्त्व
8. (i) अंग्रेजी
9.(i) अंग्रेजी भाषा की मानसिकता से उबरने के लिए
10. (iii) अस्मिता और भविष्य
2. कोई एक पद्यांश (5x1)
1. 1.(i) तारों के टूटने पर।
2.(ii) सूखे फूलों पर ।
3.(iv) लता।
4.(i) उत्सर्ग।
5. (iv) जैसी करनी वैसी भरनी ।
अंथवा
उत्तर-
1. (i) देश के बारे में।
2.(ii) गीता के उपदेश मनुष्य को जीवन का वास्तविक अर्थ समझाते हैं।
3.(iii) वीर रस।
4.(i) किसी देशभक्त क्रान्तिकारी का समाधि स्थल
5.(i) समय बाँधकर किसी ग्रन्थ का आरम्भ से अन्त तक पाठ।
प्र3 . क (i)फ्रीलांसर
खं(iii)संपादकीय
ग(ii)उल्टा पिरमिड़ शैली
घ (i) इसके माध्यम से रिपोर्टर फोन पर बात करके–
ड़(iii) रीडिफ
प्र .4. 1. (ii) गरीबी और बेकारी का
2.(1) रावण
3. (iii) प्रभु राम
4. (iii) रूपक
5. (ii) व्यापारी
प्र 5. 1. (iv) वायुमंडल
2. (ii) महाकवि कालिदास जी को
3. (ii) संन्यासी को

4. (iii) शिरीष के पेड़ के लिए
5. (i) जिसे दुनियादारी से अधिक मतलब न हो ।
4.पूरक पुस्तक वितान10) x1)
1ii) द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी
2.i)हेल्दी - वेल्दी एंड़ वाइज़
3.ii)गोल मार्केट
4.i) रतनाप्पा
5.iii)मंत्री
6.iv)संघर्षमयी प्रवृत्ति का
7.iii) ताम्र युग
8.iv)मृतकों का टीला
9.ii)ग्रिड प्लान
10.i)मेलुहा
खंड़ -ब
प्र7 . रचनात्मक लेख. (1x6)
भूमिका(1)
विषय - विस्तार (3)
उपसंहार2))
प्र 8. किन्हीं दो के उत्तर (3x2)
कथानक के अनुसार कहानी चरम उत्कर्ष अर्थात् क्लाइमेक्स की ओर बढ़ती है। चरम उत्कर्ष का चित्रण बहुत ध्यानपूर्वक करना चाहिए । भावों या पात्रों की अतिरिक्त अभिव्यक्ति चरम उत्कर्ष के प्रभाव को कम कर सकती है। कहानीकार की प्रतिबद्धता या उद्देश्य की पूर्ति के प्रति अतिरिक्त आग्रह कहानी को भाषण में बदल सकते हैं। सर्वोत्तम यह होता है कि चरम उत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने और लेखकीय पक्षधर की ओर आने के लिए प्रेरित करें लेकिन पाठक को यह भी लगे कि उसे स्वतंत्रता दी गई और उसने जो निर्णय निकाले हैं, वे उसके अपने हैं।
ii) नाटक साहित्य की अत्यंत प्राचीन विधा है।वस्तुतः नाटक साहित्य की वह विधा है जिसकी सफलता का परीक्षण रंगमंच पर होता है। नाटक के प्रमुख तत्व हैं -
(i) कथावस्तु; (ii) पात्र एवं चरित्र-चित्रण;
(iii) संवाद; (iv) देशकाल और वातावरण;
(v) भाषा-शैली; (vi) उद्देश्य।
iii)रेड़ियो नाटक की कहानी सिर्फ घटना प्रधान न हो । संवाद या आवाजों के ज़रिए रेडियो नाटक का कथानक व्यक्त होना चाहिए । कहानी की अवधि काफी लंबी न हो।कहानी में पात्रों की संख्या सीमित हो –क्योंकि रेडियो नाटक की अवधि ही सीमित है तो फिर अपने-आप ही पात्रों की संख्या भी सीमित हो जाएगी। क्योंकि श्रोता सिर्फ आवाज के सहारे चरित्रों को याद रख पाता है, ऐसी स्थिति में रेडियो नाटक में यदि बहुत ज्यादा किरदार हैं तो उनके साथ एक रिश्ता बनाए रखने में श्रोता को दिक्कत होगी।

प्र .9. किन्हीं दो के उत्तर (4x2)

i) समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है यानी समाचार लिखते हुए रिपोर्टर उसमें अपने विचार नहीं डाल सकता जबकि फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है। शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती। फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं।

• एक अच्छे और रोचक फीचर में फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि का होना ज़रूरी है।

* फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है। हल्के-फुलके विषयों से लेकर गंभीर विषयों और मुद्दों पर भी फ़ीचर लिखा जा सकता है।

Ii) विशेष लेखन किसी विशेष विषय पर या जटिल एवं तकनीकी क्षेत्र से जुड़े विषयों पर किया जाता है, जिसकी अपनी विशेष शब्दावली होती है। इसके शब्दावली से संवाददाता को अवश्य परिचित होना चाहिए। उसे इस तरह लेखन करना चाहिए कि रिपोर्ट को समझने में परेशानी न हो ।

iii) पत्रकार देश-विदेश में घटित हो रही घटनाओं से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्र करता है। वह उपलब्ध सूचनाओं पर संदेह करता तथा उनकी विश्वसनीयता की जाँच करता है। इस प्रकार वह प्रामाणिक तथ्यों को खोजकर आम लोगों तक पहुँचाता है। अतः संदेह करना पत्रकार का गुण माना जाता है।

प्र10.कोई दो उत्तर (3x2)

1) जिस प्रकार ऊपर उड़ते समय पतंग को किसी प्रकार की बाधाओं का एहसास नहीं होता, उसी प्रकार बच्चों को खेलते रहने, अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ने और उन्नति करते समय किसी प्रकार के कष्टों एवं संकटों का अनुभव नहीं होता। उनके समक्ष आने वाली प्रत्येक मुसीबतें स्वतः ही दूर हो जाती हैं। वे उन्हें आगे बढ़ने से नहीं रोक पाती हैं। इसलिए कवि ने बच्चों की तुलना पतंग से करते हुए ऐसा कहा है।

2) 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर' बादलों को कहा गया है, क्योंकि बादल ही धरा पर वर्षा और बिजली गिराकर क्रांति करते हैं और उथल-पुथल मचा देते हैं। उन्हीं के कारण छोटे पौधे, घास और वनस्पतियों को उगने और बढ़ने का अवसर मिलता है। इससे कृषक जैसे सामान्य वर्ग को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। कवि का यह विचार क्रांतिकारी है ओंर यह सम्बोधन उचित हैं।

3. 'उषा' कविता में कवि ने गाँव की सुबह का गतिशील और जीवन्त चित्रण किया है। बहुत सुबह पूर्व दिशा में सूर्य दिखाई देने से पहले आकाश नीले शंख के समान प्रतीत हो रहा था। उसका रंग ऐसा लग रहा था जैसे किसी गाँव की महिला ने चूल्हा जलाने से पहले राख से चौका लीप दिया हो। उसका रंग गहरा था। कुछ देर बाद जब सूर्य क्षितिज से ऊपर उठा तो सूर्य की हल्की लालिमा सब ओर फैल गयी। ऐसा लगा कि मानो काले रंग की सिल पर जरा-सा लाल केसर डाला गया हो और फिर उसे धो दिया हो या किसी स्लेट पर खड़िया चाक मल दी हो। आकाश के नीलेपन में सूर्य ऐसे प्रकट हुआ जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा सुन्दर शरीर झिलमिलाता हुआ प्रकट हो रहा हो, लेकिन सूर्य के दिखाई देते ही यह सारा प्राकृतिक सौन्दर्य मिट गया।

प्र.11 कोई दो उत्तर (2x2)

1. शक्ति बाण लगने से लक्ष्मण मूचिछत गिर पड़ा।वैद्य सुषेण ने बताया था कि भोर होने से पहले संजीवनी बूटी आ गई तो लक्ष्मण का जीवन संभव है, वरना उसकी मृत्यु हो सकती है। भोर होने के करीब थी, किंतु हनुमान का पता तक नहीं था। अतःराम लक्ष्मण की मृत्यु के भय से भयभीत हो गए थे।

2. शायर फ़िराक गोरखपुरी की रुबाइयों में वात्सल्य के सुन्दर चित्र हैं। एक चित्र है–माँ बच्चे को निर्मल जल से स्नान कराती है। उलझे हुए बालों को कंघी से संवारती है। घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है। बच्चा माँ को यह क्रिया करते देखता है तो प्रेम से निहारने लगता है ।

3. 'भाषा के चक्कर में जरा टेढ़ी फँस गई' इस काव्य पंक्ति का अर्थ यह है कवि ने कथ्य को इतना चमत्कार से युक्त बना दिया कि कथ्य दबाकर बैठ गई। उससे सहज अर्थ निकलना कठिन हो गया। सरल, सीधी बात को भी सरल सीधे तरीके से करने की बजाय उसे चमत्कारपूर्ण ढंग से कहने के प्रयास में कवि उलझ जाता है। वह भाषा में बार-बार परिवर्तन करता है. पर बात बनती नहीं है।

12. कोई दो उत्तर (3x2)

1. बाज़ार में जादू होता है। यह आँख की राह पर काम करता है। यह रूप का जादू और आकर्षण होता है। यहाँ आकर सजी-सजाई चीज़ों को देखकर हम उन्हें खरीदने को मजबूर हो जाते हैं। जिस प्रकार चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार बाज़ार का जादू चढ़ने पर मनुष्य उसकी ओर आकर्षित होता है। उसे मालूम होता है कि मैं यह सामान लूँ, वहभी लूँ। उसे सभी सामान जरूरी और आरामबढ़ाने वाला मालूम होता है ।

2. लुट्टन पहलवान का कोई गुरु नहीं था, बल्कि वह ढोलक की आवाज़ के आधार पर ही अपनी शक्ति और दाँव-पेंच की परीक्षा लेता था। वह स्वयं भी ढोल की आवाज़ के आधार पर कुश्ती लड़ता था और अपने पुत्रों और शिष्यों को ढोलक की आवाज़ पर ही पूरा ध्यान देने के लिए प्रेरित करता था। वह दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करता। इसी कारण उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं यही ढोल है।

3. 'काले मेघा पानी दे', डॉ० धर्मवीर भारती का संस्मरण है। विज्ञान का सत्य यह है कि बादलों को पानी देने से बादल नहीं बरसते लेकिन जीजी का सहज प्रेम यह कहता है कि जब हम बादलों को पानी देने का त्याग करें तब झमाझम बरसेंगे। यहाँ विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय है। वस्तुतः लेखक को यह विज्ञान-सम्मत नहीं लगता कि वर्षा न होने पर लोग मेंढ़क-मंडली पर पानी डालें, परन्तु उसकी जीजी की यही धारणा है। अन्त में वह अपनी जीजी के प्रेम के समक्ष नतमस्तक हो जाता है और प्रचलित प्रथा का विरोध नहीं करता ।

13. कोई दो उत्तर (2x2)

1. भक्तिन के आ जाने के बाद महादेवी को देहात की संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा का ज्ञान हो गया था। इससे पहले वह केवल शहरी जीवन से ही जुड़ी हुई थीं। इसके साथ ही भक्तिन ऐसी परिस्थितियाँ भी पैदा कर देती थी कि वह देहाती परम्पराएँ तक निभाने को बाध्य हो जाती थीं। इस प्रकार भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गईं।

2. डॉ० भीमराव आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज वह कहलाएगा जो समानता एवं भाईचारे पर

आधारित होगा। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रता से अपना व्यवसाय चुन सकेगा। प्रत्येक को अपने सामर्थ्य के अनुसार विकास का समान अवसर प्राप्त होगा। उनका मानना है कि शुरू से ही समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर व समान व्यवहार मिलना चाहिए।

3. गाँवों में जब आषाढ़ में पानी नहीं बरसता था या सूखा पड़ने का अंदेशा होता था तो लड़के इन्द्र देवता से पानी माँगते थे। जो बच्चे मेंढक की तरह उछल-कूद, शोर-शराबा व कीचड़ करते थे, उन्हें मेंढ़क-मंडली कहा जाता था। मेंढक-मंडली में दस-बारह वर्ष से सोलह-अठारह वर्ष के लड़के होते हैं। ये वस्त्र के नाम पर सिर्फ एक जाँघिया या कभी-कभी सिर्फ लंगोटी पहनते थे।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन , एरणाकुलम संभाग

प्रतिदर्श प्रश्न2 - 23-2022 पत्र-

विषय हिन्दी)आधार (विषय कोड 302 -

कक्षा :बारहवीं

निर्धारित समय घंटे 3 - अधिकतम अंक - 80

सामान्य और आवश्यक निर्देश -

- इस प्रश्नपत्र में दो खण्ड हैं -खंड 'अ' और 'ब' । कुल 13 प्रश्न हैं ।
- खण्ड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं , जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
- खण्ड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं । प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए ।
- दोनों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर क्रमश: लिखिए ।

खण्ड - 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

अपठित गद्यांश

प्रश्न .1 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए । (1 x10 = 10)

राहे पर खड़ा है, सदा से ठूँठ नहीं है। दिन थे जब वह हरा भरा था और उस जनसंकुल चौराहे पर अपनी छतनार डालियों से बटोहियों की थकान अनजाने दूर करता था। पर मैंने उसे सदा ठूँठ ही देखा है। पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टंग गया हो। रात में वह काले भूतहै लगता सा-, दिन में उसकी छाया इतनी गहरी नहीं हो पाती जितना काला उसका जिस्म है और अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका सा- पर ज़मीन छाया गहरी ही उतनी शरीर सूखा उसका भी में धूप प्रचंड मिलेगा। न और 'अभिप्राय' में। चांदनी उजियारी की रात जैसे डालताजब से होश संभाला है, जब से आंख खोली है, देखने का अभ्यास किया है, तब से बराबर मुझे उसका निस्पंद, नीरस, अर्थहीन शरीर ही दिख पड़ा है।

पर पिछली पीढ़ी के जानकार कहते हैं कि एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे और उसके पत्तों से, उसकी टहनियों और डालों से टकराती हवा की सरसराहट दूर तक सुनाई पड़ती थी। पर आज वह नीरव है, उस चौराहे का जवाब जिस पर उत्तरदक्षिण-, पूरब पश्चिम- को जल कभी जिसने है। बहता अविरल जीवन सहारे जिनके और हैं मिलती राहें की और चारों दी संज्ञा की जीवन, उसने निश्चय जाना होगा की प्राणवान जीवन भी जल की ही भांति विकल, अविरल बहता है। सो प्राणवान जीवन, मानव संस्कृति का उल्लास उपहार लिए उन चारों राहों की संधि पर मिलता था जिसके एक कोण में उस प्रवाह से मिल एकांत शुष्क आज वह ठूँठ खड़ा है। उसके अभाग्यों परंपरा में संभवतः एक ही सुखद अपवाद है जाने खसू स्नेहरस का अंदर उसके - क संख्या सेा लोप हो जाना। संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

1. सूखे वृक्ष के अतीत का चित्र क्या था ?

क) ठूँठ था ।

ख) दुबला पतला था

ग) डालियाँ कम थीं

घ) हरा भरा था

2. वृक्ष की वर्तमान स्थिति क्या है ?

क) ठूँठ है

ख) छतनार डालियाँ हैं

ग) कम नीरस है

घ) हरा भरा है

3. चितेरे का छायाचित्र कैसा रहेगा ?

क) बढिया

ख) शुष्क

ग) हरित

घ) देखने योग्य

4. लेखक कब से वृक्ष को देख रहा था ?

क) जन्म से

ख) बचपन से

ग) यौवन से

घ) वृद्धावस्था से

5. वृक्ष के अतीत की स्थिति का परिचय लेखक को कैसे मिला है ?

क) वृक्ष को देखने से

ख) चित्रकार का चित्र देखकर

ग) समाचार सुनकर

घ) पुरानी पीढी के लोगों से

6. जीवन और जल में क्या समानता है?

क) दोनों सिर्फ़ आगे ही चलते हैं

ख) दोनों में जीवन है

ग) दोनों रुकते नहीं हैं ।

घ) दोनों में पानी है

7. सूखे वृक्ष का सुखद अपवाद क्या है ?

क) वृक्ष का स्नेहरस सूख गया

ख) वृक्ष ठूँठ है

ग) वृक्ष छतनार था

घ) वृक्ष का एक बढिया अतीत था

8. प्रस्तुत गद्यांश से मानव जीवन को क्या संदेश मिलता है ?

क) जीवन का कोई अंत नहीं है

ख) संज्ञा लुप्त होने से कष्ट की अनुभूति कम होती है

ग) जीवन सदा एक जैसा नहीं रहेगा

घ) अतीत के ऊपर हम गर्व कर सकते हैं

9. वृक्ष के बारे में पिछली पीढ़ी के लोग क्या कहते हैं ?

क) वृक्ष ने बहुत फल दिए थे

ख) वृक्ष की लम्बी परम्परा थी

ग) वृक्ष की जडें बहुत मजबूत थी

घ) वृक्ष की बहुत बडी छतनार शाखाएँ उपशाखाएँ थी

10. संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति क्यों कम हो जाती है ?

क) पीडा का अनुभव न होने से

ख) पीडा न होने से

ग) पीडा सहन करने से

घ) पीडा का नज़रंदाज़ करने से

प्रश्न .2 निम्नलिखित पद्यांश में से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प- - चयन द्वारा दीजिए 1)×5 =5(

है जनम लेते जगह में एक ही
उन्हें हैं पालता । एक ही पौधा
रात में उनका चमकता चाँद भी
एक ही सी चाँदनी है डालता ।
छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ
फाड देता है किसी का कर वसन ।
प्यार डूबी तितलियों के पर कतर
भौर का है बेध देता श्याम तन ।
फूल लेकर तितलियों की गोद में

भौर को अपना अनूठा रस पीता।

1. प्रस्तुत पद्यांश के लिए सम्भावित शीर्षक क्या है?

क) फूल और कांटा

ख) तितलियां

ग) विभिन्न वर्ग

घ) भला और भलाई

2. यहाँ 'काँटा' किसका प्रतीक है ?

क) कठिनाई का

ख) दुख का

ग) सुख का

घ) दुर्जनों का

3. काव्यांश के आधार पर फूल की विशेषता क्या है ?

क (सुख देना

ख(प्यार देना

ग(कष्ट देना

घ रस (देना

4. यहाँ किसकी महिमा के बारे में बताया गया है ?

क (आभूषण की

ख आडम्बर चीजों की (

गसज्जनों की (

घसाधुओं की (

5. प्रस्तुत पद्यांश का संदेश क्या हो सकता है ?

क(सफलता के लिए परेशानियों को झेलना है ।

ख (अच्छा आदमी सदा दूसरों की मदद करेगा ।

ग (अच्छा वस्त्र पहनने से आकर्षण का पात्र बनेगा ।

घ(दुर्जनों को अच्छा बनाया जा सकता है ।

अथवा

विषुवत रेखा का वासी जो
जीता है निज हाँफहाँफ कर ।-
रखता है अनुराग अलौकिक
वह भी अपनी मातृभूमि पर
ध्रुववासी जो हिम में तम में
जी लेता है काँप–काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर

कर देता है प्राण न्योच्छावर॥

1. कवि ने मातृभूमि को किस कारण श्रेष्ठ बताया है?

क) विषुवत रेखा का वासी होने से

ख) हाँफ-हाँफ कर जीने से

ग) एक अलौकिक अनुराग रखने से

घ) प्राण न्योच्छावर करने से

2. 'अपना' और 'अलौकिक' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

क) अहं और लौकिक

ख) दूसरा और लौकिक

ग) पराया और सलौलिक

घ) पराया और लौकिक

3. कौन से देश के निवासी हाँफ – हाँफ कर जीते है?

क) ध्रुववासी

ख) विषुवत रेखा का वासी

ग) हिम और तम वासी

घ) तीनों सही है

4. 'कर देता है प्राण न्योच्छावर' का अर्थ क्या है ?

क) बलिदान देने केलिए तैयार होना

ख) आत्महत्या केलिए तैयार होना

ग) किसीको मारने केलिए केलिए तैयार होना

घ) सिर काटकर देने केलिए तैयार होना

5. प्रस्तुत पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए ।

क) भारत ही सबसे श्रेष्ठ देश है ।

ख) हमें भारत सबसे न्यारा है ।

ग) हर व्यक्ति को अपना देश सबसे प्यारा है ।

घ) ध्रुववासी और विषुवत रेखा का वासी दोनों को अपना देश प्यारा है।

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने केलिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए ।(1 x5 = 5)

.1इंटरनेट पर क्या क्या सुविधाएँ उपलब्ध है ?

क सुनने और देखने की (पढने और देखने की ख (

ग पढने (पढने और सुनने की घ (,सुनने और देखने की

.2भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला है ?

क1556 सन (,गोवा में ख 1865 (, कोलकत्ता में

ग 1565 (, मुंबई में घ 1556 (, चेन्नाई में

.3समाचार लेखन में कितने ककार है ?

क छह (तीन घ (चार ग (दस ख (

4. समाचार पत्र की आवाज़ निम्नलिखित में कौन सी है ?

क संपादकीय लेखन (स्तंभ लेखन ख (

ग शीर्षक (फीचर लेखन घ(

5. पत्रकारिता के क्षेत्र में `शोर` क्या है ?

क कार्यालय (की आवाज़ ख समाज की आवाज़(

ग कोई भी उपयुक्त नहीं (जनता की आवाज़ घ (

प्रश्न 4 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए ।(1 x5 = 5)

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे

हम समर्थ शक्तिवान

हम एक दुर्बल को लाएँगे

हम एक बंद कमरे में

उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज है ?

तो आप क्यों अपाहिज है ?

आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा:

देता है?

(कैमरा दिखाओ इसे बडा बडा)

हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है

जल्दि बताइए वह दुख बताइए

बता नहीं पाएगा ।

1. यहाँ कौन अपने को समर्थ और शक्तिमान समझता है?

क) अपाहिज

ख) मीडिया वाले

ग) नेता गण

घ) दर्शक

2. अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा?

क) अपना सुख़

ख) अपना दुख़

ग) अपना सामर्थ्य

घ) अपनी शक्ति

3. मीडिया वाले की दृष्टि से अपाहिज कैसे है?

क) शक्तिशाली

ख) पूर्ण समर्थ

ग) बुद्धिमान

घ) दुर्बल

4. मीडिया कर्मी द्वारा अपाहिज से पूछे गए प्रश्न कैसे हैं?

क) रोचक और संवेदन शील

ख) प्रासंगिक

ग) मज़ेदार

घ) अनावश्यक और संवेदनहीन

5. प्रस्तुत काव्यांश का विषय है-

क) अपाहिज के प्रति दया दिखाना

ख) अपाहिज पर व्यंग्य करना

ग) अपाहिज का उजागरण करना

घ) मीडिया वाले की क्रूरता दिखाना

प्रश्न .5 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए ।(1 x5 = 5)

बाजार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है , वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो , और मन खाली हो , ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुंच पाएगा ।

1. बाजार के जादू का असर कब होता है ?

कजेब भरी और मन खाली (

खजेब खाली और मन भी खाली (

गदोनों स्थितियों में (

घतीनों (उत्तर गलत हैं।

2. मन खाली है इसका क्या आशय है -?

कमन शांत है। (

खमन में समस्याएँ नहीं हैं । (

गमन में एकाग्रता है । (

घमन में पक्का विचार नहीं है । (

3. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर जादू का असर किस से होता है?

कआकर्षण से धन सम्पत्ति के प्रति (

ख(पैसों के प्रति आकर्षण से

गअधिकार के प्रति आकर्षण से (

घचीजों के प्रति आकर्षण से (

4. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर बताइए कि बाजार जाते समय हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए ?

कजेब भर देना चाहिए (

खजरूरी चीजों की सूची तैयार करनी है (

ग मन खाली कर देना (चाहिए

घकिसी को अपने साथ ले जाना चाहिए । (

5. प्रस्तुत गद्यांश का विषय क्या है ?

कजेब भरी और मन खाली (

खबाजार का जादू (

गबाजार का असर (

घजादू का असर (

प्रश्न .6निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए । (1 x10 = 10)

1मोहन जोदडो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा ?

क) सभ्यता का

ख) राजनीति का

ग) धर्म का

घ) व्यापार का

.2सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषता है-

क) पीने के पानी की व्यवस्था

ख) पानी को सुरक्षित रखने की व्यवस्था

ग) शुद्ध पानी की व्यवस्था

घ) अशुद्ध पानी निकासी की व्यवस्था

.3मोहन जोदडो की वास्तुकला की तुलना किस आधुनिक नगर से की जा सकती है ?

क) चेन्नाई

ख) चंडीगढ

ग) दिल्ली

घ) मुम्बई

4. सिल्वर वेडिंग शादी का कौन सा साल होता है?

क) 21

ख) 22

ग) 23

घ) 25

5. यशोधर बाबू को कौन सी सवारी निहायती बेहूदा लगती है?

क) रेलगाडी

ख) स्कूटर

ग) साइकिल

घ) गाडी

6. यशोधर का दूसरा बेटा क्या करता है ?

क) नौकरी

ख) साफ सफाई

ग) आईएएस की तैयारी

घ) समाज सेवा

7. यशोधर पंत बारबार किस शब्द का प्रयोग करते हैं ?

क) एक्स्क्यूस मी

ख) सॉरी

ग) इट्स ओके

घ) सम्हाउ इम्प्रॉपर

8. यशोधर बाबू अपने परिवार को किसके संस्कारों में डालना चाहते थे ?

क)श्रीराम

ख) जनार्दन जोशी

ग)भूषण

घ) किशनदा

.9'जूझ' कहानी का मूल विषय क्या है ?

क किसान परिवार का गर्व (

ख किसान बच्चे का संघर्ष (

ग सामंतवादी समाज का उजागर (

घ एक गरीब किसान का वर्णन (

. 10सौंदलगेकर कौन है ?

क) लेखक

ख) अध्यापक

ग) वकील

घ) पंचायत प्रमुख

खण्ड 'ब' - (वर्णनात्मक प्रश्न)

प्रश्न .7दिए गए अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग शब्दों में 120 6) रचनात्मक लेख लिखिए ।x1 = 6)

क. नई शिक्षा नीति

ख. राष्ट्रीय एकता में हिंदी का स्थान

ग. अगर मैं चिडिया बनती

घ. आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रश्न 3) शब्दों में दीजिए । 60 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 8x2 = 6)

क. कहानी और नाटक में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए ।

ख. रेडियो नाटक की अवधि छोटी क्योन रखी जाती है ?

ग. अप्रत्याशित विषयों पर लेख लिखते समय ध्यान देने की बातें क्या -क्या हैं ?

प्रश्न .9निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में लिखिए । 80 4) x2 = 8)

क. कहानी लेखन से समाचार लेखन की कला किस प्रकार भिन्न है ? समाचार लेखन की शैली का नाम क्या है ?

ख. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ? वे किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं ?

ग. फ़ीचर लेखन में किन किन बातों के ऊपर ध्यान देना चाहिए ।

प्रश्न .10काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर

लगभग 3) शब्दों में दीजिए । 60x2 = 6)

क.' बात सीधी थी पर ' कविता में भाषा को सहुलियत से बरतने का क्या आश है ?

ख. 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है ' कविता में पक्षियों की गति में तीव्रता और क की गति में शिथिलता के कारण बताइए ।

ग.धूत कहो , अवधूत कहौ .....' सवैये में तुलसीदास का स्वाभिमान प्रतिबिम्बित होता है । स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 11) शब्दों में दीजिए । 40 लगभग2 x2 = 4)

क. 'बादल राग ' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

ख. 'छोटा मेरा खेत ' कविता में प्रस्तुत रूपक समझाइए

ग. ' पतंग ' नामक कविता में प्रकृति में आए परिवर्तन का वर्णन अपने शब्दों में दीजिए ।

प्रश्न . 12गद्यखंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 3) शब्दों में दीजिए । 60x2 = 6)

क .भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं है स्पष्ट कीजिए । -

खपाठ में पानी की बर्वादी होने और बर्वादी न होने सम्बंधी दोनों तर्कों ' काला मेघा पानी दे ' . पर टिप्पणी कीजिए ।

ग .पहलवान की ढोलक की आवाज़ का पूरे गांव पर क्या असर होता था ?

प्रश्न . 13गद्यखंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 2) शब्दों में दीजिए । 40x2 = 4)

क बाज़ारूपन से क्या मतलब है (?

ख (डॉ अम्बेडकर के मतानुसार 'दासता' से क्या अभिप्राय है ?

ग) शिरीष को अवधूत क्यों कहा गया है ?

उत्तर संकेत

I .

1. घ) हरा भरा था
2. क) ठूँठ है

3. ख) शुष्क

4. ख) बचपन से

5. घ) पुरानी पीढी के लोगों से

6. क) दोनों सिर्फ़ आगे ही चलते हैं

7. क) वृक्ष का स्नेहरस सूख गया

8. ग) जीवन सदा एक जैसा नहीं रहेगा

9. घ) वृक्ष की बहुत बडी छतनार शाखाएँ उपशाखाएँ थी

10. क) पीडा का अनुभव न होने से

II . 1. क) फूल और कांटा

2. घ) दुर्जनों का

3. घ) रस देना

4. ग) सज्जनों की

5. ख) अच्छा आदमी सदा दूसरों की मदद करेगा ।

अथवा

1 ग) एक अलौकिक अनुराग रखने से

2 घ) पराया और लौकिक

3. ख) विषुवत रेखा का वासी

4 क) बलिदान देने केलिए तैयार होना

5 ग) हर व्यक्ति को अपना देश सबसे प्यारा है ।

III 1. पढने , सुनने और देखने की ।

.2सन् गोवा में 1556

.3छह

.4सम्पादकीय लेखन

.5कोई भी उपयुक्त नहीं है

IV

1. मीडिया वाला

.2अपना दुख

.3दुर्बल

.4अनावश्यक और संवेदन हीन

.5मीडिया वाले की क्रूरता दिखाना

V

1. दोनों स्थितियों में

.2मन में पक्का विचार नहीं है ।

.3चीज़ों के प्रति आकर्षण से

.4जरूरी चीज़ों की सूची तैयार करनी है ।

.5बाज़ार का जादू

VI 1. सभ्यता का

2. अशुद्ध पानी निकासी की व्यवस्था

.3चण्डीगढ

25 .4

.5स्कूटर

.6आईएएस की तैयारी

.7सम्हाउ इम्प्रॉपर

.8किशनदा

.9किसान बच्चे का संघर्ष

.10अध्यापक

VII भूमिका , विस्तार और समापन

VIII क कहानी श्रव्य और नाटक दृश्य ., नाटक में मन्चीकरण की जरूरत और सिर्फ कथोपकथन

ख समय सीमा प्रमुख है ., श्रव्य होने से जल्दी समाप्त करना है ।

गअभिव्यक्ति । कम से कम शब्दों का प्रयोग तथा सुंदर .

IX क समाचार तथ्य पर निर्भर ., साधारण भाषा का प्रयोग , उल्टा पिरामिड शैली

ख- तीन प्रकार के . पूर्णकालिक , अंशकालिक और फ़्रीलैंस

ग पात्रों की मौजूदगी ., विभिन्न पहलू , नाटकीय प्रस्तुतिकरण

X

. 1 शब्द का प्रयोग उसके लिए उपयुक्त अर्थ के अनुसार करना चाहिए । सरल भाषा का उपयोग ही श्रेयस्कर है । भाषा में संप्रेक्षणीयता जरूरी है ।

.2चिडिया के बच्चे प्रतीक्षारत है जबकि कवि अकेला है ।

.3तुलसीदास राजाश्रय न होकर रामाश्रित है ।

XI

1. किसान में जब संगठन की शक्ति आएगी तभी विप्लव मचा सकता है ।

.2खेत का रूपक कविता से जोडा गया है ।

.3वर्षा ऋतु के बाद शरद ऋतु का आगमन हुआ है

XII

क भक्तिन बात को अपने अनुसार तोडती मरोडती है । कभी कभी वह झूठ बोलती है ., चतुरता भी दिखाती है ।

खगर्मी के समय में पानी को बर्वाद करना प्रासंगिक नहीं है । जबकि पानी की कटाई के लिए . पानी की बुआई जररूरी है

ग ढोलक की आवाज़ पूरे गांव के लिए संजीवनी बूटी थी । .

XIII

1. बाज़ारूपन का मतलब बाज़ार के प्रति अनावश्यक आकर्षण ।

.2दासता समता का विरोधी है । कोई भी व्यक्ति दूसरे से ऊंच नीच नहीं हो सकता ।

.3हर मौसम में शिरीष के फूल टिके रहते हैं ।

।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन ,एरणाकुलम संभाग

वार्षिक परीक्षा 23 -2022 - 3

कक्षा बारहवीं -

विषय (आधार) हिन्दी -

निर्धारित समय 3 -घन्टे **अधिकतम**

अंक 80 - अंक

सामान्य निर्देश :-

इस प्रश्न पत्र में 1मूल 13 प्रश्न है।

सभी प्रश् 2नों के उत्तर निर्देशानुसार देना अनिवार्य हैं।

विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें। 3

खण्ड - अ (वस्तुपरक प्रश्न)

प्रश्न -: निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए .1 -

10=1×10

कवियोंआज संकट में है। 'पलाश' शायरों तथा आम आदमी को सम्मोहित करने वाला , वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यदि इसी प्रकार पलाश का विनाश जारी रहाढाक के ' तो यह , ही बचेगा। अरावली और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं में जब पलाश वृक्ष वाली कहावत में 'तीन पात तो लगता था कि वन में आग लग गई हो अथवा अग्नि देव फूलों के ,में फूलता था (वसंत) चैत रूप में खिल उठे हों। पलाश पर एकचालीस -दो दिन में ही संकट नहीं आ गया है। पिछले तीस- गाँव में चकबंदी होने तथा वन माफियाओं -गाँव ,वाले कारखाने बढ़ने वर्षों में दोना पत्तल बनाने पंज ,पश्चिम बंगाल ,बिहार ,मध्य प्रदेश ,द्वारा अंधाधुंध कटान करने के कारण उत्तर प्रदेशाब , %10 महाराष्ट्र आदि प्रांतों में पलाश के वन घटकर ,कर्नाटक ,राजस्थान ,हरियाणासे भी कम रह गए हैं। वैज्ञानिकों ने पलाश वनों को बचाने के लिए ऊतक संवर्द्धन द्वारा (टिशू कल्चर) परखनली में पलाश के पौधों को विकसित कर एक अभियान चलाकर पलाश वन रोपने की योजना प्रस्तुत की है। हरियाणा तथा पुणे में ऐसी दो प्रयोगशालाएँ भी खोली गई हैं। एक समय थाजब , मालाएँ टेसू के फूलों के लिए दुनियाभर में -अरावली की पर्वत बंगाल का पलाशी का मैदान तथा मशहूर थीं। विदेशों से लोग पलाश के रक्तिम वर्ण के फूल देखने आते थे।

महाकवि पद्माकर ने छंद ,पिक में ,पानन में ,पौन हूँ में ,कहै पद्माकर परागन में" - ,बुंदेलखंडी ,अवधी ,न किया था। व्रजलिखकर पलाश की महिमा का वर्ण "पलासन पगंत है। खांखर ' पंजाबी लोक गीतों में पलाश के गुण गाए गए हैं। कबीर ने तो ,हरियाणवी ,राजस्थानी कहकर पलाश की तुल 'भया पलाशना एक ऐसे सुंदर सजीले नवयुवक से की हैजो अपनी जवानी , रह जाता है। वसंत व ग्रीष्म ऋतु में किंतु बुढ़ापे में अकेला ,में तो सबको आकर्षित कर लेता है किंतु शेष आठ महीने वह ,उसे सभी निहारते हैं ,भरे पत्ते रहते हैं-जब तक टेसू में फूल व हरे पॉलीथीन -झंखाड़ की तरह रह जाता है। पर्यावरण के लिए प्लास्टिक-पतझड़ का शिकार होकर झाड़

,थाली ,पत्तल ,थैले ,जिसके पत्ते दोने ,पर रोक लगने के बाद पलाश की उपयोगिता महसूस की गई %90 चालीस वर्षों में-गिलास सहित न जाने कितने उपयोग में आ सकते हैं। पिछले तीसवन नष्ट कर डाले गए। बिना पानी के बंजरऊसर तक में उग आने वाले इस पेड़ की नई पीढ़ी तैयार , पलाश विलुप्त वृक्ष हो जाएगा। तो ,नहीं हुई । यदि यही स्थिति रही और समाज जागरूक न हुआ

प्रश्न?गद्यांश में लेखक की चिंता का क्या कारण है (क)

(i) पलाश के वृक्षों का घटता स्तर (ii) ऊतक संवर्द्धन की कमी (iii) पर्यावरण की सुरक्षा (iv) जीवन का संघर्ष

?अरावली और सतपुड़ा में पलाश के वृक्ष कैसे लगते थे (ख)

) i) वन में लगी आग के समान (ii) ढाक के तीन पात के समान)iii वर्षा ऋतु में इंद्रधनुष के समान ((iv) गाँव में खिले टेसू के फूल के समान

?पलाश के वनों की संख्या कम होने का क्या कारण है (ग)

(i) गाँव में चकबंदी तथा माफियाओं द्वारा इनका अंधाधुंध काटा जाना (ii) कारखानों में इन्हें महत्व न दिया जाना

)iii (पलाश के वृक्ष का घटता महत्व (iv) जनसंख्या का अधिक होना

?पलाश के वृक्षों को बचाने के लिए क्या किया जा रहा है (घ)

(i) लोगों में जागरुकता लाकर नए पलाश लगाना (ii) अभियान चलाकर पलास वन रोपने की योजना प्रस्तुत करना

)iii पन्नाश के महत्व से वंचित रखकर अन्य को महत्व देना ((iv) उपरोक्त सभी

कबीर ने पल (ड)ाश की तुलना किसने की है?

(i) वृद्ध व्यक्ति से (ii) शायरों से (iii) कोयल के कूकने (iv) सुंदर सजीले नवयुवक से

?इतिहास में पलाश के फूलों को किसमें स्थान मिला है (च)

)i) विभिन्न कवियों की रचनाओं में (ii) लोक गीतों में-(iii) (i) और)ii) दोनों (iv) कला एवं संस्कृति में

?पलाश की उपयोगिता कब महसूस की गई (छ)

)i) प्लास्टिक) ने के बादपॉलीथिन की थैलियों पर रोक लग-ii) कवियों द्वारा तिरस्कृत होने के बाद

)iii) इतिहास द्वारा विस्मृत होने के बाद (iv) अन्य वृक्षों का महत्त्व कम होने

के बाद

शायरों और आम आदमी को सम्मोहित करने वाला पलाश आज किस संकट से गुजर ,कवियों (ज)
?रहा है
(i) नव के भय के निर्माण-(ii) विलुप्त होने के भय के (iii) महत्त्वहीन होने के भय के (iv)
अपनेपन के भय के

गीतों में गाए गए है-पलाश के गुण किस भाषा के लोक (झ)ं?
(i) बुंदेलखंडी (ii) पंजाबी (iii) ब्रज (iv) ये सभी
?श किस विषयवस्तु पर आधारित हैप्रस्तुत गद्यां (ञ)
(i) प्रकृति वर्णन पर (ii) पलाश के संकट पर (iii) पर्यावरण सुरक्षा पर (iv) साहित्य
और पलाश पर
प्रश्न निम्नलिखित में से किसी एक .2 -पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए -:

05=1×5
(1)

पथ बंद है पीछे अचल है पीठ पर धक्का प्रबल । मत सोच बढ़ चल तू अभय, ले बाहु में उत्साह-बल। जीवन समर के सैनिको संभव असंभव को करो पथ-पथ निमंत्रण दे रहा, आगे कदम, आगे कदम। ओ बैठने वाले तुझे देगा न कोई बैठने पल-पल समर, नूतन सुमन-शय्या न देगा लेटने ।	आराम संभव है नहीं जीवन सतत संग्राम है बढ़ चल मुसाफिर धर कदम, आगे कदम, आगे कदम ऊँचे हिमानी श्रृंग पर, अंगार के भ्रु-भृंग पर तीखे करारे खंग पर आरंभ कर अद्भुत सफ़र ओ नौजवाँ, निर्माण के पथ मोड़ दे, पथ खोल दे जय-हार में बढ़ता रहे आगे कदम, आगे कदम।

?प्रस्तुत काव्यांश में कवि किसे संबोधित कर रहा है (क)
(i) भारत माता को (ii) हिमालय पर्वत को) iii जीवन जीने वाले उत्साही (युवाओं को (iv)
सेना के जवानों को
?कवि ने किस सफर को अदभुत कहा है (ख)
(i) पर्वतारोहण (ii) जीवनरूपी (iii) मातृभूमि के प्रति समर्पित
(iv) संघर्षहीन
?सा अलंकार है-समर के सैनिकों संभव असंभव को करो पंक्ति में कौन-जीवन (ग)
(i) रूपक) ii अन्योक्ति ((iii) अनुशास (iv)
यमक

' (घ)आराम संभव है नहीं?पंक्ति का क्या आशय है 'जीवन सतत संग्राम है ,

(i) जीवन जीते हुए आराम करना भी संभव है

(ii) भले ही जीवन में संघर्ष है परंतु आराम करना भी आवश्यक है

(iii) जीवन जीते हुए आराम करना संभव नहीं है क्योंकि जीवन में सदैव संघर्षरत् रहना पड़ता है ,

)iv) संघर्षों का जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है

?पद्यांश के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है (ङ)

(i) व्यक्ति को प्रत्येक स्थिति में अपने कदम आगे बढ़ाते रहना चाहिए (ii) मनुष्य को विश्राम करना चाहिए

(iii) समस्याओं का सामना न करके आगे बढ़ना चाहिए (iv) किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए

अथवा

(2)

मैं उनके धूप अँधियारों में सूरज की किरणें भर दूँगा, जिनकी बुझी हुई आँखों में शबन हैं, श्रृंगार नहीं है । आज सत्य के गोरे मुख पर राजनीति की चेचक फूटी। लक्ष्मी का दर्शन करते ही पंडित से रामायण छूटी। मैं तो अपने मन-मंदिर में उनकी चरण-धूल पूजूँगा, मानवता की सेवा जिनका मजहब है, व्यापार नहीं है। आज ज़िंदगी डूब रही है, स्वार्थों की गहरी दलदल में। मानवता की लाश रखी है, आदर्शों के ताजमहल में । मैं उनकी ज़िंदगी के लिए स्वयं मृत्यु से जूझ पड़ूँगा,	जिनको साँस मिली है, लेकिन जीने का अधिकार है। श्रम की दुल्हन पटक रही है नंगे तन पर चिथड़े पहने। पर बदचलन तिजोरी ने है सजा रखे कंचन के गहने। मैं उनके गुमनाम लहू से यश की रामायण लिख दूँगा, जिन्हें भूख से मरना प्रिय है, भीख मगर स्वीकार नहीं है। अगर कहीं कवि जन्म न लेता, धरती पर स्याही रह जाती। हर आँसू अनाथ कहलाता, पीड़ा अन-ब्याही रह जाती। मैं उनकी स्मृति में कविता का अनुपम ताजमहल दूँगा, जिनकी लाश उठा चलने को कोई भी तैयार नहीं है।

प्रश्न ?प्रस्तुत गद्यांश में कवि ने किसके जीवन में सूर्य की किरणें भरने की बात कही है (क)

(i) दीनहीन और असहाय लोगों के- (ii) समाज द्वारा स्वीकृत लोगों के

(iii) मानवता के पुजारी के (iv) राजनीति के भ्रष्ट लोगों के

स-अपने कर्म से कौन (ख)े लोग दूर हो गए हैं?

(i) धार्मिक (ii) शिक्षित (iii) विद्वान (iv) ये सभी

?श्रम की दुलहन भटक रही है पंक्ति का क्या आशय है (ग)

(i) लोग परिश्रम करना भूल गए हैं (ii) परिश्रमी भूख के कारण इधरउधर भटक रहे हैं-

(iii) लोग श्रम करके बेईमान हो गए हैं) iv) परिश्रम न करना पड़े इसलिए लोग इधरउधर - घूम रहे हैं

?कवि द्वारा जन्म न लेने पर क्या होता है (घ)

(i) धरती पर स्याही बाकी नहीं रह जाती है। (ii) पीड़ित व व्यथित लोगों की कथा अनकही ही रह जाती है।

(iii) मनुष्य जीवन धन्य हो जाता है (iv) समाज का स्वरूप अत्यंत व्यापक जाता है।

?कवि किनके पैरों की धूल को पूजने की बात करता है (ङ)

(i) श्रमिकों की (ii) असहाय लोगों की (iii) मानवता की सेवा करने वालों की (iv) कविता रचने वालों की

प्रश्न .3निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए। 05=1×5

?भारत में पत्रकारिता की शुरुआत कब हुई (क)

(i) सन् से 1853(ii) सन् से 1780(iii) सन् से 1767(iv) सन् से 1857

?इंटरनेट पत्रकारिता का अन्य प्रचलित नाम क्या है (ख)

(i) ऑनलाइन पत्रकारिता (ii) वेब पत्रकारिता (iii) साइबर पत्रकारिता (iv) ये सभी

उसे क्या ,जब किसी समाचार या घटना का सीधे घटना स्थल से ही प्रसारण किया जाता है (ग) ?कहते हैं

(i) लाइव समाचार (ii) विलोम स्तूपी समाचार (iii) ऊर्ध्वस्तूपी समाचार (iv) स्थानीय समाचार

(घ)समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतनभोगी पत्रकार को क्या कहते हैं?

(i) फ्री लांसर (ii) पूर्णकालिक (iii) अंशकालिक (iv) अल्पकालिक

सा तत्त्व फ़ीचर लेखन-निम्नलिखित में से कौन (ङ)का तत्त्व है?

(i) परिवेश (ii) छंद) iii) कल्पना)iv) विंब

पुस्तक - पाठ्य

प्रश्न -: निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए .4 - 05=1×5

प्रातनभ था बहुत नीला: शंख जैसे

भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और .....
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है ।
-उपरोक्त काव्यांश का वर्ण्य विषय है (क) 1
(i) सूर्योदय का (ii) नीले आकाश का (iii) सूर्यास्त का (iv) नीले जल का
' (ख)गौर झिलमिल देह- द्योतक है ' 1
(i) नीले जल का (ii) प्रातःकालीन नभ का (iii) सूर्य के प्रकाश का (iv) चमकते शरीर का
‘ .(ग) नील जल में ?नील शब्द क्या है‘
1
(i)संज्ञा (ii) सर्वनाम (iii) विशेषण (iv)क्रिया
?उपर्युक्त कविता के कवि कौन हैं .(घ)
1
(i)शमशेर बहादुर सिंह (ii) गजानन माधव मुक्तिबोध (iii)रामनरेश त्रिपाठी
(iv)हरिवंश राय बच्चन
‘ .(ड़)उषा का पयार्यवाची शब्द है-
1
(i)निशा (ii) प्रभात (iii) दोपहर (iv)संध्या ।
खण्ड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)
प्रश्न-: निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए .5 -
05=1×5
पड़ोस में एक महानुभाव रहते हैं ,जिनको लोग भगत जी कहते हैं। चूरन बेचते हैं। यह काम करते , जाने उन्हें कितने बरस हो गए हैं। लेकिन किसी एक भी दिन चूरन से उन्होंने छः आने से ज्यादा पास सरनाम है और खुद खूब लोकप्रिय हैं। कहीं व्यवसाय-पैसे नहीं कमाए। चूरन उनका आसका गुर पकड़ लेते और उस पर चलते तो आज खुशहाल क्याक्या कुछ उनके पास न !मालामाल होते , हाथ बिक जाता है। पर वह न उसे थोक -उनका चूरन हाथों ,इधर दस वर्षों से मैं देख रहा हूँ !होता

चते हैं। पेशगी ऑर्डर कोई नहीं लेते। बँधे वक्त पर अन व्यापारियों को बे ,में देते हैंपनी चूरन की पेटी लेकर घर से बाहर हुए नहीं कि देखतेदेखते छः आने की कमाई उनकी हो जाती है। लोग - उनका चूरन लेने को उत्सुक जो रहते हैं। चूरन से भी अधिक शायद वह भगत जी के प्रति अपनी क रहते हैं। पर छः आने पूरे हुए नहीं कि भगत जी बाकीसद्भावना का देय देने को उत्सुचूरन बालकों को मुफ़्त बाँट देते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि कोई उन्हें पच्चीसवाँ पैसा भी दे सके। कभी चूरन में लापरवाही नहीं हुई और कभी रोग होता भी मैंने उन्हें नहीं देखा है।

?या गया हैप्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लि (क)

(i) भक्तिन (ii) काले मेघा पानी दे (iii) बाज़ार दर्शन (iv) नमक

?चूरन बेचने वाले का स्वभाव कैसा था (ख)

(i) संतोषी (ii) स्वार्थी (iii) गंभीर (iv) अहंकारी

?क्या कारण था चूरन शीघ्र बिक जाने का (ग)

(i) चूरन बेचने वाले की जान पहचान (ii) चूरन की गुणवत्ता

(iii) चूरन के मूल्य का कम होना (iv) चूरन की माँग

?चूरन खरीदने वालों की उत्सुकता का क्या कारण बताया गया है (घ)

(i) भगत जी के प्रति उनकी सद्भावना (ii) भगत जी की बालकों को मुफ्त में चूरन बाँटने की प्रवृत्ति

(iii) भगत जी का व्यापारी स्वभाव (iv) भगत जी का अधिक पुराना व्यापारी होना

?भगत जी सदैव किस नियम पर डटे रहते थे (ङ)

(i) कम चूरन बेचना (ii) बाजार का मोलभाव न करना-

(iii) छः आने से अधिक का चूरन न बेचना (iv) बच्चों को कम कीमत पर बेचना

पूरक पाठ्यपुस्तक (वितान)

प्रश्न - जिएनिम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन की .6 10=1×10

किशन दा की कौन सी छवि यशोधर बाबू के मन में बसी हु .(क)ई थी ? 1

(i)उनकी दफ्तर में विभिन्न रूपों की छवि (ii) सैर पर निकलने वाली छवि

(iii) एक परोपकारी और आदर्शवादी व्यक्ति के रूप में (iv) उपर्युक्त सभी

' .(ख)अतीत में दबे पांवबोध है-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-सिंधु" पाठ के अनुसार ' जो राज - - ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि " पोषित न होकर समाज पोषित था -पोषित या धर्म 1

(i)सिंधु घाटी सभ्यता में सौंदर्य के प्रति चेतना अधिक थी।

(ii)सिंधु घाटी सभ्यता में राजा से बड़ा स्थान लोगों के कार्यों को था।

(iii) सिंधु घाटी सभ्यता में धर्म का महत्व ना था अतः समाज सर्वोपरि था ।

(iv)सिंधु घाटी सभ्यता में अमीर गरीब नाते अतः समाज में समानता थी।

? निम्न में से कौन सा कथन सही है .(ग) 1

(I) यशोधर बाबू कर्मठ एवं परिश्रमी परन्तु असंवेदनशील व्यक्ति थे.
(ii) यशोधर बाबू कर्मठ एवं समय के साथ चलने वाले व्यक्ति थे.
(iii) यशोधर बाबू कर्मठ एवं परिश्रमी एवं संवेदनशील.परंपरावादी एवं धार्मिक व्यक्ति थे ,
(iv) यशोधर बाबू अति महत्वाकांक्षी परन्तु परंपराओं पर चलने वाले थे.
' .(घ)सिल्वर वैडिंग नामक 'कहानी में यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ चलने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं क्योंकि -
1
(i)वे स्वयं को बदलना नहीं चाहते हैं।
(ii)वे परिवार से अलगथलग रहना चाहते हैं।-
(iii)वे सिद्धांतवादी हैं और भारतीय परंपराओं को बनाए रखना चाहते हैं तथा परिस्थितियों से समझौता करना नहीं जानते हैं।
(iv)वह बूढ़े हो गए हैं उन्हें घर में कोई पसंद नहीं करता है।
- निम्नलिखित में से असत्य कथन है .(ड़)
1
(i)'जूझ' - का अर्थ है 'संघर्ष '
(ii)इस कहानी में लेखक का संघर्ष दिखाया गया है
(iii)'जूझ शीर्षक आत्मकथा के मूल स्वर के रूप में सर्वत्र दिखाई देता है '
(iv)लेखक को शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई भी संघर्ष नहीं करना पड़ा।
प्रस्तुत पंक्ति से "भव्यता का आडंबर नहीं था सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी पर उसमें" .(च)
प 'अतीत में दबे पांव' तात्पर्य हैाठ के आधार पर सही विकल्प का चयन कीजिए -:
1
(i)सिंधु घाटी सभ्यता में राजा प्रजा की तरह सादगी से रहता था।
(ii) सिंधु घाटी सभ्यता में साधन बहुत थे जो देखने में आकर्षक थे।
(iii)इस सभ्यता में सभी प्रकार के साधन थे किंतु दिखावा नहीं था।
(iv) इस सभ्यता में सभी लोग संपन्न थे और वे दिखावा नहीं करते थे।
"शक्ति से सिंधु सभ्यता का कोई संबंध नहीं है" .(छ), इस तथ्य को कौन-सा कथन सत्य सिद्ध करता है 1 ?
(i) किसी युद्ध का वर्णन न मिलना । (ii) कहीं भी हथियार के दर्शन न होना ।
(iii) किसी औज़ार का उल्लेख न होना । (iv) राजव्यवस्था का न होना।
' .(ज)जूझ - किशोरियों को किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है-कहानी आधुनिक किशोर '
1
(i) संघर्षशीलता का (ii) मेहनत करने का (iii) पढ़ाई में लगातार अभ्यास करने का
(iv) उपरोक्त सभी
वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते .(झ)थे 'जूझकहानी से लेखक की किस '
?प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है

1

(i) ज्ञानपूर्णता। (ii) हठधर्मिता। (iii) कुटिलता। (iv)संघर्षमयता

.(ञ)मुअनजो ?दड़ो में स्थित अजायबघर को किसके समान बताया गया है-

1

(i) कस्बाई स्कूल की इमारत के समान (ii) मुर्दों के टीले के समान

(iii) संपन्न बस्ती के समान (iv) नियोजित व्यवस्था के समान

प्रश्न निम्नलिखित में से किसी .7 -एक विषयों पर लगभग शब्दों में रचनात्मक लेख 120

06=6×1 लिखिए।

(i) लॉकडाउन में फँसे मजदूर (ii) काश मैं अध्यापक होता !

(iii) पूर्णिमा की चाँदनी रात्रि) iv) मेरी कक्षा का कमरा

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों .8में से किन्ही दो के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।06=3×2

1. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए? किन्ही चार को लिखिए|

2. नाटक लेखन के अवश्यक तत्व कौन- कौन से हैं? किन्ही दो तत्वों पर विचार व्यक्त कीजिए ।

नक इस कथन के आलोक में कहानी के कथा -"कहानी लेखन हेतु कथानक प्रमुख तत्त्व होता है" पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कहानी लेखन हेतु पात्रएवं चरित्र"-चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।स्पष्ट कीजिए । "

प्रश्न .9निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लगभग 80शब्दों में लिखिए।08=4×2

घर से विद्यालय तक के सफ़र में आज आपने क्या-क्या देखा और अनुभव कियालिखें और ?

अपने लेख को एक अच्छा-सा शीर्षक भी दें।

विषय पर एक लेख लिखिए। 'इम्तिहान के दिन'

कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ हैं ?

पाठ्यपुस्तक-आरोह

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही .10-दो प्रश्नों के उत्तर लगभग -शब्दों में लिखिए 60

06=3×2

1. उषा कविता के आधार पर गांव की सुबह का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

3

पतंगों के स" . 2ाथ? बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है "साथ वे भी उड़ रहे हैं-

3

3. -'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता की मूल संवेदना क्या है? लिखिए

3

प्रश्न.11 - काव्य आधारित प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में लिखिए। 40

04=2×2

" (1) अट्टालिका नहीं है रे

आतंक-भवन

सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन ।।कवित 'बादल राग' "ा की पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

2

" (2)छोटा मेरा खेत-"नामक कविता की पंक्तियों रोपाई क्षण की", कटाई अनंतता की।" पंक्तियों

में निहित भाव सौन्दर्य लिखिए।-

2

नामक गीत का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए। 'जल्दी ढलता-दिन जल्दी' (3)

2

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही .12 दो प्रश्नों के उत्तर लगभग -शब्दों में लिखिए 60

06=3×2

1. बाजारूपन से क्या तात्पर्य है किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं

अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है ?

3

2. क्या युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे 'इंदर सेना' पाठ की 'काले मेघा पानी दे'

सकती है तर्क सहित उत्तर लिखिए ।

3

3. पहलवान लुट्टन सिंह को राजा साहब की कृपावह उन सुविधाओं से ? दृष्टि कब प्राप्त हुई-

पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए । 'पहलवान की ढोलक' ? वंचित कैसे हो गया

3

प्रश्न.13 गद्य आधारित प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में लिखिए। 40

04=2×2

1. डॉ॰ भीमराव की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में समझाइए। आदर्श

समाज की स्थापना में डॉ अम्बेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार लिखिए।

2

2. लोक प्रचलित विश्वासों पर आस्था वैज्ञानिक चिंतन " को कुंद कर सकती है' "काले मेघा पानी

देपाठ के आधार पर इस कथन का विवेचन कीजिए। '

2

3. शिरीष की किसी एक विशेषता का उल्लेख कीजिए जिसके कारण आचार्य हजारी प्रसाद

द्विवेदी ने उसे कहा है। 'कालजयी अवधूत'

2

****

उत्तरमाला

खण्ड - अ (वस्तुपरक प्रश्न)

उत्तर -: निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए .1 -

) (क) 10=1×10 i) पलाश के वृक्षों का घटता स्तर) (ख) i) वन में लगी आग के समान

गाँव में चकबंदी तथा माफियाओं द्वारा इनका अंधाधुंध काटा जाना (1) (ग)

) (घ)ii) अभियान चलाकर पलाश वन रोपने की योजना प्रस्तुत करना) (ङ) iv) सुंदर सजीले नवयुवक से

) (च)iii) (i) और)ii) दोनों) (ज) ii) विलुप्त होने के भय के

) (छ)i) प्लास्टिक) (झ) पॉलीथिन की थैलियों पर रोक लगने के बाद-iv) ये सभी

) (ञ)ii) पलाश के संकट पर ।

प्रश्न निम्नलिखित में से किसी एक .2 -पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

05=1×5

उत्तर- (क ((iii) जीवन जीने वाले उत्साही युवाओं को) (ख)ii) जीवनरूपी) (ग)i) रूपक) (घ)iii) जीवन जीते हुए आराम करना संभव नहीं है (ङ) क्योंकि जीवन में सदैव संघर्षरत् रहना पड़ता है ,)i) व्यक्ति को प्रत्येक स्थिति में अपने कदम आगे बढ़ाते रहना चाहिए ।

अथवा

) (क)i) दीनहीन और असहाय लोगों के-।) (ख) iv) ये सभी।

) (ग)ii) परिश्रमी भूख के कारण इधर उधर भटक रहे हैं।) (घ)ii) पीड़ित व व्यथित लोगों की कथा अनकही ही रह जाती है) (ङ) iii) मानवता की सेवा करने वालों की।

प्रश्न .3निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए। 05=1×5

उत्तर: 3. (क)(ii) सन् (ख) से 1780(iv) ये सभी (ग)(i) लाइव समाचार

(घ)(ii) पूर्णकालिक) (ङ) iii) कल्पना

पुस्तक - पाठ्य

प्रश्न -: निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए .4 -

05=1×5

उत्तर: 4. (क)(i) सूर्योदय का (ख) (iii) सूर्य के प्रकाश का (ग)(iii)

विशेषण

(घ)(i)शमशेर बहादुर सिंह (ङ) (ii) प्रभात

खण्ड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

उत्तर: 5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए -: 05=1×5

(क)(iii) बाज़ार दर्शन (ख)(i) संतोषी (ग)(ii) चूरन की गुणवत्ता

(घ)(i) भगत जी के प्रति उनकी सद्भावना) (ङ)iii) छः आने से अधिक का चूरन न बेचना ।

पूरक पाठ्यपुस्तक (वितान)

उत्तर - निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए .6 10=1×10

.(क)(iv) उपर्युक्त सभी .(ख) (i)सिंधु घाटी सभ्यता में सौंदर्य के प्रति चेतना अधिक थी।

.(ग)(iii) यशोधर बाबू कर्मठ एवं परिश्रमी एवं संवेदनशील.परंपरावादी एवं धार्मिक व्यक्ति थे ,

.(घ)(iii)वे सिद्धांतवादी हैं और भारतीय परंपराओं को बनाए रखना चाहते हैं तथा परिस्थितियों से समझौता करना नहीं जानते हैं।

.(ड़)(iv)लेखक को शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई भी संघर्ष नहीं करना पड़ा।

.(च)(iv) इस सभ्यता में सभी लोग संपन्न थे और वे दिखावा नहीं करते थे।

.(छ)(ii) कहीं भी हथियार के दर्शन न होना । .(ज)(iii) पढ़ाई में लगातार अभ्यास करने का

.(झ)(iv)संघर्षमयता .(ञ) (i) कस्बाई स्कूल की इमारत के समान

प्रश्न निम्नलिखित में से किसी .7 -एक विषयों पर लगभग शब्दों में रचनात्मक लेख 120 06=6×1 लिखिए।

(i) लॉकडाउन में फँसे मजदूर (ii) काश मैं अध्यापक होता !

(iii) पूर्णिमा की चाँदनी रात्रि) iv) मेरी कक्षा का कमरा

प्रश्न 60 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग .8 शब्दों में लिखिए।

06=3×2

1. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए? किन्ही चार को लिखिए|

अथवा

नाटक लेखन के अवश्यक तत्व कौन- कौन से हैंकिन्ही दो तत्वों पर विचार व्यक्त ? कीजिए ।

2. "कहानी लेखन हेतु कथानक प्रमुख तत्त्व होता है"- इस कथन के आलोक में कहानी के कथानक पर प्रकाश डालिए।

अथवा

“कहानी लेखन हेतु पात्रएवं चरित्र-चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।“ स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों .9 में से किन्ही दो के उत्तर लगभग 80शब्दों में लिखिए।

08=4×2

1. घर से विद्यालय तक के सफ़र में आज आपने क्या-क्या देखा और अनुभव किया?लिखें और अपने लेख को एक अच्छा-सा शीर्षक भी दें।
2. ‘इम्तिहान के दिन’ विषय पर एक लेख लिखिए।
3. कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ हैं ?

पाठ्यपुस्तक-आरोह

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही .10-दो प्रश्नों के उत्तर लगभग -शब्दों में लिखिए 60

06=3×2

उषा कविता के आधार पर गांव की सुबह का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। .(क) 3

“ .(ख)पतंगों के साथ 3 ? बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है ”साथ वे भी उड़ रहे हैं-

' .(ग)कैमरे में बंद अपाहिज -'कविता की मूल संवेदना क्या है? लिखिए 3

प्रश्न.11 - काव्य आधारित प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में लिखिए। 40

04=2×2

" (1) अट्टालिका नहीं है रे

आतंक-भवन

सदा पंक पर ही होता

जल-विप्लव-प्लावन ।।कवित 'बादल राग' "ा की पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

2

" (2)छोटा मेरा खेत-"नामक कविता की पंक्तियों रोपाई क्षण की", कटाई अनंतता की।" पंक्तियों में निहित भाव 2 सौन्दर्य लिखिए।-

2 नामक गीत का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए। 'ढलता जल्दी-दिन जल्दी' (3)

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही .12 दो प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में ल 60िखिए -

06=3×2

र्य है किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं बाजारूपन से क्या तात्प (क)
? अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है 3

' .(ख)काले मेघा पानी देक्या युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे 'इंदर सेना' पाठ की '
3 लिखिए । सकती है तर्क सहित उत्तर

वह उन सुविधाओं से ? दृष्टि कब प्राप्त हुई-पहलवान लुट्टन सिंह को राजा साहब की कृपा .(ग)
वंचित कैसे हो गया 3 पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए । 'पहलवान की ढोलक' ?

प्रश्न.13 गद्य आधारित प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में लिखिए। 40

04=2×2

भीमराव की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में समझाइए। आदर्श ०डॉ (क)
2 समाज की स्थापना में डॉ अम्बेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार लिखिए।

' "लोक प्रचलित विश्वासों पर आस्था वैज्ञानिक चिंतन को कुंद कर सकती है " .(ख)काले मेघा
पानी दे' पाठ के आधार पर इस कथन का विवेचन कीजिए। 2

शिरीष की किसी एक विशेषता का उल्लेख कीजिए जिसके कारण आचार्य हजारी प्रसाद .(ग)
2 कहा है। 'कालजयी अवधूत' द्विवेदी ने उसे

केन्द्रीय विद्यालय एरणाकुलम संभाग

आदर्श प्रश्नपत्र- 4

कक्षा बारहवीं : **पूर्णांक :80**

विषय हिन्दी : **समय :3 घंटे**

निर्देश:- सामान्यनिर्देश: निम्नलिखित निर्देशों का पालन कीजिए:

1.प्रश्नपत्र दो खंडों - खंड'अ' औरखंड 'ब' का होगा।
2.खंड'अ' में45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।
3.खंड 'ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं । प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।

खण्ड-अ (वस्तुपरक-प्रश्न)

अपठित गद्यांश

खंडअ-

.1निम्नलिखित गदयांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए 10 = 1× 10-

गौतम बुद्ध ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुखसुख को - सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्मनिर्मित बंधन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा-, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उत्स यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजान में भी हमारी भाषा में यह भाव कैसे रह गया है, लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था। अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है और आदमी है कि सदा उससे लोहा लेने को कमर कसे है। मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़ेबडे नेता कहते हैं-, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ', और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्ध करो, और बाहय उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा थाबाहर नहीं-, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो, आत्मतोषण की बात सो-चो, काम करने की बात सोचो।

उसने कहाप्रेम ही बड़ी चीज है-, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता पशु की प्रवृत्ति है, 'स्व ' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई, आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँबूढ़े ने कितनी - गहराई में पैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था। ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का यह अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा। तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है।

बृहत्तर जीवन में अस्त्रशस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को - रोकना मनुष्यत्व का तकाजा। मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायासबिना सिखाए आ जाती है-, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है। बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं। मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निशेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति : का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व- निर्धारित, आत्मबंधन का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए

10 = 1×10

1. उपरोक्त गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?

क) महाविनाश की ओर बढ़ता मनुष्य

ख) अंधाधुंध प्रकृति

ग) नाखून का बढ़ना

घ) मनुष्यत्व का तकाजा

2. गौतम बुद्ध के अनुसार मनुष्यता क्या है?

क) मनुष्य के रूप में जन्म लेना

ख) मनुष्यों के बीच समाज में रहना

ग) सबके दुखसुख को सहानुभूति के साथ- देखना

घ) उपरोक्त सभी

3. बड़े बडे-राजनैतिक नेताओं के अनुसार मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा?

क) दूसरों की भलाई कर

ख) मशीनों की बढ़ोत्तरी रोककर

ग) वस्तुओं की कमी रोककर

घ) बाह्य उपकरणों की ताकत कम कर

4. “एक बूढ़ा था। उसने कहा थाबाहर नहीं-, भीतर की ओर देखो।- “ किसकी ओर संकेत है?

क) गौतम बुद्ध

ख) नेताजी सुभाषचंद्र बोस

ग) महात्मा गांधी

घ) लेखक के दादाजी

5. उपरोक्त ‘बूढ़े’ ने निम्नलिखित में से क्या नहीं कहा था?

क) हिंसा को मन से दूर करो

ख) मिथ्या को हटाओ

ग) क्रोध और द्वेष को दूर करो

घ) खुद के लिए कष्ट सहो

6. नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी क्यों कही गई है?

क) मनुष्य का यह अनावश्यक अंग है

ख) यह उच्छृंखलता की प्रवृत्ति है

ग) यह मनुष्य के भीतर के तमोगुण का प्रतीक है

घ) इससे ‘स्व का बंधन ’बढ़ता है

7. लेखक के अनुसार मनुष्यत्व का तकाजा क्या है ?

क) बृहत्तर जीवन में अस्त्रशस्त्रों को बढ़ने देना-

ख) अस्त्रशस्त्रों की बाढ़ को रोकना-

ग) क्रोध और द्वेष को पालना

घ) सुखप्राप्ति के संबंध म-ेां विचार करना

8. मनुष्यत्व का द्योतक क्या है?

क) हमेशा प्रथम आने की इच्छा बनाए रखना

ख) दूसरे के मनोभावों का आदर करना

ग) अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करना

घ) जीवन में कभी हार न मानना

9. मनुष्य की चरितार्थता किस में है ?

क) अपनी गलतियाँ सुधारने में

ख) हमेशा शीर्ष स्थान पर रहने में

ग) दूसरों को पछाड़ कर आगे बढ़ने में

घ) सबके मंगल के लिए त्याग के भाव में

10. गद्यांश के आधार पर नाखूनों को काट देना का परिणाम क्या है ?

क) मनुष्यों में बढ़ती पशुत्व प्रवृत्ति पर बंधन

ख) जीवन में सफलता ले आना

ग) अंध सहजात वृत्ति का परिणाम

घ) जीवन में स्वच्छता और स्वस्थता लाना

2 निम्नलिखित पद्यांशो में से किसी एक पद्यांश से संबधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प -चयन द्वोरा दीजिए[5=1×5] -

पद्यांश 1 -

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करेंसभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो, वृथा मरे वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो, जिया न आपके लिए।
यही पशु प्रवृत्ति है, कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती ,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्मा-भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने, दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया, परार्थ अस्थि जाल भी।
शरीर माँस भी दिया, परार्थ शिवि नरेश ने,
शरीर चर्म दे दिया, सहर्ष वीर कर्ण ने॥

अनित्य देह के लिए, अनादि जीव क्या डरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

5 = 1×5

1. प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने किसे मनुष्य माना है?

क)जिसमें मनुष्यता होती है

ख)जिसमें कायरता होती है

ग) जो केवल अपनेलिए ही जीता है

घ) जो जीवन में कुछ नहीं करता

2 कवि ने सुमृत्यु किसे माना है?

क) जो बिना कर्म के मर जाते हैं

ख) जो दूसरों का कल्याण कर मरते हैं

ग) जो बिना बीमारी मरते हैं

घ) जो आसानी से मर जाते हैं

3 कवि मृत्यु से न डरने के लिए कहता है क्योंकि...

क) शरीर सदा रहने वाला है

ख) शरीर नष्ट होने के लिए बना है

ग) शरीर आसानी से मिलता है

घ) मृत्यु मुश्किल से मिलती है

4 दधीचि, कर्ण और राजा शिवि के उदाहरण द्वारा क्या संदेश दिया गया है?

क) समाज कल्याण के लिए त्याग बलिदान करना चाहिए

ख) पहले अपने बारे में सोचना चाहिए

ग) पहले अपने काम पूरे करने चाहिए

घ) अपने लिए धन जोड़ना चाहिए

5 कवि के अनुसार पशु प्रवृत्ति वाले लोग किस प्रकार के होते हैं ?

क) अपने बारे में सोचते हैं

ख) दूसरों के बारे में सोचते हैं

ग) अपना खाना पकाते हैं

घ) अपना भोजन दूसरों को देते हैं

अथवा

हवा विषैली है पश्चिम की, यहाँ न इसको बहने दो ।
भारत को भारत रहनेदो, घर अपना मत ढहने दो । ।
निज पुरखों ने बलिदान से, जिसको जग सिरमौर बनाया ।
इसी राष्ट्र को सोने की चिड़िया, सारी दुनिया ने बतलाया ।।
मानवता हित पूर्ण विश्व को, हमने गीता ज्ञान दिया था ।
जो भी आया, हमने उसको, भाई कहकर मान दिया था ।।
आस्तीन के साँपों ! तुमको, हमने गीता-ज्ञान दिया था ।
जो भी आया, हमने उसको, भाई कहकर मान दिया था ।।
विषधर कपटी साँपों ! तुमको हम ने जी-भर दूध पिलाया ।
ज़हरीले नागों, तुमने डस-डस कर, भारत का क्या हाल बनाया ।।
लेकिन अभी तो हमने तुमको, अपना एक रूप ही है दिखलाया ।
क्रोध आया तो बैरी फण को हमने एड़ी तले खूब दबाया ।।
जिन्दा रहना चाहो तो मत, क्रोध में हमको दहने दो ।
भारत को भारत रहने दो, घर अपना मत ढहने दो ।।
ऋषि पाणिनि जिसने सारे जग को अक्षर ज्ञान कराया ।
शुन्य खोज कर विश्व पटल पर हमने ही तो गणित बनाया ।।
धन्वन्तरी ने सबसे पहले, रोगों का उपचार किया था ।
संजीवन विद्या के द्वारा, मुर्दों को भी प्राण दिया था ।।
राजनीती ज्ञान न मिलता, अर्थशास्त्र कब जग में आता ।
भारत भूमि का चणक पुत्र जो, सारे जग को नहीं सिखाता ।।
सुने संस्कृति के दुश्मन अब, और नहीं पाखंड चलेगा ।
निज पुरखों के दिव्य ज्ञान का, भारत - भू पर दीप जलेगा ।।
बाँध स्वार्थ के और न बांधों, प्रेम की सरिता बहने दो ।
भारत को भारत रहने दो, घर अपना मत ढहने दो ।।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए 5 = 1×5

1'भारत को भारत रहने दो' से क्या अभिप्राय है?

क) भारत को बदलो मत

ख) भारत बहुत बड़ा देश है

ग) भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी संस्कृति प्रभावित न करें

घ) भारतवासी कहीं बाहर न जाए

2 हमारे पूर्वजों ने देश के लिए क्या क्या किया ?

क) अपने बलिदान से भारत को संसार की माता बनाया

ख) खून पसीना एक कर देश को विदेशों के समान बनाया

ग) सब अपनी अपनी स्वार्थ में जी रहे थे

घ) जंगल में रहकर जीवन बिताया

3'विषधर कपटी साँपों' और 'जहरीले नागों 'किसको कहा गया है?

क) पूर्वजों

ख) जंगली जानवरों को

ग) साँपों और नागों

घ) दुश्मन

4"ऋषि पाणिनी जिसने सारे..... जीवन विद्या के द्वारा मुर्दों को भी दान दिया था - " इन पंक्तियों के आधार पर भारतीयों की विशेषताएँ बताइए।

क) सबको अक्षर ज्ञान कराने वाले तथा सब का इलाज करने वाले

ख) सबको शिक्षा देने वाले तथा रोगों की खोज करने वाले

ग) सबको ज्ञानी बनाने वाले तथा मुफ्त इलाज करने वाले

घ) ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले तथा रोगों के उपचार विधि से मृतप्राय लोगों को नवजीवन देने वाले

5 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

i) भारत ने जगत को अक्षर ज्ञान कराया

॥भारत ने विदेशों पर आक्रमण किया(

iii) भारत ने किसी के साथ वैर भाव नहीं रखा

उपरि लिखित कथनों में से कौन सा हैं / कौन से सही है /

क) केवल i

ख) केवल iii

 ग (i और iii

 घ (i और ॥

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों में सही 3विकल्प चुनकर लिखिए)1x5)

1)समाचार के लीड या इंट्रो को हिन्दी में क्या कहते है?

क) डेडलाइन

ख) रेडलाइन

ग) मुखड़ा

घ) इनमें से कोई नहीं

2)कौन सा अखबार केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है?

क) जागरण

ख) प्रभासाक्षी

ग) दैनिक भास्कर

घ) राजस्थान पत्रिका

(3संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है । मीडिया की भाषा में इसे क्या कहते हैं?

क) बीट ख) डेस्क ग) साक्षात्कार घ) संपादन

(4आधुनिक छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है ?

ङ) जर्मनी के गुटेन्बेर्ग

च) इंग्लैंड के चार्ली विलयम्स

छ) जापान के युवान सुकामा

ज) भारत के सुरेन्द्र वर्मा

(5कम से कम शब्दों में कोई खबर जो तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाए उसे ---------- कहते है ।

क(लाइव

ख(ब्रेकिंग न्यूज़

ग(फोन इन

घ(एंकर पैकेज

(4निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए।

कविता एक उडान है चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने

बाहर भीतर

इस घर उस घर

कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ?

प्रश्न1.चिड़िया अपने पंखों के सहारे उडती है और कविता किसके सहारे उड़ती है ?

क. पंख ख .विचार

ग. कल्पना घ. शब्द

प्रश्न2. कविता में चिड़िया का वर्णन करने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य होता है?

क नवीन भाषा प्रयोग ख,उड़ान भरना

ग,अपने मन के भावों को व्यक्त करना घ,अलंकार का प्रयोग करना

प्रश्न 3. कविता और चिड़िया की उड़ान में क्या अंतर है ?

क) चिड़िया दूर तक उड़ती है और कविता किताब के पन्नों तक

ख) चिड़िया की उड़ान की एक सीमा होती है जबकि कविता की उड़ान असीम है

ग) चिड़िया पंखों की सहारे उड़ती है और कविता कल्पना के सहारे

घ) ख और ग दोनों

प्रश्न4. कविता की उड़ान को कौन नहीं समझ सकता?

क पाठक ख,चिड़िया

ग,कवि घ,आलोचक

प्रश्न 5 कविता के आधार पर बताइए कि कविता और चिड़िया में किस गुण की समानता है ?

क) दोनों पंख लगाकर उड सकते हैं

ख) दोनों ही असीम उडान भर सकते हैं

ग) दोनों कल्पना कर सकते हैं

घ) दोनों कविता लिख सकते हैं

5निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।

बाजार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है , वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो , और मन खाली हो , ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुंच पाएगा ।

1. बाजार के जादू का असर कब होता है ?

कजेब भरी और मन खाली (

खजेब खाली और मन भी खाली (

गदोनों स्थितियों में (

घतीनों उत्तर गलत हैं। (

2. मन खाली है इसका क्या आशय है -?

कमन शांत है। (

खमन में समस्याएँ नहीं हैं । (

गमन में एकाग्रता है । (

घमन में पक्का विचार नहीं है । (

3. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर बताइए कि बाजार जाते समय हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए?

कजेब भर देना चाहिए (

खजरूरी चीजों की सूची तैयार करनी है (

गमन खाली कर देना चाहिए (

घकिसी को अपने साथ ले जाना चाहिए । (

4 निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए

कथन (A)| हमें अपना लक्ष्य निर्धारित करके बाज़ार जाना चाहिए -

कारण (R)|निर्धारित होने से धन और समय की बचत होती है लक्ष्य -

क) कथन A तथा कारण R दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है

ख) कथन A गलत है लेकिन कारण R सही है

ग( ) कथन A तथा कारण R दोनों गलत है |

घ) कथन A सही है लेकिन कारण R उस की गलत व्याख्या करता है|

5 निम्नलिखित में कौन कौन से प्रस्ताव सही नहीं -हैं?

1. मन खाली हो तब बाज़ार न जाओ ।

2. जेब भरी हो तब बाज़ार जाओ ।

3. मन भरा हो तब बाज़ार जाओ ।

4. मन भरा न हो तब बाज़ार जाओ ।

क (1 और 2

ख (1 और 4

ग (2 और 3

प्रश्न निम्नलिखित 6 प्रश्नों में निर्देशानुसार सही विकल्पों का चयन कीजिए) :1x10)

31. सिल्वर वेडिंग कहानी में शादी का कौन सा वर्षगाँठ मनाया जा रहा है ?

(ङ) बीसवीं

(च) पैतीसवीं

(छ) पच्चीसवीं

(ज) तीसवीं

32. यशोधर का व्यक्तित्व किससे प्रभावित था ?

(ङ) किशनदा से

(च) अपने ताऊ जी से

(छ) अपने पिता जी से

(ज) इनमें से कोई नहीं

33. किशनदा की किस परम्परा को यशोधर ने जीवंत रखा ?

(ङ) भोज का आयोजन करना

(च) जन्मदिन मनाना

(छ) घर में होली गवाना

(ज) शादी की वर्षगाँठ मनाना

34. यशोधर बाबू अपनी पत्नी को क्या कहकर उनका मजाक उड़ाते थे ?

(ङ) शानयल बुढ़िया

(च) बूढ़ी मुहं मुंहासे लोग करें तमासे ,

(छ) चटाई का लहँगा

(ज) उपर्युक्त सभी

5जूझ साहित्य की किस विधा में लिखा गया है ?

रेखाचित्र (घ) संस्मरण (ग) आत्मकथात्मक उपन्यास (ख)कहानी (क)

6दादा ने लेखक को खेती के कार्य में क्यों लगा दिया ?

वह स्वयं स्वतंत्र रहकर नगर में घूमना (ख)वह लेखक को खेती के कार्य सिखाना चाहता था (क)

चाहता था

उपर्युक्त में से कोई भी नहीं (घ)वह लेखक के भविष्य के बारे में सोचता था (ग)

7इनमें ? कहानी के पात्र नहीं हैं 'जूझ'

चड्ढा (घ) दत्ता जी राव (ग)सौन्दलगेकर (ख) आनंद यादव (क)

8मोहनजोदड़ोकिसनदीकेतटपरस्थितहैं ?

क) गंगा नदी ख) यमुना नदी

ग) रावी नदी घ) सिंधुनदी

(9मुअनजो -दड़ो का अर्थ क्या है ?

क) दो जगहों को जोड़ना ख) मृतकों या मुर्दों का टीला

ग) समाधियों की जगह घ) इनमें से कोई नहीं

10 सिंधुघाटी की जलसंबंधी अनूठी विशेषता क्या है ?

क) कुँओं की व्यवस्था ख) जलनिकासी का प्रबंध

ग) स्नानागार की व्यवस्था घ) उपर्युक्त सभी

खंड ब

प्रश्न 7.निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए

6) x1)

a. एक पर्वतीय प्रदेश की यात्रा
b. मेरे सपनों का भारत
c. मेरे घर के पास क बगीचा
d. कोरोना के बाद विद्यालय में पहला दिन

प्रश्न निम्नलिखित किन्ही दो 8प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिएः -)3x2=6)

a. कहानी को नाटक में रूपांतरित करते समय किन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए?
b. रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक नियत रखने का क्या कारण हो सकता हैं ?
c. कहानी के पात्र नाट्य रूपान्तरण में किस प्रकार परिवर्तित किए जा सकते हैं?

प्रश्न शब्दों में 80 निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 9 लिखिए- (4x2=8)

a. फीचर क्या है? फीचर और समाचार में क्या अंतर होता है ?
b. उलटा पिरामिड शैली किसे कहते हैं ? उसके तीन हिस्सों का भी उल्लेख कीजिए।
c. मुद्रित माध्यमों की खूबियाँ और कमियाँ क्या क्या है?

प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 1060 शब्दों में लिखिए: (3x2=6)

क(शोक ग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है ?

ख (रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

ग) भाषा को सहूलियत से बरतने' से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

(2x2=4)

ङ) 'आत्मपरिचय'कविता के आधार पर बताइए कि शीतल वाणी में आग के होने का क्या अभिप्राय है?

च) जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास-कपास का बच्चों के साथ क्या संबध बनता है ?

छ) शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक कीतरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है ?

प्रश्ननिम्नलिखित 12 प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए

(3x2=6)

a. लेखक ने शिरीष को कालजयीअवधूत की तरह क्यों माना है?

b. भक्तिन और महादेवी वर्मा के बीच का सम्बंध कैसा है?

c. जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे डॉक्टर अंबेडकर के क्या तर्क है?

प्रश्न13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए

(2x2=4)

क) किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं ? अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है ?

ख) 'पानी दे गुड़धानी दे' मेघों से पानी के साथ गुड़धानी की मांग क्यों की जा रही हैं ?

ग) पहलवान लुट्टन को 'राज दरबार-का दर्शनीय जीव' क्यों कहा जाता था?

****

केन्द्रीय विद्यालय संगठन , एरणाकुलम संभाग

आदर्श प्रश्न पत्र - 4वर्ष 202220-23

कक्षा बारहवीं : **अधिकतम अंक** :80

विषय हिन्दी : **उत्तर कुंजी** **समय** :3 **घंटे**

॰मनुष्यत्व की ओर बढना 1 ॰1 10x1=10

2 सबके दुखसुख को सहानुभूति के साथ- देखता

3 वस्तुओं की कमी रोककर

महात्मा गाँधी 4

5 खुद के लिए कष्ट सहो

॰ यह तमोगुण क प्रतीक है6

॰ दूसरों के मनोभावों का आदर करना7

i. अपने को संयत रखना

9 सबके मंगल के लिए त्याग के भाव में

मनुष्यों में बढ़ती पशुत्व प्रवृत्ति पर बंधन 10

2 क) जिसमें मनुष्यत होती है । 1

क) ख) जो दूसरों क कल्याण कर मरते हैं । 1

ग) शरीर नष्ट होने के लिए बना है । 1

घ) समाज कल्याण के लिए त्याग एवं बलिदान करना चाहिए। 1

ङ) अपने बारे में सोचते हैं 1

अथवा

क (भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी संस्कृति प्रभावित न करें 1

ख) अपने बलिदान से भारत को संसार की माता बनाया 1

ग) दुश्मन 1

घ) ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले तथा रोगों के उपचार विधि से मृतप्राय लोगों को नवजीवन देने वाले 1

(ड.) i और iii 1

(1 3मुखडा(2प्रभासाक्षी3) बीट (4जर्मनी के गुटेन्बेर्ग (5ब्रेकिंग न्यूज़ 5x1=5

(1 4कल्पना (2अपने मन के भावों को व्यक्त करना 3) खऔर ग दोनों
(4 चिडिया (5दोनों पंख लगाकर उड सकते हैं 5x1=5
(1 5दोनों स्थितियों में 2) मन में पक्का विचार नहीं है । 3) जरूरी चीजों की सूची तैयार करनी है 4) कथन A तथा कारण R दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है 5) 2 और 4 5x1=5

10x1=10
(2 पच्चीसवीं 1 (6किशनदा से (3घर में होली गवाना (4उपर्युक्त सभी
(5 आत्मकथात्मक उपन्यास (6 वह स्वयं स्वतंत्र रहकर नगर में घूमना चाहता था 7 चड्ढा
(8 सिंधु नदी (9मुर्दों का टीला (10उपर्युक्तसभी

विषयों के वांछित उत्तर विद्यार्थी स्वयं भाषा की शुद्धता 7 , विषय-वस्तु एवं प्रारूप के अनुसार लिखने का प्रयास करें। 1x6=6

कहानी को नाटक में (क 8रूपांतरित करने के लिए - 3x2=6

9. कहानी की विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है ।
10. कथावस्तु में से एक एक घटना को चुनकर उसके आधार पर दृश्य बनाए जाते है ।
11. दृश्यों के क्रमिक विकास के लिए पर्याप्त संवाद दिये जाते हैं
12. कथावस्तु से संबन्धित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
13. ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

ख) रेडियो पर निश्चित अवधि पर निश्चित कार्यक्रम होते हैं | रेडियो का श्रोता घर बैठे बैठे कार्यक्रम सुनते हैं | मन उचटते ही रेडियो नाटक के श्रोता किसी और स्टेशन के लिए सूई घुमा

सकता हैं इसलिए आम तौर

पर रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक नियत रखते हैं |

गनाट्य रूपान्तरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यतमकता का नाटक के पात्रों से मेल - (होना चाहिए ।

पात्रों की भंगिमाओं और उसके तौर तरीकों का भी उचित ध्यान रखना चाहिए।*

पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।*

मेल होना चाहिए। पात्रों का मंच के साथ*

9) क) फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है 4x2=8
फीचर लेखन का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनकामनोरंजन करना होता है। फीचर और समाचार में अंतर समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फीचर में लेखक को अपनी राय द्दष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है। समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती। फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती।

ख उल्टा पिरामिड शैलीमे समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है। अर्थात कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है - १ इंट्रो २ बॉडी ३समापन
1. इंट्रो- समाचार का मुख्य भाग होता है।
2. बॉडीघटते हुए क्रम में खबर को विस्तार से लिखा जाता है। ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है।
3. समापन अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काट कर छोटा भी किया जा सकता है।
ग मुद्रित माध्यमों की खूबियांदेखें तो हम पाएंगे कि सभी की अपनी कमियां है और विशेषताएं भी है।
लिखे हुए शब्द स्थाई होते हैं।
इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार ही नहीं अनेकों बार पढ़ सकते हैं।
अपनी रुचि और समझ के अनुसार उस स्तर के शब्दों से परिचित हो सकते हैं।
उसका अध्ययन चिंतन मनन किया जा सकता है।
जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी किया जा सकता है।
इसके अतिरिक्त भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले तथा बाद में पढ़ा जा सकता है।
मुद्रित माध्यम की खामियां भी है जैसे अशिक्षित लोगों के लिए अनुपयोगी।

टेलीविजन तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटना की जानकारी नहीं दे पाता। समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात 24 घंटे में एक बार, सप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक माह में एक बार प्रकाशित किया जाता है।

3x2=6

-क 10जब सभी लोग लक्ष्मण के मूर्छित होने पर विलाप कर रहे थे तब हनुमान ने साहस का कार्य किया। उन्होंने वैद्य जी द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। आधी रात बीत गई और हनुमान संजीवनी बूटी लेकर पहुंचा भी नहीं तो प्रभु श्री राम फिर विलाप करने लगे। इस करुण वातावरण के बीच हनुमान संजीवनी बूटी लेकर प्रकट हो गया । सभी के मन में वीर रस का संचार हो गया। सभी वानर और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूर्छा टूट जाएगी ।इसलिए कवि ने हनुमान के आगमन "को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

ख-अक्षय का अर्थ है-नष्ट न होने वाला। कविता का रस इसी तरह का होता है। रस का अक्षय पात्र कभी भी खाली नहीं होता। वह जितना बाँटा जाता है, उतना ही भरता जाता है। यह रस चिरकाल तक आनंद देता है। खेत का अनाज तो खत्म हो सकता है, लेकिन काव्य का रस कभी खत्म नहीं होता। कविता रूपी रस अनंतकाल तक बहता है। कविता रूपी अक्षय पात्र हमेशा भरा रहता है।

ग -भाषा को सहूलियत से बरतने का तात्पर्य यह है कि भाषा का उचित प्रयोग करना। भाषा अनगिनत शब्दों का संग्रह है। शब्दों के अर्थ प्रसंगों के अनुरूप होनी चाहिए। व्यर्थ का शब्द जाल बुनने से पाठक को समझने में कठिनाई होती है ,इसलिए भाषा का प्रयोग सतर्कता से करना चाहिए। गलत शब्दों का प्रयोग भाषा को पेचीदा बना देता है। भाषा को सहूलियत से बरतने से ,सहजता से अर्थ सम्प्रेषण संभव है ।आलंकारिक या आडंबरपूर्ण भाषा से बचकर सरल,स्वाभाविक भाषा के प्रयोग की सीख ।

2x2=4

11 क(शीतल वाणी में आग से कवि यह कहना चाहते हैं कि भले ही उनके शब्द कोमलकांत नजर आए ,लेकिन उनके अंदर ओज,शौर्य,पौरुष और क्रांति की भावना है। समाज की सभी सडी-गली मान्यताओं एवं परंपराओं के विरुद्ध विद्रोह का स्वर है ।

ख (कपास से बच्चों को गहरा संबंध है। दोनों में काफ़ी समानताएँ हैं। कपास जैसे सफ़ेद होती है, वैसे ही बच्चे भी सफ़ेद अर्थात् गोरे होते हैं। कपास की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं। कपास के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ। होती हैं। वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

ग -(रक्षाबंधन का त्योहार भाईबहन के मधुर सम्बन्ध कोप्रदर्शित करने वाला एक पावन पर्व है। -

काली घ-इस समय काली ,यह त्योहारसावन मास में आता हैटा में बिजली चमकती रहती है। यहाँ बिजली प्रसन्नताका प्रतीक है।इसी प्रकार राखी के लच्छे भी बिजली की तरहचमकते रहते हैं। ये लच्छे भी प्रसन्नता के ही प्रतीकहैं जिनमें रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व पर बहन अपने भाई को राखी बाँधती है।

3x2=6

- (12 क -. काल के समक्ष भीविजयी रहने वाला कालजयीकहलाताहै। शिरीष का वृक्ष अवधूत की भांति बसंत के आने से लेकर भाद्रपद मास तक बिना किसी परेशानी केपुष्पित होता रहता है। जब ग्रीष्मऋतु में सारी पृथ्वी अग्नि कुंड की तरह जलने लगती है, लू के कारण हृदय भी सूखने लगता है तो उस समय भी शिरीष का वृक्ष कालजयी अवधूत की तरह जीवन में विजेता होने का प्रदर्शन कर रहा होता है। वह संसार के सभी प्राणियों को धैर्यशील , चिंता रहित व कर्तव्य शील बने रहने के लिए प्रेरित करता है। यही कारण है कि लेखक इसे अवधूत की तरह मानता है।

खसम्बंध होने पर भी ऐसा कहना पूर्ण स्वामी का -भक्तिन और महादेवी वर्मा के बीच में सेवक (- रूप से सही नहीं है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं है जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हंस पडे । भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जैसे आंगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना । भक्तिन सदा समय महादेवी वर्मा के साथ छाया के रूप में साथ देती थी और कभी भी उनसे अलग होना नहीं चाहती थी

ग) -यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है ।इसमें व्यक्ति की क्षमता की उपेक्षा की जाती है । जाति प्रथा व्यक्ति को जीवन भर के लिए एक ही व्यवसाय से बांध देती है। व्यवसाय उपयुक्त हो या अनुपयुक्त, व्यक्ति को उसे ही अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है। विपरीत परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती भले ही भूखा क्यों न मरना पड़े !

2x2=4

13 क (बाज़ार को सार्थकता वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है । दूसरे शब्दों में वही आदमी बाज़ार को सार्थकता प्रदान कर सकता है जिसका मन खाली न हो । मन खाली होने पर बाज़ार न जाना चाहिए मन भरा रहने पर ग्राहक समझता है कि उसकी जरूरते क्या हैं ? बाज़ार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना ।

खगुडधा-(नी गुड और अनाज के मेल से बना मीठा खाद्य पदार्थ है। पानी बरसेगा तभी खेतों में गन्ना और धान उत्पन्न होगा।गन्ने से गुड बनेगा और गुड़ धानी तैयार हो जाएगी। इस तरह गुड़धानी का अर्थ इस संदर्भ में अनाज से हैं। बच्चे मेघों से पानी की मांग भी करते हैं ,जिससे

उनकी प्यास बुझती है पर पेट भरने के लिए अनाज की आवश्यकता होती है। एक साथ दोनों की मांग की जाती है।

ग - (राजा साहब के पास एक बाघ था। उसके दहाड़ने पर लोग कहतेराजा का बाघ बोल रहा -... है। ठाकुर बाड़े के सामने पहलवान के गजरने पर लोग समझ लेते कि राजदरबार का पहलवान दहाड़ रहा है। लुट्टन से बराबरी करने वाला कोई पहलवान नहीं रह गया था। इसी कारण उसे 'राजदरबार का दर्शनी-य जीव' कहा जाता था।

.....oOo.....